

सतकवीरसाद आपालकसाव कवीरगोसाईका  
दआसौलीषते अस्तावकु जनकबोवाच  
ज्ञानमुक्तिवैरागरव प्रतिवैसेहोरे सोकि  
पालहोरभाषिरे संसैरहेनाकोर अर  
वककवाच ॥ दोहा ॥ नातमुक्तिजोचाहीर  
वीषिजोवीषेवीसाशियिमादआसंतोष  
सत आरजना ऊरधार नीलदीभूनिभ  
नीरअग्निअरुवात रे नैनहोरसुत

नूतास॥ देन ते साखी चेतन रूप॥ आनम जान  
नू मूक्ति सनुप॥ दोहा॥ जव हीं जानै सीष ते  
प्रगट देह कुं नहि॥ चिबी आम श्रूरुखा  
निषय॥ बंध मूक्ति हीन मोहि॥ ३ चौपाई  
तत्त ववरन आश्रम ते न्यारो॥ साखी सदा अस  
ऊजारो॥ इदिता ससकै नहि जान॥ सुषि होए  
सुत जे सो मानि॥ ४ दोहा॥ सुष दुष धर्म अध  
महे॥ तना अपनै जान॥ तकरतान ही भो

गता सदा मुक्ति सुखं वा नि ५ सव को दि  
स्या एकत्वं सदा मुक्ति सुखं वा नि यो हि वेध  
न सो वस्यो जो हि स्या माने यो आनि ६ मा  
दा को स्य अहितु रस्यो अहंकार अभिः  
मान आतम अक्षर जानि ७ एह सुध ।  
करिषान ८ एक सुध तु शान च न नी स्वः  
अग्नि निसमार स सवन च न जारि के  
सुधि हो ईर जानि ९ मुक्ति माने सो सुध

क्रिहै॥ वेधवधदे सोए॥ इया मैसं सैनहि कः  
हू॥ जो जइसी मति होए॥ एते पद॥ आत  
मवी भसायि चिहनुप॥ पुरन आ किर मूक्ति  
सरूप॥ ना केव भवोना आये गयो॥ भम  
ते संसारी ते भयो॥ ९०॥ नीति नीरंजन स्यो  
गं पुकासी॥ कि आरही तत सादा नुदाए  
पुनि चाहत समाधि मन धरै॥ ये वही तो के वेध  
न परै॥ अदु अचल अषे मवी चारो बोधरू  
प आत मसरधारो॥ हु अभास विधा ते जान



भर्ममंतमैमेरीकरजानो देहमानितेकी आ  
वेलास तस्सुतवेधहै भवपास हुनीजवै  
धषंडुकरोगहो ताकोकाटीमुक्तिहोरहो १  
तोतेवीस्वभयोएदतात तोहीवीस्वरूपवी  
यात नीरमलबोध आपकोलहो काहेत  
तहीनहोएरहो २५ दोहा नीरायेबनीरले  
पहै अतिअगाधिचिदरूप तातअ  
बंहीनएकत आपहीजानि अनूप २६  
नीराकारनीर्मलसदा मीथ्यासरववीका २

जीन्हकोंरुहउपदेसहै॥ सोईभयोभवपा  
२॥१७॥ जोईपनमेईसिको॥ अंतरिवाहरि  
भासतेवईयवयमैसदा॥ पुंमानंदप्रक  
श॥१८॥ छिहरभीतरहोंभरेयो॥ जोहृदमे  
अकासनीतनीरंतरबुल्यो॥ ससजग  
भूतनीवास॥ १९॥ इतिश्रीअष्टावप्रथम  
वीश्राम॥ चौपाई॥ जोसेदेहआपमेजानी  
त्यहीसकलवीस्वमैमानी॥ तातेसकल

सकसवजामोही मोसेन्यारोकदस्सेनाही  
२० आपदोसकसवीस्वैदेहा अवमैजा-  
निनीरंतरएहा कीपाकटाकतूम्हारेस्व  
मी पाएप्रमातमनीजनामा २१ दोहा के  
नवूद्वूदामौजजैव जलसोन्यासनाहि  
तेपहेमैसभकदस्यो वीस्वसकलमोमा  
हि २२ चौपाईजवहीयतरएहभलैवीचा  
रो आदिअंतसभसुतनीहारे तोही आ

अतः सभ जग को एक वेद ह्य कारन सभ ज  
न को ॥ २३ ॥ जैसे एक ईश्वर सभे उगुइ सकः  
सी श्री सो थये ॥ तो ही नी ज वी चार सो लहे  
॥ क वेद सभे कुरु कहो ॥ २४ ॥ जो खुरजन  
पही चो नै ॥ सरये जानी भो मानै ॥ एही  
जग त मानी है तो लू ॥ सभ ब्रह्म ना जा  
जौ लो ॥ २५ ॥ नी ज प्रकास मेरो सभे मो  
तै भी न्यन को ॥ चिदप्रकास ते सकल ॥

वीस प्रकासत होए ॥ २६ ॥ जो रज सरय सीप मै रूप  
। जल मरीच मै नाहि ॥ त्ये रहस कलवीस्य मै  
मानो भासत है मो माहि ॥ २७ ॥ जल तरंग के च  
न मै भुषन ॥ मीत का मै बटि जै सै ॥ तू रहवीः  
स्य लीन मोहि मै ॥ मोतिं उपजत औ सै ॥ २८ ॥ अच  
रजरूप भाव हो धरो ॥ आप आप को बंधन करों  
प्रह्लादिक सभ जगत बीना सी ॥ सो हो अचः  
ल अजर अविनासी ॥ २९ ॥ अचरज कथा

वहनपुनीकहैं॥ जदीयदेहमानीहैंरहैं॥ उत्तपति  
अस्थीतपरेलेनहीखहैं॥ बीस्यवी-आयकनी  
स्वत्तरहो॥ ३०॥ दोहा॥ नमसकारैकर-आपको॥  
मोसोंचतूरनअवरानीपटचलाचलिवीस्य  
मेंरोहोवोरकारवोर॥ ३१॥ दोहा॥ माहादुषमूल-  
को॥ एहवोषदनीरधारा॥ एकअमलचेतनमहो  
मीथ्यादोनवीकीर॥ ३२॥ बोधरूपअज्ञानहैं॥  
वित्यकलपनाकीन्ह॥ निजवीचारमेंतवः

जा

होत अचल अपार नीधि ॥ प्रति अचर जमो  
माही जीव अनेक समावतें ॥ उय जीरहे मैः  
तिजा ए ॥ ४६ ॥ प्रति श्री लक्ष्म्यावक ॥ अत मा अ  
नू जो ॥ ५ ॥ सास सीध् घात्र ॥ प्रति वीध कर द ॥ हो ह ॥  
तें तो जा सो श्री मा ॥ अवे अचल अथाह ॥  
तो सत ताहि ना दु जी ए ॥ कु वै धन की चाह  
॥ जै सै रु पो सी घ मै ॥ मूट सै त है मानि ॥ त्ये  
अत मा जाने वी ना ॥ होत वीधे की घा नि ॥ २ ॥

चौपाई॥ जामैं सकल वीस्य रह कहि॥ सर  
रंग जो भीन न लहि॥ सो हो हीयो जानि प्र  
न॥ को देता तहि देखें होई हीन॥ ३॥ दोहा॥ सू  
कहे आतम कथा॥ वीषयासक्ति अधिन  
मृदसंतस्य नाख है॥ दिन दिन होत म  
न॥ सकल भू आतम वीषे॥ आतम स  
भमैं जाना॥ जानी सो समताग है॥ रह वडु अ  
चरज मानि॥ ५॥ जानि मुखि आय कौ॥ एन



अदौतरह्य॥वीकलकामवासिदेष्टि॥अ  
चरजमानताहि॥हि॥चौ॥प्राश्नी॥आदिअतनी  
स्वकारिजाने॥बेह्यवीनाकच्छ॥अवरनाजा  
ने॥देहअनसारजाएनलही॥होतकामवासि  
अचरजसही॥॥नित्यअनीत्यवीवेकवी॥  
चारे॥एहलोकप्रलोकवीसारै॥धनिअच  
रजजोअंधमैपरै॥तनधननासहोनतेपरै  
॥॥के॥अहतनममससखलहे॥कहुअती

हुषमहि॥ ज्ञानी के आनंद है॥ सुहुषक चरित्रेन ।  
हि॥ १॥ चौपाड़ी जैसे अवरसक लक्ष्म जने॥  
त्येनी जदेह नीन करि माने॥ अस्त्रतिनी दा-  
को उकरै॥ धिरज वीषादाचन नही धरे॥ १०॥  
दोहा॥ मासक वीस्य वीसो की के॥ मीथा जानि  
सरीर॥ ऐसे मृत्तिसमीप लषि॥ मै मानै सखि  
रा॥ ११॥ राम भजे नीच सदा॥ ते जै मूर्ख की अ-  
स॥ तीन समान को वीस्य मै॥ जा को ज्ञान प्रकाश



बापदको चाहत सदा दिनाहत सुरग  
अहो हरथमानै नहि जोगी सेव दया २ जी  
जगत है जगत को आन सख पक्ष सेव  
कै वरत चलन को को करी संकेनी वेद  
निपाय प्रसे नहि जगती के मत माहि  
धूसर कास में दरसे परसे नाहि  
कई छात्र से नृत जगत वीधि  
नीस मरथ सदा ईछा देह की सारि ३

५॥ यौ जग है सो माहि ॥ १ ॥ अैसें जान प्रकास ते ॥ त्या  
 ग ग्रह न लेनाहि ॥ २ ॥ हे जौ अचल अपार नीध  
 जग तरंग सो माही ॥ ऐहि वीधी अैसें जान मे ॥ त्या  
 ग ग्रह न लेनाहि ॥ ३ ॥ सब भूत न मे हो व सो ॥ स  
 नही है सो माहि ॥ अव अैसें सो मे क द ॥ त्या  
 ग ग्रह न लेनाहि ॥ ४ ॥ निज न सख न करी पड  
 हो ॥ बर सो प करत ॥ ५ ॥ हो ॥ अगाधि अ  
 न नीधि ॥ जग न व का सो माहि ॥ ६ ॥ लत मन सा प

कर्मो नो हेतुः कर्मो नो हेतुः । कर्मो नो हेतुः कर्मो नो हेतुः ।  
रश्मिः उज्ज्वलः रश्मिः उज्ज्वलः । रश्मिः उज्ज्वलः रश्मिः उज्ज्वलः ।  
विद्युः पङ्क्तयः विद्युः पङ्क्तयः । विद्युः पङ्क्तयः विद्युः पङ्क्तयः ।  
भोग्यः भोग्यः भोग्यः भोग्यः । भोग्यः भोग्यः भोग्यः भोग्यः ।  
कर्मो नो हेतुः कर्मो नो हेतुः । कर्मो नो हेतुः कर्मो नो हेतुः ।  
नोः नोः नोः नोः । नोः नोः नोः नोः ।  
इत्युक्तं । इत्युक्तं । इत्युक्तं । इत्युक्तं ।  
अथ उक्तं । अथ उक्तं । अथ उक्तं । अथ उक्तं ।

नसखधामईदजाखसमजगतएह॥ तौमेरेक  
हिकोम॥ खेनदेनकीकल्पना॥ यु॥ हिनश्रीर  
एहदू॥ तौयेचकाता॥ रासपत्नी॥ पु॥ क॥ रत्नदेहा॥ ज  
वचीतचिंताग्रसे॥ त्याग्रहनलेमानि॥ कच्च  
वंचैसोचैकच्छ॥ ऐहदिहबंधनजानि॥ १॥ जव  
चितचिंतातजौ॥ तजैसोचदुषजानि॥ नकच्छ  
तजैनसग्रह॥ ऐहसे॥ न॥ ह॥ र॥ र॥ र॥ र॥ २॥ ज  
वहीमनअटकेकहु॥ तवहीबंधनहोए॥ अ

नमस्तस्मै नमस्तस्मै नमस्तस्मै नमस्तस्मै  
होतवहोवधहे मन्त्र तवेहो १ २ काका नमो  
काके नमो मन्त्र तवेहो १ २

नाकनेज अरु करनले लानः लो १ २  
कवनतै एह नानी तिरवेवासा नमस्तस्मै  
मौन १ धन्य ताल एह नमस्तस्मै  
हारी मोगतस्मै की मौना दो डरेह नमस्तस्मै



जग अनित्य असारयुं नितीन ताप दुष घानी  
नीय तस्मिं तसो ज्ञान जन सांति प्ररु ह जो  
नि ३ कवन का लभरु कवन वृधि का हा दु  
द दुष ना हि ता ते दुंदवी या दत जि रहो ये स  
ष मा हि ४० चौ पा दोरी ष मू नि जो गी सी ध अ  
पारा नाना मत नाना अचारा स भ म त त जी  
आ त म अनू रा जी सांति भ यो स भ सो व ड भ ।  
श्री गुरु ज व नी ज आय आय को जो नो नी ज

गुरुआप श्रीनर्मदाजीने लाला कितवी...  
 वीचारा सहजम् जो...  
 दिक्कजवलेला...  
 योंवहुं...  
 येकीवासना...  
 जिवासा...

गोपनीय --

अरु कंस तजो तातर ह जं नी के भजे मूर्ति १  
सख धाम १ जैसे संपति सपन की कहिन पर  
ऐसा च ॥ प्रभु मीत्र धन संपदा दी ना तीत के  
पाच २ जाहे जहा श्रीना दूत है तो हात ह  
दी ह से सार ॥ वीतराग श्री स्नात जे भजे मूर्ति  
सूख सार ३ ॥ श्री स्ना ही वंधन सख भ  
ई श्री स्ना ही त मूर्ति सूख दा जा ते दे हा ह १  
क संगत जीए ॥ आतम ला भ प्रम सख भज १

एकसमचेतन्यत् नमो भ्याजदत्ता-  
नी काहेजानकीनमना भक्त भ्यासोतन  
ना चौथाई धनदा रजसा रजसा  
जस्यसुरीरुह भक्त कही भक्त ज  
नमजनमतों केई भक्त भक्त भक्त  
ससभकोमना सुकोमना भक्त भक्त  
सारदुष्ट साहताकनी दुष्ट भक्त को  
नेवीनाबीवेक कलजा भक्त भक्त

दुष्टतजनमश्नेक॥ कं ऊनपात्रेसांतस्य॥ ८॥  
नावाभाववीकारयोः सभमाश्रमेहोरात्रीरा  
कारसूयसिंधुमेऽप्यजेनीपवनाकोरा॥ ९॥ करत  
मकरतावीस्यकेऽस्यरजौभगवान्दसासां-  
तिसूयकौभजेऽज्ञानीतजिअभीमान्॥ १०॥ अ  
पसंयतिदेववसीः एहनीस्वेनुरधारनीरम-  
लमनत्रीपीतसहाएवेद्वासाचवीसारी॥ ११॥

जनसमरनस्य दुषसमै प्राप्तामतेत्याह पान्ना-  
गीर्दीह्यारहेत कर्तुं शक्यतां दत्ता जीनादोऽप्यु-  
मूलहे केदनीयेनीस्यामा दत्तातयां च जीना-  
जै न्नासाधईनीद्विआम्य य दत्तातयां च जीना-  
एहनीयेनीद्विआम्य य दत्तातयां च जीना-  
मकरततो चारः ६  
नञ्जातत सत्तादोऽप्यु-  
वीकन्यसादिससना आह मन्नासाधपान्ना-  
वैकन्यसादिससना आह मन्नासाधपान्ना-

नयाये ॥ होहा नाना अचरज वीस सह नीः  
हैमीथ्या जानि नीरुसन उद धिजौ साति  
भयोये जानी ॥ ८ ॥ इति श्री कृष्णवक्त्राष्टकं  
नाना रत्न नाना रत्न कदम्ब वृक्ष करवा ॥ ९ ॥ नो यशः  
वसह मोह सहीन जाई प्रथम कर्म वचन मन का  
अव मोहि चिंता कछ नही नीखल भयो आः  
पही मांही ॥ १० ॥ होहा सवदादिक सरते तजी आ  
तम जानी अरुप ॥ सैवी देप नही तहां होनी ख

लवित्सय २ जोलाकरी की कला संघर्ष ताम  
रहोतसमाधि मैनीहोतसय भिक्षु मोहमर  
तकलजुपाधि २ होतसय ताकल लो  
नदेनकजुनादि २ मैनीहोतसय मोहो सं  
तरुपसयसाली २ जोलाकरी की कला संघर्ष  
जै देहसहोतसय मोहो संघर्ष  
मयो सनित्तजीफ मोहो संघर्ष  
रसन्यासता हैजोहोतसय मोहो संघर्ष



स्वल्पभयोः तजि दोउ अभिमान हि चिंता अ  
वर अचिंतता होउत जेस भाव अवत होन १  
स्वल्पभयोः अति अचिंतपदपोर १ भयो क  
रतारथ सहज ही धनी जीना हए हचाव उन  
कीम ही को कहै जीन को एह सुभाव पाई  
ही न सवै न सी व्योमो दै सरव सइ करत रस  
रेखा अच स्वल्पभयो सभ संग मै अव दुख भक  
बुनाहि त्याग ग्रह न तजि हो भयो मग नमः

हास्यमहि १ चौपाई करम - २ ली करम धा  
न है जो देह अभीमान मोहो - ३ ली करम धा  
रहो माहासूर ये सूर - ४ ली करम धा  
कल करौ अनार्य - ५ ली करम धा  
सिंधु से आस कल की को - ६ ली करम धा  
नहि सीधु जल के जहि - ७ ली करम धा  
न की रहो अहं सूर - ८ ली करम धा  
मैल है सूर दुष संद - ९ ली करम धा

स्वप्नको लहो अथैसमसार। प्रीति श्री श्रव  
वहारी वरुहेश्वर ध्यातुं प्रीति को लहो। प्रीति  
इति प्रारम्भ है। वी नई छास भक च करे करमी  
थानीरधार। नींदा आस सदेवीये। छीन भरसे  
सार शंका हा मी न धन है का हा का हा सा सन  
वी जान। वी ये चोर नुना मूसे। गलित भयो अति  
मान। चौ पाई। जव जौ नो प्रमात मरुप। स्मर  
साखी मूक्ति सरुप। वेध मूक्ति ते भर नीरास। चौ

ॐ  
ताकाहोमूर्ति की तासाधा। तबही कलायक चलाहि  
वाहर जो हो जै सेरु। अंगुली। ताही नि। ताही जैने  
कोई। ताही लये रहे रहे रहे रहे। ताही। ताही।  
नन। सी। वचन। साति चतुरदसना सा। चरन। सा। धन।  
न। रस। दोहा। सहत तब उपदेसतैं। एकि सो एन।  
मान। मूढ सनै जों जुन सनै। तब जेना सोने। सा।  
न। शौचा। पाइ। तीये। सो। ना। चं। धक। ता। सो। यी। यी।  
यात जै मूर्ति पद पांचे। एहि ता। मया। न। न।

११  
११  
देहा होए से की जीएता॥ वक चतर उदी मजेते॥  
होहि जमं मूक आस सते ते॥ तत्प ज्ञान को ज्ञे  
समाने॥ वीरै तजै भजै रह जानै॥ ३॥ दोहा॥ तेरे दे  
ह नो देह ते॥ करता भोग तानाहि॥ चेतन सायी  
आपनो॥ लहोर हो सुषमाहि॥ ४॥ राग दोष म  
न ते भए॥ सो तेरे कहि काम॥ ज्ञान सरूपी नीर  
कारम॥ नीवीर सुषधो म॥ सकल भूत आतम  
वीर॥ आतम सभ मै मान॥ अहकार ममता

रहत। सखी होए यों जानि। शिजल तरे गजों वीस्य  
एह॥ जानि आय मै आय। जीद मूरति संहवीन  
तजो सकल संताप। ऐ मै संसै कछु नही॥ नी सै ए  
ही जानी॥ जान सरूपी ऐ कते॥ मार का पक्ष मव  
न॥ च। देह वेकारी गून मै॥ ती स्या आवै जाए॥ तं  
न जाए आवै कं ऊ॥ चीता करै वला ए॥ ए। देह  
रहै जूग सात लए॥ कै ना सुछिन माहि॥ तेरे चीद  
चन रूप मै॥ हानि दध कं नोहि॥ ए॥ त समुद अ॥

नंदको जगतरंग तो माहि ॥ नृपजै मेटे सभा बतें  
 हानि वीध कछु नाहि ॥ ११ ॥ तात भी न न सम  
 तें कछु ॥ एह जग ना ही खगार ॥ काह न जौ का  
 कै भजौ ॥ तूंचे तन स्य सार ॥ १२ ॥ ऐक सतें अ  
 वै अमल ॥ चिदाकास तो माहि ॥ जनम कर  
 न नही पाई ॥ आहंकार कछु नाहि ॥ १३ ॥ जौ  
 जौ तू जानत कहत ॥ तौ तौ न्यारो नाही ॥ जौ भ  
 षन वहु भांती के ॥ भासत के घन माह ॥ १४ ॥

॥ॐ॥१॥२॥३॥४॥५॥६॥७॥८॥९॥१०॥११॥१२॥१३॥१४॥१५॥१६॥१७॥१८॥१९॥२०॥२१॥२२॥२३॥२४॥२५॥२६॥२७॥२८॥२९॥३०॥३१॥३२॥३३॥३४॥३५॥३६॥३७॥३८॥३९॥४०॥४१॥४२॥४३॥४४॥४५॥४६॥४७॥४८॥४९॥५०॥५१॥५२॥५३॥५४॥५५॥५६॥५७॥५८॥५९॥६०॥६१॥६२॥६३॥६४॥६५॥६६॥६७॥६८॥६९॥७०॥७१॥७२॥७३॥७४॥७५॥७६॥७७॥७८॥७९॥८०॥८१॥८२॥८३॥८४॥८५॥८६॥८७॥८८॥८९॥९०॥९१॥९२॥९३॥९४॥९५॥९६॥९७॥९८॥९९॥१००॥

नीललो र हमें हो सक मो ते आनि नि जो ता ते र  
हमी थ्या जा तो नीलै स मे आ त मा ल हो नि जो  
सं सै सृ षी हो ए र हो ॥ १ ॥ दो हा ते रे ही रें जा त ते ॥  
ते ही है सं सार ॥ २ ॥ ध्या ति मा न स स वी स्य ए ह ॥  
ते लौ क च न अ व र नी र वी स न चे त न त ॥ स क  
ल वी र को वी रा ॥ ३ ॥ ना क ह भ षे न हो ए गी ॥ च  
द च न नु द धि अ पा र ते रे वे ध त मू क है ते की  
की ति नी र वार ॥ ४ ॥ वि द न करी ए चित को ॥



सकल्यवीश्याम तातसंकल्यतजिसूखज प्रमा  
तमसुषधोम तजोतातएहधीरना कखूनरह  
तन्नेधा मूर्तिसरूपी आतमा लहीहोकोहोवी  
चार २० इति श्री अस्वावक्र गुरुतत्त्व उपदेस  
का नामयेचंदसमोषकरन १५ दोहा तातस  
नोदेखोसमै श्रुतिपूरनसभभाति तथाएह  
भूलेवीना कबहुनायईहेंसाति १ तातकरम  
करीभोगकरी भावैकरोसमाधि चीतासभूले

वीना कैसे सीटे न्याधि॥२॥ जेतना सभ दुष मूल है॥  
ये जो न तना हीं कोरे॥ रेह जानै सो धनि है॥ जितन  
त ज्यो सुख होए॥३॥ नन मे षति मय हुं कर्न ते॥ कीरे  
येद अति होए॥ बने आलसी ये सुखी॥ तिन के सम  
सा कोरे॥४॥ एह करी हों एह नो करे॥ देदुद सभ सा  
री॥ अर्थ धर्म सभ को मना॥ मुक्ति देह वी सा शी॥५॥  
वैरागी वीषता न जे॥ रागी अति अधीन॥ तं राग  
वीर कत न ही॥ बंधन मूक्ती वीहीन॥ दीजे सौ हो

होषनिरवतिमै जौ उततिमै मोद तजि दोउ वधिज  
तन करि जै सै बालवी नोद रह करी हो रह छाडी हो  
जवलै रहवी चार जग बीद को वीज है रह दोउ नीर  
धार ८ जौ चाहत सें सार को रागी अति उष जान  
वीतराग का को तजै सभ सख ली न्हौ मानि ९ जौ अ  
भीमानी मूर्त्ती को प्रतिम मत्ता मन माहि वे जान १  
जौ गी कहै सख सयनै न्हौ नाहि १० ब्रह्मा से कर अ  
दिदे जौ उपदे से को तो हो सभ भूले वीना नाही सा

तिसूषहोए॥१॥इति श्री अष्टावक्रासि वचनपदे सा॥  
अष्टावक्रो बोधसौधकरना॥१॥इति ह्यजीह्वलेपायो  
ज्ञाको॥लहो योगको सारा॥एकाएकी वीचारत स  
दा सनत जी दीईत वीकारा॥कहोता तद्वष को गने  
जे ज्ञानी मती धीरा॥जीन रह जा नै आयु मे॥समवेह्य  
दुई सशेर॥२॥आ सत जी प्रलोक की भोगन सुन ही  
प्रीति॥मगन सदा सखसी धूम॥दुरलभ जीन की र  
ति॥३॥चौ पार्श्वे जे अति प्रमाने सख लहे ते को वी

वे भोग को कहै जो हस्ती के दलीवन पाई नीलपात के  
नीकटन जाई ४ दोहा को उचाहत मूर्ख को कोउ मू  
क्ति सरीर भोग भूँहि दोउ तजै ते वीर ले मति धीर ५  
चाहन मरन जीवन भौ तजै पदारथ चारि नाक ह  
तजै न संग्रह ते वीर ले संसार ६ लाभ न जा के हों  
तैं मीटे न हो कछु हानि धनी तात ते संत जन सु  
खिर है एह जान ७ गलीत भयो सन जान मे गली  
त वूधि वीलास देखन सूनन सुभा वतैं सुखि रहै त

जि आस दीन ईस जग ते भई ईदित जीहि वेका  
र न कछु हेन त जीस के दीन भयो संसार ॥ न  
ही जागे सो वेन ही ॥ यजेन मीचै नैन ॥ शोनी की अइ  
हू नूत देसा कहै न सकै मन वै न ॥ १० ॥ सभ ही न स्व  
न देषी ॥ सभ ही नीर मल चीत ॥ सभ ही है नीवास  
ना ॥ शोनी सभ के मीत ॥ ११ ॥ रहै गहै बोले चले देषी  
सुनै सधीर न ही कछु चाहै तजे ॥ ग्यानी अति गं  
भीर ॥ १२ ॥ असूति नीहा सभ त जै हरष सो क कच

नाहि मूर्ति माहासूषमेरहे ॥ स्नेनदेनके माह १३ का  
मीनीसूदरीनारीलषि ॥ मृत्युदेषिनेनाहि ॥ ज्ञानीका  
मवीबादतजी रहे अचलसूषमाहि १४ सूषदुषसं  
पतिवीपतिलषि ॥ सूत्रमीत्रकचूनाहि ॥ ग्यानीगून  
अगूनतजे ॥ समंदरसीसममाहि १५ नाहिहीसान  
हीहीनता ॥ नहीकरनासूवीकार ॥ अचरजकचूना  
मूढता ॥ दीननरसंसार १६ दोषवीषेसूषनाकरे ॥  
लोपताहोनाहि ॥ सदाअसंगीएकरस मूर्तिम

हास्यमाही ११ समाधोनसाधनरहत तजी ओ  
निहिताहितभाव की चूना जानत सूनत चीत जौ  
वीदेह मूर्ति राव १२ चौपाई मै मेरी करि क चूना ज  
नै कल्पत वीर्य सत न मानै आस गलत सभ आस  
तम माही सभ क चू करत करत क चूनाही १३  
दोहा मन प्रा कासन मूढता समन सूषी पतिनाह  
क हसन की अचर जदी सागली न भयो ताम  
हि २० ईती श्री अस्थावक



सृष्टिसकरनामप्रकरण जगभर्मजीनकेबोधते  
मीदेसयनसुखिभासे नमसकारसूखस्यको संत  
तेजेंसंय १ भोगदेतवहुसोतीके अर्थनीम  
तिधनधाम तदियसभत्यागेवीना लहनसूख  
वीश्राम २ करतवीताड्यअगितको जतनन  
डुजाकोरे उपसमसूखकेनीरसों सीचासीतस  
होए ३ तेरोमान्नाजगभयो प्रमारथकचूना  
हि वीनजानेजगयगरहौ ऊवसोचकेमाहि

॥४॥ नीज आत्मपदमैसहैं॥ नीकटिदुरीकेंहुँनहि  
नीरबीकारनीरसेपञ्चजरा॥ नीरबीकल्पसूषमाहि॥  
नीज आत्मसूषलाभते॥ भरेमोहमदनासा॥ जीत  
रागराजीतसदा॥ नीरमखदीसीप्रकासिनीतसन  
तन आत्मा॥ जागसभकल्पतजानी॥ तजीतातल  
धिआपकों॥ बालकजैसीबानि॥ एकअतमाउं  
हमै॥ कल्पतभावभाव॥ मिटिकेंमनासभथके  
बोलनचलनसुभवे॥ एहमैहोएहअव ॥

भूखिगयोएहवानि॥ ज्ञानीमूनीहोएरहे॥ सभैआत  
माजानि॥ ६॥ सैवीहेयनाहीजहा॥ नाकौनज्ञानतस  
ह॥ दुषसूषतहानपाईरे॥ उपसमसूषअतिगूढ॥ १०  
काहांईदुषदरेकपद॥ एहतनखाभनहानि॥ ज्ञानी  
दोविधा॥ सभतजी॥ नीहवीकल्पसूषजान॥ ११॥ क  
हिएकाहावीवेकता॥ अर्थधर्मअरुकोम॥ देरे  
तजोज्ञानीसहो॥ श्रीआरहीतवीश्राम॥ १२॥ इन  
कोकरनोकछनहि॥ नाकछहीईरेभाव॥ सह

जभा वसभ क करै॥ जीवन मृत्यु भाव॥ १३ जतन क  
रे जग मे टन कौ॥ जे देखत जग आह॥ नीर वासन गृह  
कहै॥ देखन न है न ताहि॥ १४ चौ पाई॥ जौ लै पारख  
हम न हो जाने॥ सो हो ब्रह्म जतन करे वानै॥ जे नीह ची  
त चीत करु नाही॥ होए ताति है सपने न लखाहि॥ १५  
देहा॥ जे जानत वीर्य है॥ सहजे करे समाधि॥ अ  
ती उदार वीर्य वीन॥ सहजे मीठे उपाधि॥ १६ दीची  
रवी प्रजे लोक ते॥ वरतै लोकाचारि॥ लै समाधि

तजिके भजो नीरमल स्यात्ति वीचार ११ नीरवास  
नत्री पतसदा भाषा भावन को नीत को करनी कह  
तही लोक दीष्ट कह्यो १२ चौपाई नीरवीति प  
वीती कह्यो जौ नीर अभीमानी की आसि बाने जा  
हा जौ सो तहा ते सो भव रहै अये मे सख पाए १३ नी  
रलेय नीरवास न सहेंद जा को नही मूक्ति अखंध  
प्रावध कमन की बात बयू हो लौ जौ सूके पात १४  
दाहा जह हरयन सो कह्यो भूले जगत समाज

नीर्मलमनराजतसदा जो वीदेहमूनीराज ॥ २५ ॥ सी  
तल अंतर अतमा ॥ जैसे अति गंभीरा ॥ नाक चूत  
जैना संग ॥ आतमरमतसधीरा ॥ २६ ॥ नीर्मलमन  
राजतसदा ॥ कीयो अदोहरसपाता ॥ कीरी आकरत  
जो मूढजन ॥ तजीमान अपमान ॥ २७ ॥ की आहो  
तसभ देहतै ॥ नहि कऊ मो माहि ॥ रहनी स्वे जी  
नके सदा ॥ करै करै कछु नाहि ॥ २८ ॥ जो पाई वा  
लक जो की आस भलही ॥ येती न सो न

लककोहर जीवनमूर्तिस्वयी श्रीमान् संसारये  
सोभावान् २५ दोहा नानावैकलीचारतजी स्व  
होसातिसूयनाह देखन जानन सुनन की काहा  
कल्यनाताहि २६ चौपाई अहभावमूखेवयम  
हि सभकरैकरैकछनाह अभिमानिजो कमन  
करै करता सोई अहदुषमरे २७ दोहा नजिसे क  
ल्यवीकल्यको तस्तरुस्तकछनाही नीरदुदिर  
जीतसदा मगनमूर्तिस्वयमाहि २८ अचल

चित्तं अतमस्यै। अथवा ईत उत जाय। वीधी नीये  
धनहीतं गप अत गप। वीचरे सहज सुभावा। अरु क  
रनतें। मूढ लहे सुषमाहि। ज्ञानी तत्पवीचारते रहै  
अथै सुषमाहि। ३०। सुधिवृधि पूरन अमल जग।  
परपंचताहो नाहि। जे अति मूढ अन्यासंत। त्यों  
जानत ना नाहि। ३१। चीत नीरोधी कर्मतें। मूर्किन  
पावै मूढ। धनताते जानतें। सहे सातिसुषमूढ। ३२।  
चौ पाई देहादी कर्मै दिह अमी मान।



मूढ अज्ञान से सब दुष्कोमूल कहैं स भत जी धीर मू  
हिसूख पावै उ दुहा मूढ सोति सुख नास है कीर च  
त नीरोध नीखेत तवी चारतै धीर खहे नीज बोध अ  
आत्म सुख पावत नही जो दर न अधीन रूप ना मत  
जीवी जन प्रमात्म सुख लीन उध काहा भयो जो म  
ढने कीयो चीत नीरोध आत्म सुख लयी त जल है  
सहज सोति सुख बोध ई चौपाई को उज गत भाव  
नही मानै अति अभाव करी को उजाने ते वीर खेत

जिमांवाभाव। वेह्या नंदल हैसुष चव। ३१। दोहा ॥  
आतम अमल अदौ अति। कते भावनामद। त  
दयल हंता जनमले। फं सौ मोह के फंद। ३२।  
कक्ष अलवन बुधिकौ। चाहै मृत्तु सीध। नीर  
लेव जे मृत्तु जन। जन को मत्त अगाध। ३३। वीष  
रूप जग नीर। षिकै। मैतै मै उदात्त। करन लो। व  
स करन कौ। गूर की दरानी वासा। ३४। नीर दोस  
नमृ गराज लषी। वीषै दोए। स

कैसे वतन स चरन क ल श्रं कर ला रै श्री आन  
जानै मूर्ति जन क द आत मा माहि रह न ग ह न  
वेष न चल न सा दा स यी दु य ना हि धर जा सौ अ  
त म रूप ज व स धि बु धि अ वै श्री वि कार आ नाः  
चार अ चार ती ज ल हो अ वै स य सारि धर आई  
व नै स भ क द करै त जै स भा व स भ ना ए वा ल क  
जौ इ या जा त मै ता को ती न स भा व धर स दा स  
ते व स य ल है ल है स ते व ध्या न नी र वी रि ती सा  
ई न ए

ह्येवमप्युक्तं वद नवदत्ते आनयेव न  
योनिपादद्वयोदि तैदसत्तत्त्वत्तत्तै न  
मईदत्तसाहि धृष्टौ पदे नदवद्वत्तत्त्वत्तत्तै न  
मावे तावधिरश्रुतिसोपापाव नोदप्येता न  
सवाम्हे चावन्मोमेवद्वत्तत्तै नदवद्वत्तत्त्वत्तै न  
कैवरेकैवद्वत्तै नदवद्वत्तत्त्वत्तै न  
जैममनद्वत्तै नदवद्वत्तत्त्वत्तै न  
धर्ममार्गद्वत्तै नदवद्वत्तत्त्वत्तै न

सौसभवीधिपूजो॥ अनहीतहीतवीसारी ध८  
देखनमानैवेदतै॥ सौवैतस्तेनहोए॥ ज्ञानीकी३  
अदभूतदसा॥ सबैसोज्ञानीसोए॥ ध९ करत  
व्यताजगमूलहै॥ ज्ञानीनीकटनजाए॥ नीर  
विकारसबसीधूमै॥ सहजेरहेसमाए॥ ध० ज  
दयमूढकहूनाकरै॥ तौखेरहेउषमाहि॥ धीर  
करेहोनाकरै॥ अचलअद्वयसबमाहि॥ ध१  
सबहूपीसबमेरहै॥ सोमरेआवैजाहि॥ सभ

मोक्षस्तवेत्येतो दुष्पमपचेद्देनाहि पूरु लेन  
देष्टुमस्तव दृष्टौ नजीससतासतीविन उतनम  
समेततमद्या आसि श्रोतमोक्षीर पूरु नैरुति  
सदेष्टुमे वेपार्यो न सट करेते वेति दृष्टुम  
धाममदेगता यदधम मद्वन सव्युत्तरे नये  
यजनवैतर धीर्गतेनैपे नोदना दृष्टे पार्यो  
गयपचावजं सावपुसावता म्दुतमदुवन  
ति नैरु श्रुती मानैमनै नैती पद

५६ आत्मतै भीनकचनोहि जीनकेदोनहि  
आन वालक जो सभ कहकरै तजि दोन अभी  
मान ५१ कोहो साधिसाधन केहा कोहो ईश्वरः  
भास धिर अचल राजत सदा जो नीरमल अरु  
स ५८ जैवो लेन न की दसा जे सभ लखी न पाधि  
नीरवी कल राजत सदा जीनके सहज समाधि  
५९ कहो कोहा ले अनंत जस जीनके तत्य  
वीवेक भग्न मूर्ति में भीन नही लहो आत्म ।

एक। ६०। नरमभूत एहवी स्वसमाविन आतमकर  
नाहि। एहजोनीसभकर भरणजो न्हस्रषमाहि  
६१। नीर्मलाचदचनसींधूये। मीथ्यादि एहवीकार  
समदसवीषैवेशगता। मले चारवी चार। ६२। लवी  
अनेत आनादचन। मले वादवी वादा। कोहो मूक  
पूतवा। कोहो। केसोहरषवी वाद। नरतेतहै वृधि।  
लो। माया मै संसारवीगत कामराजतसदा। म  
नी रहे कार। ६४। चौपाई। जो जानत अ



आप सुष सरय अरुगत सताप ॥ वीक्ष्य वीक्ष्य कहा  
वै जाहा ॥ अहदहं मन भूले तहा ॥ ६५ ॥ चीतनी रोधक  
तजवत जै ॥ तत्पवीनां मूठवीषै सुभोगे ॥ मन संक  
ल्प बीकल्प उगई ॥ एक फल बहोत कै जाई ॥ ६६  
सुनत सुनत आतम सुष केर ॥ ते उन मूठ तात जे से  
द बाहर कहै कछु नही चहोए ॥ अंतर चीषेल खर  
साखहि ऐ ॥ ६७ ॥ दोहा ॥ मरना कबहुं को मते ॥ कल्प  
त जानि सरीर ॥ तम प्रकास तीन के कहो ॥ नीरवी

कार मोत धीर ॥ ९१ ॥ धीर जका हां बीवे क ता कहो क  
ल भै काहि ॥ जानी की अद भूत दसा ॥ मन वच स है नत  
हि ॥ ९० ॥ न के हू खार त न र कहै जा मन मर न ना को ए  
अद भूत ई आ की रीति है ॥ जौ का त हू हो रे ॥ ९१ ॥ सो  
घन क दू हू न भ तै ॥ न ही ला भ तै ही ता ॥ अ सु त तै पू र न  
सदा ॥ जौ नी सी त ल ची त ॥ ९२ ॥ नी दा अ स्ती त के की र  
चू स्त रु स्त न हि हो ए ॥ की या न जा नै अ प सै ॥ स व ड  
घ ती नै न को ए ॥ ९३ ॥ नी हा करे न बी ख की ॥ आ त म र

रघनकोर हरषसोकदोउतजे मवैजीक्षेसोर १४  
धीतिनहीसूतनारीसौ तजीवीधेकीआस चीतात  
जीसरीरकी सोभतसदाभीरस १५ चौपाईधी  
रतूस अरुआसायावे प्राखवधवसजेकचहवे  
रहेसूतत्रजनवनमाहि वासकरेदीनअसूतित  
हंडी १६ दोहा दिहरहो चीतानही गरसोककच  
नाही जगभूलेवीश्रामसूख लहो आतमामा  
हि १७ रमैनीरंतरसभतजे ससैकचहनाआहि

अवकनका जभा वमौ नीरमल सहज सुभावा ॥ १५ ॥  
चौपाड़ी जे नीर्मल अति सो भावना ॥ समकंन असखो ॥  
हयषाता ॥ चिदजड ग्रंथ घो लिनी रधारारज सततम ॥  
केमेटी वकारा ॥ १६ ॥ दोहा ॥ अंतरक चून वासना देख  
वीयेस भगौन ॥ नीपीत सदा सुख सीधुमौ ॥ तन समान  
कहि कव ॥ १७ ॥ जानत पै जानत नही देखत देखेन  
हि ॥ बोलत पै बोलत नहि ॥ अति आसे पदमा-  
हि ॥ १८ ॥ कां होरा जा का होर कहै ॥ मानस सनै सप

न जीनको श्रैसा जान है सो श्रित सो भावान ॥ २ ॥  
कहा संतोष सो हं दत्ता कै सो ततवी चार ॥ लहो आय  
मै आयनो ॥ नीर्मल अचल अपार ॥ ३ ॥ आतम स  
ष्यूरन भयो ॥ सही समै जु बहानि ॥ अंतर प्रमाने  
सख को ॥ का सो कहै वषान ॥ ४ ॥ सो बतये सो बतन  
ही ॥ सो यन सपनो नाही ॥ ची पीत धीर दीन दीन स  
दा ॥ जाग्रत जाग नाहि ॥ ५ ॥ चौ पाई ॥ चीता बत  
ये चीता नाहि ॥ ईं दीवी ना संभई ही माहि ॥ बुधि

सहजे ये वृद्धि न जावै। अहंकार ये अहं न तावै। ८६  
दोहा। नही सुखी नही न दुखी। रागी वीर कत नोहि।  
मरुति वेधन तै रहन कावा। अतीरवा च यद माहि  
८७। चौपाई की एक माधिस माधिनहि। मनिं वीर्य  
यनही माहि। पांडित मूढन काहू सा नै कहू सोनी  
की सोनी जानै। ८८। मरुति जया वीधिस भव क हू  
रै ये कछु क्रीनै अंतर धरे। सम दरसी सभ श्री त्रा  
तजे। कतै कर्मता भावन भजै। ८९।

नेहरषेनहि कोपतनीहामाहि जअतेसूषनग  
ने मरनेमेदुषनीह ए० जनसमूहकोनाचाहेव  
नवासीहोनाहि जाहाकाहांजो कैयरहत ज्ञानी  
नीजसूषमाहि ऐश <sup>आ</sup> इति <sup>आ</sup> एव न समसतकना  
म अस्यादकपर करन १८ बोहा तमतै पापे जा  
नधन सूतीबोदीनद आल अवमैई नननुतः  
के दुरकीरुसमसाल ९ चौपाई अर्थधम अरुके।  
मकहात्रे पुनिवीवेककहो कैसै आवै दौतः

अद्वैत जाहा क चलीहि हो ॥ १ ॥ तू तू जो जम मही  
२ काहा भयो अरु है काहा है ॥ २ ॥ अरु क चलीहि  
नीज मही सा मे हो दलो इराप उ ॥ ३ ॥  
काहा अनात्म अतस्तु ॥ ४ ॥ काहा ॥ ५ ॥  
हि चीता हो न अलीन ॥ ६ ॥ नीज मही ॥ ७ ॥  
हि ५ जा ग्रीत सुपत कही काहा कही दूषा पत ॥  
काहा तरी हो ना मे लोहि ॥ ८ ॥ नीज मही सा माहि  
९ चौपाई काहा नी कट प्रनी दीवता वे वाहर क



भीतर कवन कहावे सुखे मथुल कहन को ना-  
हि हों नीह चलनी जमही मा माहि ई जीवत-  
कहां मीत कहो कौन लोक अलोक न कहि  
र नौन है समाधि पुनि का सो कहों नीज मह १  
मा भै नी स्व ख रहों ॥ इति श्री अष्टादश स्कंधे  
श्री कृष्णार्जुन सङ्घट्टनो नाम त्रयोविंशोऽध्यायः ॥  
प्रायः कर्म कौन कहि र जीवन मूर्ति कव-  
न कौन लहि र कहां वी देह कल्पवत इ र

नीरवीसेषमैकरनपुनः ॥ २२ ॥ काका जोगः  
ताकोहै श्रीकौलकीरुन ॥ २३ ॥ काका जोगः  
फलताकोचा ॥ २४ ॥ काका जोगः  
काहामरुतिरुती ॥ २५ ॥ काका जोगः  
कहावै बंधमरुतिरुती ॥ २६ ॥ काका जोगः  
मोमाहि ॥ २७ ॥ काका जोगः  
आनंदपदपादे ॥ २८ ॥ काका जोगः  
सीवसरय ॥ २९ ॥ काका जोगः

कोहो प्रमान प्रमै प्रमा कौ करै वधान किंचीत  
अवरनय ईर कौही अचल अमल हौ ज्यै कौ  
त्वैही ॥ ५ ॥ कोहा बीहै परं कता काहा जानी  
मूहनय ईर तहा हरष बीषाद दोउ तै न्यारे  
अक्रि सदा असंग नजारे ॥ ६ ॥ दोहा विवहार  
सों कहि रे कहो प्रमारथ कछु नाहि सूष दु  
ष कहो कै पाईर ॥ ७ ॥ अनिर वाचि पद माहि  
१ बीख कोहो माया कोहा बीहि कोहा अ

रुषीति जीवब्रह्मदोषजातहैं॥ त्रैसीनीमंलरीति  
८॥ काहोनीवीतिप्रवीतिकहें॥ बंधमूक्तिकछन ।  
हि॥ नीर्वभागकोटअस्थहैं॥ अचलसदाआप  
हीमाहि॥ ऐ॥ काहोसासत्रउपदेसहैं॥ गुरुसीवको  
उनाहि॥ पुरवारथकासौकहें॥ नीरनुपाधिसी  
बनाहि॥ १०॥ एककाहोअरुदोएतपुनि॥ हीक हेन  
गैर॥ कहेंकाहोलेवातरह॥ मोतेकछनअव  
दीतिअसावक॥ सीव्यष्टौहैं॥ नीदनमाहि॥ चित्त

प्रेम

दुखदोषी वृत्त रत्न प्रकृत कुरुसा वदे ॥ १०६ ॥  
दोहा ॥ दीप ज्ञान बड ज्ञान है ॥  
सत पुरुष कौ करों यना मा ॥ पांनुं धिवी सरां मां देह  
समती मै समी राता ही ॥ यम पुरुष गति कोई जानत  
नाही ॥ कहै कबीर सुनो धर्म दासा ॥ भौ सागर सोही  
ऊन दासा ॥ दोहा ॥ दीप ज्ञान बड ज्ञान है ॥ सुख संते  
यसमान ॥ कहै कबीर विवेक वख ॥ पांनो पद नीर  
वान ॥ चौपाई ॥ दीप ज्ञान बड ज्ञान ते आवा ॥ सुख

होत संतोष समाया मन धरत ते अवरोध होई ज्ञान स  
मान गुरु नही कोई नही कहूँ चार ते सारा विना १  
चार बुद्धो संसार हो रूची चार नाम लौ लावै ज्ञान  
ची चार प्रमय दयावै सेस सहस्र मूष जो जल गावै  
वरन त वेद अंत ही पावै साहा पुरुष जो कर ही वी  
चार विना बिबेक लहै को पार धर मदा सक है स  
नो गो सोई चार पार मोही कहो बुहाई चार पार में  
कोहा जानौ तू भारी दया सबे प

रीद आहोस्नीस्तारा॥ ताते लहो वार अवर पारा  
दोहा॥ धरमदास बीनति करे॥ सुनो सोमरथ बीन  
तिहे मारा॥ वार पार पार तो ते लहो॥ साहव कहो  
सुधार॥ चौपाई॥ मनवच कर्म देखे॥ गुर जाना  
कवन बीधि होई वरनो नासा॥ नीरगून नीतिन १  
रंजन राजा॥ सरगून होरु सभ संत समाजा॥ नीरगू  
न कीर्ति जानी न जाइ॥ सो सन गुर पुनी देह ल  
खाई॥ जो सो ना ते लोहन काटे॥ अंगून ते गून दो

घनचोटे नरजो नतिमरुदेवी ज्ञाना नीरसा ज्ञानीरसै  
निरवांना निर्मलरुक्तीह अक्षरजो मा नहे कां  
मीनरसै नहे कां मा असीतनां म अबनरुहमाय  
आपन कत जंग आन आषा न क जंग या नां वं हं  
आया अक्षरुप होरु प्रगट धाया हो ह्या दीना उं  
पतो ही नीर्मल काल नां जित नां मा अघिंत अचर  
न अतसै काहा लेत दी मरं मा अघो पाई आदि  
अंत मुरी नहे सो मी अजर अमरं अंतर जे



सकलसहजसदाप्रदाना स्वसागरसोईसाधसञ्चान  
साधसयानसोससरवासा सोहंहंसाब्रह्मप्रणासा  
ब्रह्मरूपहोएकरेसंजोगा वीस्वरूपीप्रतिपालतेले  
गा रुद्ररूपसीगारतवाना तामोह आदिअतस-  
भजोना जोकहुकहोसोईहीत आई जोहैसोमा  
यालीपतनताही सरपतिगनपतिकहांलेकर  
ना अवमैसाहवतोहरीसरना वंधूमातृपीतागूर  
चरना सभतीजधरोतुहारीसरना लोकअनंत

धरन जग दीसा सरनर मून सभ ही कोई सा ॥ सन  
पुरुष को सी सनवान ॥ नीर मल सह जवी मलग  
नगानु ॥ जो कस कहो सोई ही त मोरा ॥ दीन द आ  
स अनग्रह तौरा ॥ करे कीया कीया ल गो सोई ॥  
जो है समीरे सो गति मति पाई ॥ न हरे मोरे जीव क  
आसा ॥ कर जो रे वीन वै धर मदासा ॥ दीन दया  
ल है तोहिना मा ॥ हो जा क्रिया ल सदा सुष धाम  
हो ज प्रसन्न दीजे मति सारु ॥ जाहि सो जानो

॥ समनेष्वेवाहं देहाः धरमदासमीनातकरैः प्रभू  
सनीरुचीतीत्याहं सकलग्रंथकोभेदहैः सीमोहि  
कहोवृक्षाहं धौपाईसनो धरमदासमैतमेः  
उज्जानुः सकलभेदतोहिवरनीसूतानुः कायाका  
सीनग्रहणानुः त्रीयोधित्रीकालत्रीसुडतहैगानुः  
दसदरवाजेदेहोदीसवनेनुः अवरअनेकजाहि  
नाहीगनेनुः तीनिलोकआएतहासरवाद्यत्र  
देवदहगनगंदरफाः अवरअनेकगनेकोना

एसममा आया कौन पाती ॥ कर्मप्रधान जीवसे च  
रई ॥ ताहिंमी लै मन मन साधरई ॥ सीतनु सम दुषस  
यसे सारा ॥ एसम सपने कै वे बहारा ॥ एसम सपने  
देह के आई ॥ पुर्कि मेर क हू लिपत न ताही ॥ र  
ववन जैसे जीव नुपाधी ॥ मा आया ताहि सब के न  
ही बांधी ॥ मोही लिपत माया तै मरु ॥ जा कौम  
र मन का फल हेनु ॥ अशुबल प्रसिधत है पुत्र जौ  
दलेनु ॥ ताहि के वसिसे

महासगरचेना माहा मोहरजाकीसेना नीज अ  
ज्ञानदेसरजधानी आलसमहल आसापटरो  
नी हिरसीवेटीयरीकठौरी तीनीलोकसैला  
वेवगौरी कुमति सवीताकेसगरहउ ब्राह्म  
तरह दोसभदहउ लौकी दोटिटहलवरकरउ  
जाके असतसभजगहरउ लौकासालचनाही  
अवाइ वरजतनी लजसभनकेजार रोगसो  
गससैभीतीती प्रदारे धरे दंद अनीती हरज ।

कैप्रवचन॥ तीनकेरुत्रासेनोषं॥ पापधसे  
जोअनगनजोना॥ दुषदासीदुमोदिअनीमाना  
अधरमधजाजोगहैअज्ञाना॥ धाजेप्रगटकल  
नीसोना॥ मिमद्वत्रचौतारमूडी॥ अहोंसीगासन  
वैवौफुलो॥ कपटनुजोरनयेधवासा॥ पापेहमें  
त्रीमिमसवासा॥ दोहा॥ रहसंभसन्यासाहामो  
हकी॥ सनौधरमदासचीतलार॥ रनतैजोनह  
वैधीहै॥ सोनौसागरतीरजार॥ प्र॥ चौ ॥

प्रथमहीमिमपञ्चानादीना ब्रह्मनचञ्च्रीकेञ्च  
चव्रनदीन वरनोचमशत्रुजो जैहें आगे विनाव  
वेक को इतीरन लागे दोहा कहै कवीर धरमदार  
ससौं रयाते उवरो भाग दया भाव सुक्रीत गहो  
नव चूहे रह जाय चौ पाइ काम कौ धगर्भ औ  
लौना माहा मोह बाधो संजोगा काम कमान  
कडी जव कीन्हा क्रोध गरभ लोभ गदी लोन्हा  
माया मोह वेधा संजोगा काम कवान कडी

कोशयु॥ अहंकार से माने हो आयु॥ खो भरी  
मीलित उपजे से तापु॥ चारु करे ती हो प्रतीक्षा १  
आषौ सकल भांती वीषात्॥ चारे की एत हे से ।  
कपूर यात्॥ सम से सार की तम दमात्॥ वर नों ए-  
क एक की भांती॥ जैव नु धरे का एर की क्षांती॥  
प्रथम हि कां मधे नूक सरगहि आ॥ पा च दान वा-  
को को सही आ॥ मोह नीव स कर नु चाटा॥ वो-  
न लगत वर भूखे वाटा॥ दो सरे वान नुर



आई॥ कहे कवी बीर ज्ञान बीसरी सभ जाइ॥ रीति  
वेसंत चो आत नही सींगार॥ कवीन को मकी सै  
न अपार॥ सोरे सींगार देखि मन माना॥ तीर्यतः  
अंग अंग केवाना दोहा॥ कहै कवीर धरम ह  
स सो॥ असी को मकी सैन॥ सरनर मूनी गनिग  
दुका॥ अपने नर धरत नही छैन॥ ७॥ चौ पाई॥  
चलो को मपुनी सैन पलानी॥ ना की गती काहं  
नही जानी॥ मारे पुहुपा वोन सरतानी॥ माहा

रुदर परै न जानी ॥ देवि मोहनी मोह महा देवा ॥ १६ ॥  
पवं न को ख हो न नेवा ॥ राहि ध्यान धारे जी पुरारी  
समूह न हीत बही प्रहारी ॥ जानि क्रोध त बही पीतक ॥  
ना ॥ चीत बत चीत बत मया दै दीना ॥ जै हौं काम के ॥  
धमन का दै ॥ चित बदी सी परे उन पावै ॥ क्रोध जे ॥  
नित बवी स मेरा ॥ वीन ती करत वाहन रु आई ॥ त  
बदी न राती वीत हो गुण ॥ वीन ती करत वीक

दरतुमकरोवी चारा॥ तवसीवजानिवहोरीनीरमा३॥  
अगाहीनहोरुअतीवसुपा३॥ वहोरीकोमबुह्यापै॥  
गरु॥ दिवतताहि क्रोधमनभैउ॥ फीरिषट्पुत्री॥  
नकोदीनसरापू॥ षट्जतैहोजवसिआपू॥ नीस॥  
हतनुनकीनअपारा॥ सभैसेनमीतिकरऊवीचारा॥  
वहोरीकोमजवचलेसमहा३॥ अमरवसकैआप  
नजा३॥ सरसवानकामकरधरेनु॥ जीतिचंदुअपने  
वसीकरेनु॥ एरंदुअनेकसकेनसेह्यारी॥ धरआन॥

गोतमकीनारी॥ कामकोपसूरपातियेमैउ॥ अतिआ  
तूरअहीलापैगरउ॥ जेजगनुपजेतनवाता॥ वीना  
सवदनुवेनुतपाता॥ दोहा॥ अैसेअसूरबटमैवैसे  
सनीरहो धरमदास॥ बटप्रचेजानेवीना॥ सभजग  
जातनीरा॥ चौपा॥ जवतैचीतमैचीतरवाया॥ गहे  
उगरहगोतमकोसराया॥ अवरअसूरमैवरनोका  
ही॥ जागतसौवतमारैताही॥ दोहा॥ तिनमनलज  
ज्यानरहे॥ मदनवाननुरसात॥ एककामसभे

वसकी न्हा ॥ सूरनरमनिवेहा ॥ चौपाइ ॥ कहै धरम  
॥ सूरसूनो कवीर ॥ कैसैं करी जग सागे नीरा ॥ जगमें  
दीसे वहो वीधि फंदा ॥ कैसैं मैटे देह दुष देहा ॥ कहे  
कवीरसूनो धर्मनिवा नी ॥ जग भूलान सो बड अ  
सिमा नी ॥ मैतम सो कहौ ॥ अवनी जवाता ॥ किम हो  
नाहि पैम कस लाता ॥ जेतम मोनो कहाहे मारा ॥  
तौ वांचे संभरो संसारा ॥ नी जवाते मैतम सैं कहै ॥  
अतरी दतम मारे रहे ॥ मै धरम नी तम सत गुरमे ॥

अब की वार गर करो नी मेरा ॥ कहे कवीर सुनो धर  
मदा सा ॥ तू मसौ होए जीव ज र द्या दा ॥ हे सब चन ॥  
मे तू मसौ कहें ॥ सत स दू तू मदी द करी ग हे ॥  
जो कोई कहत तू मसौ माने ॥ सोई जीव सत पीह  
चाने ॥ वीर खास सिख तू मजगत चलो वै ॥ सत स  
द कह कहि समूं जा वै ॥ जो कोइ माने काहात  
हारा ॥ सो चली आ वै लोक हे मारा ॥ जो नही  
माने काहात हारा ॥ जो जीव ज रहै जम के दार ॥

जम के हाथ परे सो भार ॥ बुडत जा रथाहन ही पाई  
दोहा ॥ कहो न मानै वाप को ॥ नर कुठो हजन मेग  
बाव ॥ पर उपर कारन मनई ॥ रहत न श्रै सै जा र  
१० चौपाई ॥ सनौ धरम दास मै करै नीवेरा सत  
सदका बाधो वेरा ॥ जोगीत पसीरीषिवन घे मज  
ते ॥ कंदमूल चूनिवन फल पाते ॥ श्रै सै ज्ञान ध  
नमहरहेनु ॥ तेनु काम फंद घूनि परेनु ॥ सीगिरी  
षि जौवन घे मवासा ॥ माया उनु के रहेन पासा

वदतचाउनकीनअहाश॥कोमवसिंघरेवीः  
चारा॥पाराशीषवनवेमहिगरु॥वहोतज  
तनकोरुनतयकीरु॥तयसाधतश्रैसाफ  
लपाया॥कोमवानताहियेरीरीषजाया॥सूयः  
देवभरेव्यासकेयुता॥सोनौभैयुनिनीजअव  
धूता॥जहेवुटसेसैजारसमाना॥जनकरीषे  
सौबोधतममाना॥वारहकेन्यायुत्रभैसाठी॥  
नारदभूलेवारहभावी॥नारदआदिपांचस



जमकेहाथपरसेभाइबुडतजास्थाहनहीपाई  
दोहा॥ कहोनमानैवापको॥ नरकुवाहजनमेग  
ब्राह्म॥ परउपरकारनमनई॥ रहतनश्रैसेजाए  
१० चौपाई॥ सूनौधरमहासमैकरैनीवेरा॥ सत  
सदकावाधोवेरा॥ जोगीतपसीरीषिवनघंफज  
ते॥ कंदमुखचूनिवनफलघाते॥ श्रैसेजानध  
नमहरहेनु॥ तेनुकोमफंदयूनिपरेनु॥ सीगिरी  
षिजौवनघंफवासा॥ मायाउनुकेरहेनपासा

३११  
वदतचाउनकीनअहारा॥ कामवसिंपरेवीः  
चारा॥ पाराशीषवनघेहिगएउ॥ वहेतज  
ननकोरउनतयकीएउ॥ तयसाधतश्रैसाफ  
लपाया॥ कामवानताहियेरीरीषजाया॥ सखः  
देवभरेव्यासकेपुता॥ सोतौभैपुनिनीजअव  
धूता॥ जेहैवृटसंसैजाएसमाना॥ जनकरीषे  
सोबोधतममाना॥ वारहकेन्यापुत्रभैसाठी॥  
नारदभूलेवारहभावी॥ नारदआदियाचस

रतानै॥रीषिमूनीपीडितसमैभूलानै॥दोहा॥स  
रनरमूनिनित्यागीजेते॥कोईनउरेधंम॥माया  
मोहमैसमकंदै॥सारोनईनकोकाम॥शैष  
पाई॥धरमदासतुववीनतिलाई॥तुमसामर  
थहोवडसूयदाई॥कामकलावजफासीवन  
ई॥तामेरहेजीवअरुजाई॥कामफंदवजवी  
धिवरावा॥जामैजीवजेतुसमआवा॥एही  
फासीसमहीपेकारा॥लक्ष्मीजीववेहा

[illegible]

पैदे हथर हरे पाइ टेही नौ हरे गत भरनै ना अस  
मदी स्त्री बोले मुख वैना जरे ही दरु मुख नीक से ज  
रा रोम रोम अति जरे अया रा मारही मार करे अ  
पचाता गनैन मातृ पीता गुरु भाता नुपजे क्रोध  
सहे को भूषा दारुनि भरु क्रोध को रुपा सोई  
जारु कै वीन से आयु तव हौ न मैटे क्रोध को  
दायू प्रथम भयो ब्रह्म को दायू सट प्रतीन के  
हीन सरायू ब्रह्मा सहौ न क्रोध को रुपा जनम

चरये है मों को॥ सनका दीक वे कू वे गखु॥ री  
की ये वरी आ क्रोध अति मै उ॥ ब्रह्म पुत्र स के न स  
हारी॥ ई जै वी जै के दी नो टारी॥ ब्रह्मा पुत्र स हो न  
ही दो ह॥ ई जै वी जै असूर दे उ हो फ॥ तजी आ रो  
ध वी रो धो जाई॥ ज न म ती स रे मी ले फ॥ आई कै ।  
ध ही ते ती नि ज न म वे हा ला॥ ही र ना क स रे व न  
मी स पा ला॥ त व सी व क्रोध की न सें सारा॥ य ले  
हो त न ला गी वा रा॥ ज व सूर असूर क्रोध की ए रें ।

भरतरीत दिन मैं संगरोमा द्यपन को विजा दो संव ।  
रा आप ही आप क्रोध सभ मारी नी क्रोध करी सभ  
भकूल की नावी सागर पूव जरे हि असावी कैरु  
क्रोध भर जरी द्यारा राजा रंक गने को पारा कहे  
कवीर क्रोध प्रहर ३ सो प्रोती भौ सागर तर ३ दो  
द सो दी सा सौ अति नुवी अप्रवल क्रोध की अ  
गि सीतल संगति साधू की सरन नुवरी एला  
गि १२ चौपाइ जे दिन क्रोध ही दरे मैं आवै ज

पतयज्ञानरहेनहीपावे॥पेक्षातुनीरागीविषागी॥  
ससनजरेकोधर्माआगीपावथगीनी॥धर्म  
तुधरडेससजलीधर्मकाजनपयतु॥पावेदेने-  
करेनीरसा॥साधेनीचरनयअवप्यासा॥चिननच  
मनमातनकीजा॥कोधर्मासायपयतुमिदना॥को  
धर्मेनेमेगाअनाथ॥कोधर्मेनेमर्यादामेआध  
कोवर्तिसुखदेजाडे॥कोधर्मेनेमर्यादामे  
डे॥कोधर्मेनेमर्यादामेजाडे॥कोधर्मेने



तरे आई सीध काजवीनासे क्रोधा समफल जो  
हि न पावै सो धा दोहा कवीर वहुत जनन सो की  
जीर समफल जाहीन सार जै से सो मधन संचे  
चार मूसिले जाए दोहा क्रोध अग सीधर वरु  
बी जरे सकल संसार जीतली नानी जना मतै स  
त गुर सरन नुवार दोहा कहे कवीर बी चारी के क्रो  
ध अगीनी बहो जागि सत सूक्रीत नाव की स  
रन नुवरी एलागि १५ चौ पाई वरनो क्रोध जौ

मनमथजथा॥ जो कोई सुने नीलजलो भकी कथा  
कहे कवीर सुनौ धरमदासा॥ लोभ अगिका वड  
सेता पा॥ वरा लोभ तै अवरत कोई॥ सब लख धर  
म लोभ तै होइ॥ हाथ लूकोट जम कप हीन चावै॥  
असै सकल जगत भरमावै॥ पहीलै सा आयास  
मन लावै॥ अगमनी गम मन चंडी सधावै॥ दु  
ष मूष जा रूकरे वी सरा॥ अकरीत अनीति क  
री जोरी रूदा मा॥ तन मन देह करे जे जाला स

मजेनही मरत श्रव का सा तव मन ला गिलो भ  
तैरु अधक वीषम वीषम हो रे गैउ दहा त  
व मन ला जो सो भतै गयो वीषम वीषमो र क  
हे कवीरयो नो कहै कहै प्रकार धन हो र १५  
चौ पाई जव मन ला गो वीष ला गो भो र सतौ  
सुनो लोभ को हो र कहै कवीर नही लोभ के  
भैउ पही ले पई सा सो मन मानो पै सा जोरी  
टा का को धवै टका देखी वज्र न सुष पावै अव

दोर जोरी मनावे देवा ॥ भरमै तो सन पावै न भेवा ॥  
दोर जोरी जोरी जोरी रुचारी ॥ लोभ पली तो दी नोष  
जारी चारी जोरी मनवा दोरेगा ॥ हस को जोरे ही रुम  
न चंगा ॥ हस जोरी मन ही तव दोर जोरी रुची सजै म  
न रहे वोर वीस जोरी मनवा दी आसा ॥ अब कै  
सौ करी जोरे यवासा ॥ पाचास जोरी लोभ रहे प  
रई सावि असी को लेषी करई ॥ सौ को जोरी गा  
ठी मन दी नो ॥ तव सहै ॥

ताना

अजोरिजिसहीराखू तवमनदौरेअवजोरैल  
यौ लावजोरीवीनदेकरजोरी अवयमै  
इरजेदेवकरोरी करोरजोरचीनकलनहीप  
रीड लोभअगीनीतनसरवसजरई जोंजोंजी  
बबोधातनभरु त्योंत्योंलोभतरनअतिभै  
जोंजोंमाखमीलेनौषका त्योंत्योंलोभभरु  
चेना धनकोधारधारनरमरई जोंपतगादीप  
कमैपरई लोभवानलागेनहीताको कहरी

साएकरेजमताकौ॥लोभअगिनतानरकैखाजे  
समअग्नहोरताकौखागे॥समअर्थजोंकहेदेष  
लावा॥सारसारजोगारसूनावा॥चारिवेदव्याक  
रनसमोना॥अवरअस्तादसपदेप्रशना॥जत्रमं  
त्रअवजानतनीकै॥समअनरलोभतैफीकै॥ले  
महीमाहंभेदहैभाई॥वेवरनकरहेसकीनाही॥  
मेघनगमूडिअजटधारी॥जोनौगूनीअपाराध  
टदरसनफीकैपर॥एकलोभकीसार

गूनसाडि श्रैगूनगहे लालचवानचलाए कहे  
कवीरधर्मदाससौ गूनसीखरसातलजाए १६  
घोषाई जाके दुषसूषदारुनभैनु एसभवरनौलो  
भनुमराउ नीरलजलोभकीकथावधानी अथ  
जोसुनोगारवकीवानी जेदमग्रथहीई श्रीमेंश्र ।  
वै श्रीगकीटलसभतनहीदेखा श्रीसोफीरेनी  
हारतवागा गरबवसतवेगठिलागा मौह  
मरेरेनीरवेदाही कांधेधरे अवरकेवाही डे

टोपागरंगमनकरु॥<sup>द</sup>षमदमेंमलवालेफीरुअनी  
तिवचनअवरनकैहइहेमारीधोरोवारकैकैसे  
करईहेमकुलीनवउनकोजातीहमरेआई  
अतचलीआईनातीपोताहेमारेचांहीकौन  
भौवडोहेमारेआईचरखडेअगनाहेमारेको  
लेफीरेगरवकैमोरेंदोहागरवदरबअवरसर  
वसूषवीयकारनमनभूलीकहेकवीरकाल  
सीरपरचढेहाथलीरचीसूड॥२२॥चोपाईअ



तिके गरव सो नाही भलाई अतिके गरव से सर  
वस जाई दोहा ॥ ऐसी नींद आधरी देखत नही  
पती आर सभ जग तौ रहै गर मरत मरत मरी  
जाय ॥ चौपाई ॥ गरव प्रहारी ताहि न नावै जात  
जगत मोर माहावै दोहा ॥ गरव प्रहारी न करी स  
कै तरत ही दिई महाए ता करतों को छोड़ि कै हो  
धरम दास नर देखत नर कै जाय ॥ चौपाई ॥ क  
हे धरम दास सत गुर सो वाता कहो बुझाय मक्ति

कहाता॥ कैसे मटे कुमती मति भाऊ कैसे करे जीव  
जमसे उवरे॥ दारुन वडो काल परभाता॥ मोह लग  
दीन दीन होवाता॥ प्रथम ही मोह बहै जोगा॥ अ  
वसुनो नर पात वीवे कस जोगा॥ मोह सन्यास भव  
ही बुझाई॥ अवसुनी लेह वीवे कस सुख आई॥ अ  
सुनो वीवे करार की कथा॥ प्रेम नाहि मन उपजे  
जया॥ अवसुनो वीवे करार के वैना॥ जा के राज  
समै सुख वैना॥ अति आनंद लोक मे करई॥

तिके गरव सो ना हो भलाई अतिके गरव से सर  
वस जाई दोहा ॥ ऐसी नींद आधरी देखत नहीं  
पती आर सभ जग तो कहै गर मरत मरत मरी  
जाय ॥ चौपाई ॥ गरव प्रहारी ताहि न नावै जित  
जगत मोर ना हावै दोहा ॥ गरव प्रहारी न करी स  
कै तरत ही दिई महार ता करतों को छोड़ि कै हो  
धरम दास न देखत नर कै जाय ॥ चौपाई ॥ क  
हे धरम दास सत गुर सो वाता कहो ब्रह्म रस क

कहा ता कैसे सेटे कू मती मति भार कैसे करे जीन  
जम से उवरे सरून वडो का लपर भाता मोह लगे  
दीन दीन हो वाता प्रथम ही मोह बंलै जागा ॥ अ  
वसनी नर पति वीवै कसे जागा मोह सभा सभ क  
ही बुझाई ॥ अवसनी लेहू बीवै कस सुखाई ॥ अव  
सनी बीवै करार की कथा प्रेम नाहि गन उपजे  
जया ॥ अवसनी बीवै करार के चैना जा के  
सभै सुष चैना ॥ आति आनंद लो क भे करई ॥

तिके गरव सो नाही भलाई अतिके गरव सें सर  
वस जाई दोहा ॥ ऐसी नींद आधरी देखत नही  
पती आर सभ जग तो रहै गर मरत मरत मरी  
जाय १८ चौपाई गरव प्रहारी ताहि न नावै जित  
जगत मोरु हावै दोहा ॥ गरव प्रहारी न करी स  
कै तरत ही दिई महार ता करतों को छोड़ि कै हो  
धरम दास नर देखत नर कै जाय १९ चौपाई क  
हे धरम दास सत्त गुर सो वाता कहो ब्रह्मर मुक्ति

कहा ता॥ कैसे मेरे कुमती मति भार॥ कैसे करे जीवन  
जम से उवरे॥ दारुन वडो काल परभाता॥ मोह लगे  
हीन हीन होवा ता॥ प्रथम ही मोह बहै जोगा॥ अ  
वसूनी नरपति वीवै कस जोगा॥ मोह सत्यासन क  
ही बुझाई॥ अवसूनी लेहू वीवै कस सखाई॥ अव  
सूनी वीवै करार की कथा॥ प्रेम भक्ति मन उपजे  
जया॥ अवसूनी वीवै करार के वैना॥ जाके राज  
समै सख्यै ना॥ अति आनंद लोक मै करई॥ तत्प्रा

तिके गरव सो नाही भलाई अतिके गरव सें सर  
वस जाई दोहा ॥ ऐसी नींद आधरी देखत नही  
पती आर सभ जग तौ कहै गर मरत मरत मरी  
जाय ॥ चौपाई ॥ गरव प्रहारी ताहि न नावै जस  
जगत माँर माहावै दोहा ॥ गरव प्रहारी न करी स  
कै तरत ही दिई महाए ताकर ताँ कौ दो उकै हो  
धरम दास न देखत नर कै जाय ॥ चौपाई ॥ क  
हे धरम दास सत गुर सो वाता कहो ब्रह्मरक्ष

कैदाता॥ कैसे मटे कुमती मति भा॥ कैसे करे जीव  
जम सै उवरे॥ दारुन वडो काल परभाता॥ मोह लगे  
हीन दीन होवाता॥ प्रथम ही मोह बहै जागा॥ अ  
वसूनी नरपति बीबेक सै जागा॥ मोह सन्यास भक  
ही उपाई॥ अवसूनी लेहू बीबेक सूष दाई॥ अव  
सूनी बीबेक राए की कथा॥ प्रेम नहि मन उपजे  
जया॥ अवसूनी बीबेक राए के वैना॥ जाके राज  
सभै सूष चैना॥ अति आनंद लोक मे करई॥ तेहना



श्रीगतीकचुवरनीनजाई सनवीस्रारतमहीवी  
स्रारः सतरतमतीनोगूनधाराः ॥ अैसेसतप्ररुष  
केअसाः प्रगटेप्रेमवीवेकसूवेस्र ॥ अहोअनत  
तिरहोनीरंतः नीरमखनीगतहोनीसुवासर नीर  
मलधनीजोनीजपरथोनाः तीलकचापमाला  
प्रवानाः ॥ ज्ञानप्रकासदेसरजधानी ॥ आनंदरूप  
वीवेकप्रवानाः ॥ सरधारोनीब्रवीकेका ॥ ज्ञानवी  
रागपुत्रदोरुकाः ॥ उमरावधीरजसंतोषअवर

ज्ञाना॥ येमभीतकैयाजेनीसांना॥ नीजआनंम  
हलपगधरई॥ रंधारांनीसेवाकर॥ एवीवेक  
केपुत्रकहावा॥ रोगसोगभौडीशिवतावा॥ रात्र  
वीवेकपुत्रप्रसाधनीरत्नेसंतसीलसमा  
ज॥ पाषंभूगखडीरकरोकोरे॥ अधरअमा  
वअधरनीसाणे॥ धीरजनावसे॥ करलसेतोः  
या॥ सोधरमआहीधरमकोंटेका॥ जेसेरा  
रमतवीवेककेआगा॥ आदर

ॐ  
षसंगा एववीकेकेकन्या चारी सत्याही मादय  
भावसुभकारी सुखवज्रतसेतोषवधानी नरक  
परतगहीराखेनीधाना सुखसंपत्तीसंतनकी  
चाही नरकपरतगहीराखेवाही लौमीसेष  
धीवानकीत्याजा लौमापुरवसभकाजा सो  
सीखनुगार अनुरागी प्रेमसुभाववैठेवैरागी  
रहेनीचत्रचौतराभानु सहेजसखासनवे  
वैरागु वरतनुजीरतपषवासा मचीनीरभे

संग प्रकासांकरत वीवेक च दसूषवैना ॥ वीवेक प्र  
सीध सदासूषसैना ॥ करत ज्ञानवाससूषवैना ॥ सु  
रत वचन बोलेसूषवैना ॥ असत सन्यासममारीव  
हार्ड ॥ सूक्रम सोसील सदासूषदाई ॥ दोहा ॥ मंत्रीस  
गम हो धरमदासा ॥ कहोसूनो आन पुरासा ॥ नर  
पती वीवेक के अंगवा ॥ याही वीधी करे प्रगा  
स ॥ २० ॥ चौपाई ॥ संतीपेम अतसूनो अनूपा ॥ प  
थमहीसूनो ज्ञान कौरुपा ॥ उग ज्ञान नरपगटे

आई तत दीन मोह नीरफ लहा जाई ज्ञान भान  
जव प्रगत भएउ काल ती मर जे जाल काटि गए  
चुगल मोह नी सनुवी भागे भागे कपट ज्ञान के अ  
गै दोसरे मोह कपट कटी गए ज्ञान वसू ही ह  
ए के भएउ कज दो आहि का हातै आई जे हो क  
हा का ही मन लाई कज दो अवर को संसार  
का हा दो रहो सो करे वा चार जे हे को लोभा  
ति ला मे भागे भरे म ज्ञान के आगे नही हित स

तसंसार॥ ऊँ मोहवंधो जीर वरअवरसूख  
संपतिप्रकार॥ ऐसभमा आसी मोहवीसतारा॥  
एसभमोहकीननुपचाह॥ कूवासूखजोंमानेंगंध  
र॥ जैसेंदोनवादलकीचाया॥ ऐसेहैसूखसंपति  
माया॥ तिनकसूयाएसरेनहीकाजा॥ एसूखस  
भसयनाकेसाजा॥ जागीदेखीकहसरेनकाजा  
एसभदीसैजमकीवाजा॥ कूवाआहिदेहका  
नाता॥

गटजवभरेनु तवमरीमामितामोटगरनु अ  
सोज्ञाननुरप्रगटेआई तापैमोहकहावहराई  
मातृपीताभगानीअरुभाई पुत्रकलत्रनात ।  
गोतनाई नारीपुरुषसैहैसंजोगा कोईनही  
काऊकेकर्मकेभोगा कर्मभोगसंजोगमी  
लावा ऐकनावपरसभैवावा अपनीअ  
पनीराहनवीखागे मोहकेवीसजों अंधअभ  
गा आत्मकंतवयधारीनारी तासीअंधन

स्करेची नारा॥ मन अवरवें त्म एक जव होई गहेन  
वीवेक की पावै सोई दोहा॥ प्रगटे ये सवीवेक वल  
भक्तनी सोन वजारा॥ उग्र ज्ञान प्रगटेवीना॥ धर  
मनि नहीन मोह तरा॥ चौपाइ॥ साहेब हेतू करै जो  
कर्मा॥ कहे कवीर सोई नीज धर्मा॥ सोच धन मजो जो  
नैकोई॥ प्रगट सनेह नाव सो होई॥ तन मन धन संत  
न देखी आ॥ एही भगि कवीर जो कहो आ॥ नैस  
ज्ञान नुर प्रगटे आई॥ चीता मोह मेढि डुधिता



जवकोमक्रोधकेउपजेदापुनीजधीरजलीजेत  
वआपुलोभमोहकीअगीनीअतिबहउसंतोष  
धीरजपरनरहईअतिअज्ञानअधिरजवहोउ  
धीरजवेतधीरजहोएरहईजरेअगीनीसीरउप  
रपरईतवहुंननाबहोईरेंतेटरकोटिकडुषकी  
टिकसूषपावैधीरजवेतज्ञानगूनगावैधीरे  
जधरमशानगूनदआमाहामोहसूनीचाकी  
तभाआएहसूनिमोहमेवउपजावातथप

येनीमत्रीनीकटबोलावा॥सकलसैनमीलेनम  
रा॥माहामीहतवकहोसूना॥सुनएताच  
प्रवर्त्ताववेकनरेसा॥लीनोंआनीहमारोदेरा॥  
अथत्तममंभकरोवहराई॥देसअपनोलेहरी  
नाई॥राजामंभहमारोलीजै॥प्रथमहीकामके  
आएसदीजै॥अगाअगाकामरहेभरीपुरा॥जो  
नवीवेकजाहिहसभदारा॥जवहीकामकेआ  
एसदेनु॥दखवखसहीतआनीनरव

भये ज्ञान उत भयो जौ को मां मन सा भौ मिरु पे स  
ग्या मा कहे कवी रह्यो प्रवाना को म च लावे  
पा चो वाना नीर फल को रस भवी चही ज्ञाना  
सब्द सुरती सी रनु नवाना को म कहे रहनी  
की सूरारि ज्ञान कहे रह्यो वीचे की को म कहे क  
मनी समतुला ज्ञान कहे रह्यो वीची को मूला  
को म कह्यो कैटी गजा ३ ज्ञान कहे सो पीनी हो  
रघाई को म दीही सकती मन राजा ज्यो स

नी

कति कहै वो लै साता ॥ रहस्य अधीक प्रजरे का सा ॥  
नी स्वेग रहं मारे धां मा ॥ माहा मोह की करे न हो ॥  
आना ॥ अवत मो सौं करे सग्रा मा ॥ कंचक वोर  
सुख मीरी गनै नी ॥ सभर कपोल सी सदेवै नी ॥ सब  
गुन के कसर गती धाना ॥ चंचुट सफल जो सं  
दरी सजो ना ॥ अवल का भक हेरं गरा चो ॥ अंग अ  
गची आसुष सां चो ॥ दोहा ॥ रचौ हं द अने कत्री  
वीधि ॥ भवत्री आके अंग ॥ सैन चैन तव चटी च

ले तबवाढोकोमअनेग २२ चौपाई कहेधरम  
दासगूरसोनोकवीरा जगबडेखागेनहीतीरा  
कहेकवीरसूनोधरमदासा कहोबुकारभेद  
तमपासा दारुनबडोकाखप्रभाता मोहखगे  
दिनचिनहोरखाना ज्ञानथैचकेमनकेले  
ज सतगूरकेकवलखचरनचीतदेह रहसूनी  
ज्ञानअचभैभैनु साहबकेचरनकवलखचीत  
देऊ वाढोकोमचढोरनरगा तेजतपतिगुवा

नैतरंगा॥सर्वधिवीरवैतवशाने॥जीतोत्ताहि  
वीवेककी आना॥तवहीवीचारज्ञानसोकह  
ई॥याकोभेदसभेहमलहर॥ज्ञानवीचारीजवे  
तथगाजी॥कामनीसजजाऊकीबजागी॥धी  
राऐसीत्रीआधीराऐसीराजूनीरबीनले  
हीमासकोसाज॥हाउतचानधरुमपसारा॥  
दसोदारताहिनरकभेतारा॥नोकरेट सक  
फंअवरलारा॥आधिदीठ

नवसीधरं मव्याधिवीस्तारः दुषकैगावजो वसे  
गङ्गारः वीर्यमूत्रं च आतनभाइ देयिवीचा  
रीकहूकहीनजाई नीरवीनी आसूचास  
भडरहीभाई यातैरचेवजुदुषपाई चीखर  
टील्लयेटकर्मवासा रुहीरभवनमांसघा  
गासा एकरतनकिष्ठासुधार माहापुरु  
खीनी अवतार काहाकहौकहूकहीनजा  
ई नीरघतसूषसभनीठहराई याहीराचि

श्रुतिपावेदुष॥ सपत्नसमाकऊं नही सुखा दु  
षकी रासी रचे जो कोई धीरगनर नारी नरक  
है दोई॥ याही वीचारी साहव सौ राचो॥ वीस्य  
कर्म समही सौ वाचो॥ वीना भेदें धूर के प्रचे  
काम स्वारथ वोषही दर सौ॥ करम व्याल कीहे  
रची डारा रहनी सव्वीन जग जहा रा॥ ए  
ह कहें ज्ञान रहो वह रा॥ काम से न डारें वीच  
लाई दोहा॥ प्रेम भक्ती वल ज्ञान सो रहो रोयो



॥

रनपाए काम को मारी ज्ञान सौ डारे कहै कवी  
 रस मूजाए २३ चौपाई कहै कवी सत गूर सम  
 जाई सव्य सरती गहो चीत लाई वीच ले काम  
 चले धीसी आई मोहन रयाति रा जाय ह जाई वी  
 चलो काम मोह अति ला जा प्रेम भक्ति ज्ञान त  
 नगा जा वीध लो काम मोह ये गै न मोह वो ला  
 ए क्रोध सो कहै न ताम स तेज क्रोध तेरो नामा  
 नरपत वी के सो करो संग रा मा तौ मै सतने

जानें तो ही को धा। जी तो वीध क जानें तो व जो धा।  
असो अयव ल तो हि मै कहें उ। ते रै ते ज जान कहें।  
रहे उ। सब त को ध च लो त व धा। इ। करी उ य ने स।  
राये र न आ ई। व धू वी रो ध की नो प्र वे स। अव कै  
सं जान त म जी तो मो सौ। जो तं म नी से जी तो का  
मा। करो जान हं म सौ संग्रामा। ये ह स नी जान अ  
च नै भ स उ। जा ए व च न रा जा सैं कहें उ। अव रा

धको मारो दोहा अति प्रचंड बो को ध है कापी  
चलो मैं मंत्र सधिवृद्धि धीर जन रहै तब वोह को  
पी चटत श्व चौपाई तब राजा मंत्री न सो कहै  
अप्रबल को धको मारो चाटि ए तब सभ न मीरे  
की नवी चार रह तो जा ए दी मा सो मार बोली  
वीवे की द मा समू जाई तूं म तो को धको मारो  
जाई भक्ती ज्ञान तूं म कर ऊ सहाइ अप्रबल  
को धको मारि वहाई सुनत द मा र न रोये जाई

लीनों सीत लवधन कों चढ़ाई दीषत दिमा क्रोध  
चली जाई मनसा भोमी रोये दोनु आई नुत ते  
क्रोध नु वेग लगाजी इत तै दिमारही रन साजी  
मारन क्रोध नु वोत बधाई इत तै दिमा दिन्हम  
सकाई क्रोध कानित जिगारी दीनी सुनत  
दिमा अन सुन करी लीनी तब जो क्रोध प्रउ  
रोये नीव होरी दिमा कहै सनहै मरी घोरी सी  
तलवचन दिमा के वाना लागत

है मन आना मीटिव चना चिमात व बोले कापे  
क्रोध वीना जड मोले रे वी धिची मा क्रोध सोः  
लडई जौ आगार पोनी मै परई दोहा भूले भूले  
सभ को कहे रही जौ हिमा दी टार कहे कवी  
रसी तल भर गई जौ जरनी बुहार २५ चौप  
क्रोध जरत ते गये बुझाई माहा मोह मै पदत  
ई हारे को म क्रोध त व जाना माहा मोह राजा  
सं कोना चक्रित मोह मंत्र नही कर दे सनम

ष ज्ञानवीवेक सो मरई। माहा मोह मत्र नुप जावा  
तेत दन लोभ को तरन बीलावा॥ लोभ नुठेत  
व मांथन न्नाई॥ ईन सतरहे काहा दों पाइ॥ लोभ  
मोह के आगे आवा॥ अहो राजा तम की न डर  
पावा॥ चिंता का हाते रो जीव आवा॥ सोई कह  
तेरे मन भावा॥ मै अप्रवस गहै तेरे आगे॥ तौ लग  
काहा ज्ञान को जागै॥ माहा मोह रजा सनी वैना॥  
तव लग मै तव लग सभ सन्या॥ तव गै मै तव लग स

भ-आई मेरे मेरे सने मेरी जी जाई मैनी जस वपाप  
के मूला ॥ मेरे गरव फीरो तू मफूला ॥ मैनी तो ज्ञान  
वीधे कहि जाई ॥ देस आय नो लेहू सो जाई ॥ तो के  
फेरि देव सभ राजू ॥ माहो मोह मेरे बल गाजू ॥ एह  
सूनी मोह हरथ मन भैनु ॥ तवही लोभ के आस दे  
नु ॥ लोभ चखे तव दखव सजोरी ॥ जाहो वोह नुग  
र ज्ञान की घोरी ॥ दाडो ज्ञान हे मारे देसा ॥ लोभ न  
व काख को भेसा ॥ दाडो ज्ञान हे मारे गोन ॥ माः

हामोहकी आरुसपीतु दाला मेहोनेवकमहा  
मोहकों लोभहमारोनाव आरुजोनवर आपलो  
दाडोहमारोगाव २६ चौथई अवरन आरुलो  
भयचारु भागीवीवेकजानलोहीमारो मैचित  
सरवपापकोमूला कोइनजोनेपेउ अरुसूना  
सैसैतिनानहा अतिवहई लज्जलोहीजोनदोस ।  
दोरहई ज्ञानलोभतगरुजोमारी हयतसन  
सवनकोटारी मैतोहवाधिलारीहोजानो ३



बमैहिमोसोपायो जावो॥ सनतभागवतगीताते  
मनीके॥ मेरेसनमूषसभतेमफीके॥ उततेलोभ  
प्रगटेआई॥ अवहमत्तमेजानीकेपाई॥ तूमजनी  
जानीकोधअरुकांमा॥ मैअतिअपवसखो  
भमेरोनामा॥ दाहो जानहमारोवाउ॥ नहीतोही  
काचधरीषाउ॥ दोहा॥ तूमजनीजानऊकांमके  
धही॥ अतिहमारोनाव॥ जावोवहोरीवीवेकपे  
नहीतवधरीषाव॥ २७ चौपाई॥ एहसूनिजोन

ममत्र एककी एउ॥ चहोरीवीवेकराएधेगएउ  
राजामचकरोठहराई॥ लोभनांमपैजीतेजाई॥  
जीतमलोभकोंजीतोंआज॥ तौपैहोनीकंद  
कराजू॥ तववोलेमेंत्रामहाप्रगास॥ एहीवी  
धिहोएलोभकेनांस॥ राजाकेपुत्रजरसंतो  
षा॥ लोभहीमारिमेटावैधोषा॥ जवरारा  
वोलेसूनीपुत्रसंतोषा॥ लोभहीमोटकरो  
नरोषा॥ प्रेमवांनतोहीदेउसहाई॥ अप

बल लोभ को मारो जाइ सूनत संतोष न होये जाइ  
मन सा भूमी रोये दोउ आइ लोभ ले चले धन को  
ची संतोष लै समीरन मै पै ची लालच वान लोभ  
तव मोरे सत वान संतोष संहारे चिन्ता सकत  
लोभ की आइ ज्ञान संकत सौ नीर फल करइ  
अति दुष फांसी लोभ तन लाई नगर ज्ञान सौ  
मे टि जाइ कर गहे धै नूक लोभ गर भानु नुत  
ते ज्ञा चापि दख आइ परे संसैत पबं डित की

एतुं सा च वानधन्य गृहीते एतुं धीरजयं मंगल  
 संतोषा वीचलो लोभमोहरेण रोषा दोहा कामक्रो  
 धदोनु वीचला ए वीचलो लोभ अकाज माहामो  
 हमनमै ऊं धै ॥ अवगएहं मारो राज २४ चौपाई  
 वीचलो लोभमोहप्रगैनु तव मोही वो लारंग्रव  
 सौ कहैनु मानो गरबहं मारो काहो वीचली सक  
 ल सन्या तो रहो ॥ अवतं मरो करो सहाई मेरसं  
 गगरव नु ठि धाई

जपतपज्ञानरहनीनहीयानु कोपे गरवमोहकै अं  
गै ज्ञानवीवेक जाऊ कीन भागे सतहि गरबनुवे  
तव धाई जपतपज्ञानमारें वीच लाई ईत ते मो  
ह गरबनुवीधवा उततै ज्ञानवीवेक चीख आ  
वा वेसूध साहि गरबगही डारा अनीतिवच  
नहि मां सौ मारी बल करी गरबनुवे समूहाई  
तयषवा सनेही रुडो गाई उगर ज्ञानराव पैग  
रुनु गरवगंवार बीव अति भैड राजा मोको

आरुसदेह नववानसो जीवेरुज दीनवानरा  
वकरीलेउ हीतकरीबुगए सोन केराउ। मारेरु  
नदिनतावाना हरोगरवहवभागिवीलाना  
दीनवानमरवकोलागा। जवनीजगरुअपने  
भाभी जीतिवीवेकचलेगसगाजी। पाहेमो  
हचलेदनसाजी। माहा मोहराजामोहितम  
कतेवीवेकहमसोसग्रांमो नीमतावनम  
हतवतने वीचित्रवानवीकतवअन नरु

ॐ मोहगोहडारे वीवेकै चेतनसचारा अन  
रथषडगमोहगहीलीना अरथषडगसोनी  
रफलकीने नीदासकतीमोहसंचारे जायी  
तसक्तिवीवेकवीस्तरा मोहकसीमा आस  
चारा कतरीवीवेकहीनकमेडारा माहामो  
हमननुयजे अदेसा हंसेवीवेकरहीबल  
तेरा प्रगासवांनवीवेककरीलीएनु तव  
हीनअंधकासमैटिगरनु सतवांनसंतो

संभारे चिंता सकती लोभ की आड़ी ज्ञान सक्ती  
सौ नीर फल कर डी निदुष्य फासी लोभ तनूना  
डी नगर ज्ञान संसे सेट जाई ॥ कर गहे लोभ धेन  
क गरवाना न तले नून चापि दल आई ॥ परे सं  
सैत पयें उत की रुजो चि वन धन करै गहि ली  
॥ धीर जया डग गहे संतोषा ॥ बीच लो लोभ  
मेटे न रोषा ॥ दोहा ॥ कोस को ध दोल बीच लो  
बीच लो लोभ न चक जा ॥



श्रवणरहमारैराज २८ चौपाई बीचलो  
लोभमाहपरगुनु तवमोहवोसागरवसो  
कहेनु मोनोगारवहेमारैकाहा बीचलो  
सकलसन्यातूरहो ॥ श्रवतुमकरोसहाई  
मरेसंगगरवनुविधाई परतवज्ञानरहने  
नहीपा ॥ कोयेगरवमोहकेआगे ॥ ज्ञान  
बीचेकजाऊकीनभागे ॥ सनतहीगरवनुठे  
तवधई जयतवज्ञानमारैबीचलाईइतते

मोहगरवनुवीधाया॥ नितते ज्ञानबीवेकचलीअ  
वा॥ वीरुधसक्तीगरवगहीउरा॥ अनीतिवचन  
दीमासोमारा॥ वसकरीगरवनुवेसमूहाहीत  
पयवासनैदीरुडीगाडी॥ नगरज्ञानरीवपैगरु  
गरवगवारदीठअतिभरु॥ राजासौकोआए  
सदेनु॥ कौनवानसौजीतोएऊ॥ दीनवानरावक  
रीलीरु॥ हितकरीनुगरज्ञानकेदीरु॥ मारेज्ञा  
नदीनतावाना॥ हारोगरवतवभागीबीवानादी

श्रवणरहमारैराज २८ चौपाई वीचखो  
लोभमाहपरगु तवमोहवोखारगरवसो  
कहेनु मोनोगरवहेमारैकाहा वीचली  
सकलसन्धातरहो श्रवतमकरोसहाई  
मरेसंगगरवनुठिधाई परतवज्ञानरहने  
नहीया कोयेगरवमोहकेआगे ज्ञान  
वीचैकजाऊकीनभागे स्नतहीगरवगुने  
तवधई जयतवज्ञानमारैवीचखईद्रतते

मोहगरवनुवीधाया॥ न तते ज्ञानवीवेकचक्षीच॥  
या॥ वीरुधसक्तीगरवगहीडारा॥ अनीतिवचन  
दीमासोमारा॥ वसकरीगरवनुवेसमूहाहीत  
पषवासनैदीएडीमाही॥ नगरज्ञानरीवपेगएनु  
गरवगवारदीठअतिभएनु॥ राजामोंकोंआए  
सदेनु॥ कौनवांनसोंजीतोंएऊ॥ दीनवांनरावक  
रीलीएनु॥ हितकरीनुगरज्ञानकेदीएनु॥ मारेज्ञा  
नदीनतावांन॥ हारेगरवतवभागीवीलोंनादी

नवानगरवकोलाया जवनीजगए अपनपौभ  
गी जीतिवीवेकचखगलगाज पादेमोह  
चलेइलसाज माहामोहराजामोहिनामा  
करेवीवेकहमसोसगनामो ममितावानमोह  
तवताने थीचित्रवानवीवेकतकव आने  
भरमचक्रमोहाहीमारा वीवेकचक्रचेतन  
संचारा अनरथषडगमोहाहीलीना अरथ  
षडगसोनीरफलकीना नीदासकीमोहसे

चारी॥ जाग्रितसक्रीवीवेक बीसारी॥ मोहफांसी  
माश्यासंचारी॥ कतरीवीवोदनीकमैडारी॥ म  
हामोहमनबुधजौअदोरा॥ हंसवीवेकरहीव  
लतोरा॥ प्रकाशबंनवीवेककरीसीरउ॥ तवची  
नअंधकालमेढिगरउ॥ सतबानसंलोषसंहरा  
रा॥ असतवचासमोहकेमारै॥ कहैबीवेकस  
नोनरपतमोहा॥ अनेकजुयारकरैसोकोहा  
कोटिबानवीगूनकोडारा॥ सवमंत्रसोंसभकरै

चार होबीवेकरजावसवाना॥ मोहिसमानच  
घरनहीआना॥ चोरीषानिचोरसीमाही॥ जहे  
चटमोहिसोसहेमानाही॥ जोजीवजोबीवेक  
सोन्यारा॥ जाहत्तुमजाकरेसीगारा॥ जानियमी  
तसतनरेसा॥ राजाप्रजासाहसंदेसा॥ जाहोह  
महेताहासूयसमतत्वा॥ जाहातूमहोताहाइ  
षकोमूला॥ सांसोभरमयधेमतेरोसांगी॥ जानवा  
नवीवेकतवचाडे॥ मूरवतमोहमारिरथकटे

करेवीवेकमोहतनदीग॥वीचलोमोहदेशनप  
ग॥वीचलोमोहदंडेदीसभगेनु॥सकससूयेथदुं  
दमोटगरनु॥दोहा॥कामक्रोधअवरलोभमो  
ह॥रहसभमारेमारि॥ज्ञानदीमांसतोषवय॥क  
हेकवीरवीचारी॥र॥वौपाई॥नीजमनभयोअ  
वनीरमसर॥मायामोहभरमभरभाज॥सह  
जसीगासनबैवेवीवेका॥सरनरभूनीकेआ  
नदसेधा॥वीवसतवाजेभगतिनीसाना॥वेव



वीवेकमाहा सखथा ना धरमनुदेनीरमसमन  
मंजु सभम्हभरवीवेककेरज सुनीप्रमभा  
तिकीरीती आर्द्रकरीसंतनसौप्रीती वीवेकस  
गरजौमटेसुनावै जौसमूजेप्रमपदपाव दोह  
मैटेनुसखेवीवेकबल अटलभरदलसाजि  
अवतमननीरमसभयो गयोमोहदलभाजी  
दोहा जवलकमनवीवेकनही तवलकस  
गेनतीर भौसागरमेंतीरे असकथीकहेक

बीर॥३॥ सताबीदेक सागराक बीरगौसां॥  
सपरना सतनामे॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥  
लीयतै॥ कबीरधरमदासकी गौहि सखनीधं॥  
न के बीजक॥ प्रथमही करता आयुतै बीज  
बीचं जीहि तही सवे कोइ सतजन॥ तब सभ  
संसे भेटि जाय॥ जीन्ह घो जत जग बीलीया॥  
टहि हति सो मूर॥ बाले गरव गुमान के ताते प  
री गौदोरा॥ प्रथमहि करता मुख अमीत बानी

सोहो

जाकीरोचसकसरजधोनी सुखनीधानसुखसो  
धुनजागरकरनामैकीपालसुखसागरपोच  
तत्ततीनोगुनजये परनवेह्यबोलताआपे  
आपुअपमिन्नजसरीर सोहपासतकवी  
र आपुहितत आपुपूनधारी अपुअमगूरई  
हाचारी आपुहितवेतवीजवीसारी आपुह  
पूर्य आपुहितनारी आपुहित आपुलवेनही  
कोई तेहिकारनसभगरबीगोई हम आ



पनपन जग जग जाना सभ सौ कहत रहे रह  
 जाना जो कोई माने सत कर चीन्हें वचन ह  
 मार ता के वारन बंके कहें कबीर ~~दीखी~~ २  
 ऐवटरत नरतन की घनी बट में आयु आयु  
 बट गानी बट काये जन का जपाया बट मे  
 धर्म बट ही मे दाय्या बट मे वेद बट ही मे बानी  
 सर्व मूल बट मे ~~ना~~ ~~नी~~ बट मे चोर सा जव  
 ट माही ~~ना~~ पाय पुनि बट ही मे आही ब

व. ३१  
ती  
तमेनीकटवटहीमेंदरी बवाहिमेंहंसजीवन  
मरी सोनयेथबटाहिमेंकीन्हा सनसीधबट १  
हिमेंबीव तीरथबनठहरावा ठाकुर  
पूजाबटहीमीहावी बटमेंमारफूफबटमाही  
भूतघेतआही अजवय्यायाबटके  
चीन्होचतूरसूजान बहिबटगढोताहील  
यो होमिफवअभीमान कहेकवीरहंसक।  
यासोधो जोजेहीसमूफेतैहितैसेवोधो

अपने द्वैत में की नबी चारा देवो धर्म दास हूँ और वा  
धर्म दास बाँधे के बानी ॥ ये मैं भक्त भक्त न मैं जा  
नी ॥ सा लग्न भक्त सेवा कर ही ॥ दाया धर्म बह  
त र धर ही ॥ साधु भक्त को चरन पधारै ॥ भोज हि  
न करण अस्तुति अनूसारै ॥ भगवती ताव हि  
ह त ही ताई ॥ ये मैं भक्ति र सपी अहि अघाई म  
हि न सन वच कर्म गोपाला ॥ तल क दी सत ल सी  
की माला ॥ धारिका जगत्ताथ हो ए आस गय

बनारस गंगानहार बोलीहि बचन सत मुख बा  
नी मीथा कहै कब जनहि जानी राम की लख के  
समीरन करही नित्य वर्तव कृत सेव मथुरा प्रस  
न ज बहिगों तो भए कबीर सो भेट ३ कबीर चन  
जी दा रूप तन धरे सरार धर्म दा सकौ मी ले कबी  
र उदित बदन द आसूष चैन हसी मुख का  
य कहै मुख चैन धर्म दा सत मुख डै जानी मा  
हा भक्त सीतल मुख बा नी तम ते भक्त न देखो

आना॥ घरतुमकाहांकवनचर्याना॥ कवनही  
सासेतमचलीआरे॥ जईहोकाहाकाहमनला  
रे॥ काकैभजनकरेचीतलाई॥ केरतावसेसो  
कौनेवांडीपुछतमनमेदुषमर्तिमानो॥ करता  
आदिपुरुषपाहचातो॥ जोलागकरताचीन्हो  
नही॥ तोलागियेमभक्त॥ वहिजाही॥ कजतीर  
थवर्तकेकीन्हा॥ कमलापहीरेलीलसीरही  
न्हो॥ काहभरसनिभागवतगीता॥



टिनमनको जीता जीह करता सो नय जे हो सो ब  
 से कं वने वने ता को चीन्ह परचे करे छोडि दे  
 ऊजरी चहुं रं मैनी सुनि धमदा सञ्च भे भर  
 उ चैसा बचन काऊ कहनु जी दा रु प डे न ही  
 हम देखा कहे बचन मूष वरुत बीसे धर्म दा  
 श बचन सुनै जी दा हम रे दीट जाना वास मो  
 र बांधौ अस्थाना वरनै सौं दी जाति को बानी भ  
 जोरं मक्क स श्री सारंग पानी पारब ह्य से बोची

तलार्ही सीतारंमसदसूषहार्हीसेर्हीसाली  
यांमकोपाव॥अर्धनामानिष्टेलैंलाव॥सकये  
लभकसोरहोअधीना॥शूरसेउजीन्हदीह।  
दीन्हो॥मीथ्यावचनकबकनहकहोये  
मभाक्तिमैनीसदीनरहो॥हमारसंक्याकच  
नाहि॥हमसेवाहश्रीरघुनाथजिनीधर्म  
प्रहलादनेवाचेव॥सोहेरीहम  
५॥कवीरचचन॥मैजीदा  
चौपई

श्री मारा तमजनी होऊ का सके चार रंमनाम  
सभहुनीया प्रकारे रंम अगीनी जैसे कावा  
जारे कौहेन सूरत करे घंटमाही बीनाच  
नहे वूडे भेमाही जाके कहों नंद के लाला  
सोत भे सवन के कावा दलवल के सब ऊ  
ह संघार पेमो जा रही वलंगा रा पं रुवात  
कौभक्त कहावे तिन्ह के सहिषहज वर  
दसरथ सूत कहिए श्रीरामा तीनऊ चीन

आपन कामा ॥ करता राम कै सैं भरु मात  
हीना ॥ कपट मीरीग का है नाहि चीनो ॥ कर होहा  
ताद आबत है ॥ ईन्ह को जम कै काम ॥ ईन्ह हि  
म अने कै पर ले कीरु ॥ औ सो कीस औ श्रीरं  
म ॥ ई धरम दास है नो मत हारा ॥ को है न  
ची नो वचन ह मारा ॥ ज्ञान दीष्ट करी ची  
नो वानी ॥ पाषं म पीतर पाषं म पानी ॥ कर  
ना प्रीय व ऊरी न होई ॥ राह सं सै स

नी आये गोई साखी ग्रामै हवो सन हारा दे  
 ह सरूप तन से जहं मारा सून धरम दास मन  
 कर हीतवाना थीति को बात सूतत मनम ।  
 ना के करता भर भगवाना नाम मोरई  
 न कैसे जाना ईन को वचन ज्ञान को गाही  
 जीदा भेष धूरध कोई आही थपई न साखी  
 ग्राम की सेवा तीरथ चर को मैटे भेवा  
 राम की स्र को मैटि वताना है जीदा कोः

सोचतमनमहस्रखअतिभएउ

उ

केहोकेसोअपानो॥धूमदासमूहहोरहेव  
ऊतयोजवेदनहीकदे॥लोसीधामेरुपरा  
रएउ॥जीदाहिउतरनेदीन्हा॥एतनीजोस्टीहि  
वजारमकीन्हा॥आपदोकोनमैमेराखीन्हा  
धूमदासपऊवेअपनेमेरा॥मनमेंफूकीर  
कीनवऊतेरा॥वारहवर्षतीरथहंकीना  
घाराकाजोरबापहमलीना॥जगनाथप  
रसेचीतुलाई॥रामनाथरखीनहोएआउ॥  
नीपनामअणिारकीना

॥ से सा च ल पर से ॥ मन ॥ ला ॥ जी न्ह के ॥ म  
॥ कट मोती माला ॥ दोष न परयी गो दा वरी ॥ उ  
॥ मेला भरो हर सत हा की ॥ परी सी वा ल प्रह  
॥ री दार नीम घार मी सी री प ग धार ॥ व दरी ना  
॥ थ के दार हो रा ॥ श्री वी द व न म थूर की ॥  
॥ उ ॥ म कत्री वे नी पर से ॥ प्र या ग प्र से ॥ का सी  
॥ अ स्थाना गा द्यार ज ग्री ह प्र से ॥ ग गा सा  
॥ गर की ॥ अ ॥ शी ना ॥ ॥ र ते ती र्थ ॥ च ॥ मै धा ॥  
सरल न्न सरल सकल न्न स्थाना

रहहुं मे मथुराह अथा मन सा हेत सो द्य  
 सषाय जी दामोद नुया नी संभ मार को की जे जी  
 दा के भाई जाति मले छ कथे चतुरा धर महे र  
 सपूनी न फर बो ला फली पार जे बनार चटार  
 घा वेता हवा ला वी ल मन लाई ले करे धोई  
 फर माह मंगा री चौ का वैठी करै अस नान  
 दानि दानि जल अद हन दीना अति पवी  
 न सो त पै र सोई साली ग्राम के भोजे होई ल न



करीचीउदीउवेअपारा॥अमासहीतअगिनी  
समजारा॥धर्मदासकेदुषभवभारी॥हरीहर  
करहीपूकारा॥जीवअनेकपरलेभएअस  
यैवोधरकारा॥लेखकरीकाटजलसेवूजा  
या॥चुलावूजाएबहुतजलनाया॥जोकच  
जरेसोजरागरभाई॥जोवंचेसोलीनबचाई  
नफरहंकीजं॥दाहंकराई॥एहभोजनदेले  
पाई॥जुहोवचनति॥धर्मदासतमभक्तसूजा

लकरीधोर एरचो जैवनाए

ना जीव को दया का है न जाना की नौ नै म अ हि  
नै क अ चारो नीरषि नीरषि तूं म का है न लीना  
ना तूं मार देव तार कहि दीना जौ लीग जीव  
दया न आवै तीरथ भमत जन्म गंवार दसर  
थ सत श्री राम कहार तीनऊ अनेक जीव स  
तारो नेतां कीतो बैर है की सम देह हो रदी  
ना जे जे जीव धरी नीमार तो तें सब हो रब दल  
लीन १० अ वचन हं मार ही दरे मै धरी हु

ससैतजै कच भोजन करहु ॥ आत्मा कस  
कवहनहीजै ॥ रचित प्रेम रस भोजन कीजै  
हरि नमो ले अनै के दाउ ॥ हरि नमो ले हठ वा  
दह मांसे ॥ हरि नमो ले ग्रीह दार त्यागे ॥ हरि  
नमो ले नीसू वासर जागे ॥ दया धर्म जे हिव  
से सरीरं ॥ तां हां षो जी ले कहै कवीरं ॥ सनि  
धर्म दास धी जमन कीनां ॥ भली सीष मोहि जं  
दहीना ॥ इन के बच माहार सधानी ॥ जी दा पीर  
हरि नहि मिलै तप के त्रए ॥ हरि नमो ले इंद्री साधे ॥ ध

देहा

आमहैजानी॥ अनपरसादपातरीभरीलीना॥  
फरसीकाढीतोभोजनदीना॥ हमलेजाऊजें हा  
जी॥ हमकरीहैफरहार॥ हमअधननकरीहैं  
पीरजी॥ मानीहैंकुमुतंहार॥ ११॥ लेषसाद  
जुं॥ आसनआसनआए॥ धरमहासफरहा  
रमगाए॥ सालीगांमकीअरपनकीना॥ पुनिरु  
चिभोजनअपनेकीना॥ लीएअचवनतेअ  
मीतमीते॥ आसनकरैसुख

वैप

हर एक हरी चरचा को ना पानिनी दासै स  
एन की नारेनि सीरं नी भए वीहाना नफर स  
हित नुवी कनप आना धर्म दास वाधो चली  
आए वास गोपाल वक्त सख पाए जे दाव  
चन ही दरे जव आवे अंतर गती वक्त सख  
पावे भए फी किरक वदरसन पोने पदत  
आदि अतचितला उ सत सत सब नी क  
हा मो जानी परी सब सार जे दानाहि

वोह ॥ पुरुष है ॥ अतः वो से वं ह्यहं मार ॥ २० ॥ वोप  
तौ धर्म दश स म न की न वी चार ॥ दि न महो छ  
करों भं मार ॥ सी धा सो म ग्री हि व ज त म गा वा  
वा ॥ भे द स स स स स स क स खो ॥ आ रे वै र गी वं ह  
न चार ॥ ना गा वी र क त डु धा धारी ॥ गू दरी अ  
नो ना वी धि व ने ॥ जो गी जै द ॥ आ र घ ने ॥ व  
ऊ त त प सी ॥ आ र स न्या सी ॥ ज हा वी भू ती स  
न वी स वा सी ॥ वा जा ता ल मी रं ग

संघनादधुनीहोहिनीधानो॥ भक्तिभावसमंही  
नकोकोनाईखाभोजनसभकोहीना॥ सभके  
ज्ञानपरयेधरमहास॥ सूत्रध्यानसभकेवीसवा  
स॥ कीतीरथकोमूर्तिवतावै॥ कोईकलिके  
बेलनामदीहावै॥ कोईकएगोपालहिगा  
वै॥ कोईदुरूगासेवेसेकरधावै॥ जोगीअलस  
पुरुषउचारहै॥ जेहासमीरेअबहषोहाई  
सनासीरंमहतवहरावै॥ परमहंसअभि

नो सीगावै॥ एक बात को ई नो ही कहै नानाः  
विधि परै पंचवत॥ धर्म दास सा रे मत सब को पर  
मत संव को पाषंडि है ॥ ३॥ समुझी परा सगरो को  
मन माही॥ कोहि जे दा को मत दाज सो नाही का  
वर्ष दीन॥ दोहर मे रहै नु॥ चर्खरी सूरत का सी का  
के कीर नु॥ धर्म दास का सी चली आर ई दा  
हेती सो दरसन पाए॥ भक्त रूप मुख मृतव  
नी॥ नाम कवीर जगत गुर जानी॥



लसाषीपद्गात्रे ॥ जोर ॥ भीरसभनसम्जावे ॥ ध  
रमदासत ॥ होनीर्वगाटे ॥ चरचाकरतवजवी  
धिगाटे ॥ पेसीतशोनीसर्वहेशरे ॥ थाहकवी  
रकाकाऊनपाहो ॥ धर्मदासचीहेसुर्जज्ञाना  
जीदापीरतजीहोरनआना ॥ प्रथममोहिमः  
शुरमीले ॥ वज्रतवादहमकीन ॥ स तस न  
सर्वकाहीमनहमारहरीलीन ॥ १५ ॥ धरमदा  
सम नहरीषतनी ॥ १६ ॥ वज्र ॥ पुरुषमो

हिंदरसनदी नदी ॥ अपने मन मे कीन्हवी चारो  
इन्हको जों महाटक सारा ॥ ए दोनु दीन के वा  
ते कहंही ॥ इन्हको भेदन काहुँ स हंही कवः न  
ऊं भगत कवहुँ हो रजें ॥ दा दोनु रह चलावें हि  
वेदा ॥ एतौ घटमं ह किस्वी चारो ॥ तज धरम  
दास को बदन नीहार ॥ आहो भगत महाजन  
आवज प्रगुधार ॥ हि नदी नदी नदी कोहि

कहो लै गारारः

रती तू ह्यारव ऊहं मज्जे के ॥ धर्म दास हं म  
त ह्ये हं म ॥ चि न्हा ॥ वडत दीवस मे दरसन दे  
ना ॥ वडते ज्ञान कहा हं सते मही ॥ मथुरा मां ह  
मो ॥ हं भैव जे वही ॥ तम भगता हं मजे दाफव  
र ॥ सोधि ॥ देषु सुनो मात धीर ॥ भली भई जे  
दरसन भए ॥ वडरी मीलत म आर ॥ जो अव  
के मो सो मीलो ॥ तो जग जग वी दरन होर ॥ १५  
दरन धरम दास हीरो ॥ सुख भरे ॥ सन मुख धार

नमह

चरैयेस हायासी धुचीनवा भरी नैना ॥ मेरे  
हउ धिखसु धितसु खिचैना ॥ धरमदास कवीर  
नीज भेदा ॥ सरे सद्ध के घो लोक पाटा  
पग दे ज्ञान ध्यान की घानी ॥ सत साहजी ज  
मृत बानी ॥ जो कोई सुने दीन मन लाई ॥ स  
से दरे पाप सो जाई ॥ धरमदास बचनो ॥ धरम  
दास पुद्दे कर जोरी ॥ सुनो क्रीपानी धिबी नत  
मोरी ॥ विनु पुद्दे संसै मेरे ही रहे ॥

ति०

अवातीकचकहिर ॥ कोतमहो कहासी ॥  
जोना ॥ कोहातमारनीज असथाना ॥ प्रथम ॥  
आपननामसनावज ॥ केहिसेवजतमक ॥  
कैधावज ॥ कवनपुरुषहेसीरीजनीहार ॥  
कवननामहैप्रानअधारा ॥ सतसतकरुमे ॥  
हखामा ॥ नीखेपूछेंताहि ॥ मनकीसंसेमोहि ॥  
हो ॥ रामवतावजमोहि ॥ कवीरवचन ॥ सुनो ॥  
धर्मदासजोयूछेंमोही ॥ सतसारसमूजावे ॥

विशेषीरुकरोखनगामी चौपद

तोही कपटरूप जनी पृथ्वी मोही ॥ अजर अम  
र कै राखो तोही ॥ फूठक होत मो को पापा ॥ सो  
ईक हो जो हरे संतापा ॥ जो तम सत सत मान  
ऊ ॥ वचन हमार ही देखे में दर्शन का ॥ धर्म दास व  
चन ॥ कपटरूप जानि मो को मानो ॥ नीखै हम  
हि अपन कै जानो ॥ हम घोजी सदा योज मेर  
हो ॥ तूने जान जो सत न माने ॥ तोही कवि ही  
र कै जो तव घाने ॥ मेर ऊ से से साहव मेरा ॥ अ  
हि हि

वतचरनगहौ नृप शै सोई भेदवता ब्रज जोहि मे  
लागो तीर आवागवनने वारज जमको क  
गदकीर शै कवीरवचन धरमदासनीर  
षजनी जतैना हमहै सतपुरुषस्य चैना  
हमसु क्रीतहमसत कवीर हमही द्यै  
धमत धीर हममती धनी अवरनै आना हे  
मघीथि पातियुष्य पुरा नो पाचतत है साउ  
हमार तीनी गुन हमही अनू सारा बीज

ब्रीचहंमहीगुनधारीसकलसीसीहेसंभाहं  
मारीहंमरेभीतरसभकोईसहैबोलनहार  
हंमाहहोएकहैहंमसबमेहंममैसभरही  
यासवरूपहमतमसोकयाहंमहीमते  
सगरोजुजीआराहंमहीजवहरीपरघनदा  
हाहीदेरेचेतकेदेघडाचामडसंसैसूल  
हंमहीपेडहंमपलीहमसायाहंममूल  
गइश्चधर्मदासवचनसुनीधरमदासकैसूष



भौभारी धनकरतावलजानुतो हारी जेतं मः  
आदिपुरुषहोसाई तमपरेकरता अरेनाई  
भलीवनीहंमहरसनपाया पेममूलसगरे  
चलीआया वीजवीदतंमहीजो आही सब  
वीस्तारतंमरेमाही सतकवीरनीजनामतेह्या  
ए घंमलहेनवडभागहंमार करता आदि  
पुरुषनीजयाया मनपसारिपुछीजो भाया  
अवकहे ए आदि उतपांनी कै

यह

सैरची सकल मन्त्र...  
कैसे आप...  
ताही...  
कैसे...  
से...  
नी...  
दिसा...  
यह...

तीर्थवर्तकवनवहरई जोग ध्यान के पंथ चर ।  
ई एक ही ते दो सर के ही कोना ई न स ब्रह्म कैसे  
तम ॐ श्री नमो राम नाम कहि आते आवा ॥  
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ तुरु क की ते व  
को हा ते पाषा ॥ कौने भित्ति वय क व ॥ तां पां  
कौन भक्त को पर चे दी न्हा ॥ एस भक्ता कै भर  
अधीना प्रथम ॥ रस की डा के की रनु ॥ वी  
ज ये त कै से नीर मैनु ॥ कै प्री थी वी भग ॥ भीगे नु  
होत

कै से जोग सवार का कोवीर्य रेने ॥ स कं ल सी  
 ए मे ॥ भार ॥ कवीर वचन ॥ धर्म दास मे क-  
 हो वृहा ई ॥ तम नी के के समूह हो भा ॥ तम पूरत  
 हो वज्र ते नी के ॥ समूह ना ही जो अंध ही आ के  
 न ही होते पवन अत्र ॥ या नी ॥ पाद क पूजं म  
 न ही म मानी ॥ जो क ही रु कर ता न ही होते त  
 हने ही पूनी रु कं हा ते ॥ सत समान ॥ जो होते नी  
 दान ॥ श्री गुरु ॥ ॥ पानी पद

नसरूपहमारा अग्नितेअतनत तुसेचारा त  
तुमाहहमत तूहमाही एहीमहंकेर करेक  
रूनाही घटमेंजलजलमेघरा जीवस  
रूपबोखताया गु सवहंमारासतहै तूमजने  
जाइसरीक मोदमृत्कीजोजानो तसवहिवे  
अपरक २२ जाहि नपूतमहंतारी नही ता  
दि नहम अकेला आही एहसरूपसाजतन  
एही सीसनजायगयें मसनेही कामअंक

रबीजवलमाही ईदीयांचततुमम आदी ईच ।  
रहममानुषरुपा आद अतममई हे सरुपा ।  
नीजसुनेह आदकीरचना ईदाघाट काम  
कल्पना ईदरुपघगट भई नारी जा कोते ज  
पीथीभो भारी भई सुरीत बहते अति काढी ।  
ईछाकरत आरभई गाढी अतिसरुपतनभो दो  
गसलोना पुनै उचंदजोते असर्वा माहासत्ते ना  
अत सुंदरी चैन अनूपरी साल

कुंचभंभिनि गजगामीनीदीगनाल २२ वौ  
एन्ध्रैरभौवादी हंसतहंसि वचनमूष  
काटी सुनङ्गकंतमईदातोरी तैपीवमे  
आहवलेजोरी एताकहतप्रसनमनभ  
एतु साषासहीत अगतेहिदीनु मोकहं  
दोषहर्षमनकिम् सतवातमेवोही चीतर  
न्हा भरसंजोगभोगसूषभारी माहाप्रम  
सूषयाद्योनारी नीर सीपदीयहोर आइ

धरेनामसकलजगजाला सकलशिष्टिजीनिरवीसवार  
खातिवूद बीजजलपाई। नादबीदरक  
घटसमाना। हीरफाटचूनीबीलगांता। ए  
हीसंजोगतेभएत्रीवाला। जेवेबुं ह्या लघ्वे  
धकंवार। नृपसं भुवीसतेछोटा। एनी  
जआहहेमारेहोटा। जसहं छविवाणी-  
कैवनेतैसंपुनहमार। सोईरूपसकलछ  
वि। एकबीजबीस्त्रार। २३। पृथमह दोई  
सरूपप्रदाना। साचहीसांच च नीना



नारीयापनीयर्मअभागी माहाप्रपंचउठाव  
नलागी वचनवेसूधअकीलकछनाही  
ज्ञानमेंटिरहीहरहीमाही कहीवातक्त्त  
नकोमाने कामकंदलाकामेंजाने माहा  
प्रबलगर्वगहेली मोहनीमेंमूर्तजोवेली  
अग्नि रुपजोवनमदमाती अवरसूनोप  
कीकरतंती वंचाअगतेप्रगटीआईता  
तेंवाचाअग कहाई वंचाछलेतें वारनैल

श्री

को

दहा

दलेवीस्रदिवरूपलोभाही॥सरनरमूर्तिइत्य॥  
हिंका॥सकलसीएवसकीन्ह॥ऐसीमोयामोहि  
हनी॥सरवसस्त्रीलीन्ह॥स्त्रीदोधरमहासैमवो  
नमोना॥सतसतकहोपुवोना॥बीजरूपपुरुष  
नहोते॥रीरचनोबीजवीनूकोकरते॥पाचत  
तुबीजतेहीमोही॥सतसतरहकरतीआही  
जीवसतहैबोलनीहार॥पानीपवनसंजोगसं  
वारी॥प्रीथीप्रीयतीहमनीस्वेषा॥का

सत कवीर कहा पाई हे आहि अवरन कोई  
समाधि समझी जीव आनंद होई बीज तेवी  
ज बी सारा देही भीतर देही संवार सांचही  
ते संचाचली आवा गठनी हारहं मनी ह्ये पाव  
आनंद भर हरष जीव माही अवरन आवैत  
ही आपुची न्हावत साज समेता सत कवीर  
सत है करता अवर जहां ले जान करत है ते  
कथनी सभ हव अलखवता वेपी मवीनू रु

बौपई

परेशनहीमठः॥धरमदासचेतुजचीतलार  
संसेधोषादेजवहाई॥पोहनपूजेजाहीबीगोई  
चेतनबोलताखवेनकोई॥धरमदासमनकीन  
बीचार॥साखीग्रामगंगामेंफार॥तेनूकातोरी  
कीबोअसनाना॥समूचीनुपदयूरनप्रदाना  
साचावचनजानीसभपरीआ॥समूचीसंभा  
रयावतवधरीआ॥दरदरदरदरसना॥तुमतेपुर्ष  
आहिनाहीआना॥सभबटतुमहीना

मोरे चटतम ही हो स्वामा ॥ चीन्ही परेतम चेत  
जामी ॥ तमत्री लोको अंतर राषी ॥ भूगूते नरक  
जो दोसर देखे ॥ अब कहि ए अवर भेद वी स  
रा ॥ कै से भूली सी सी तू ह्यार ॥ का पर पंच वै की  
न भवानी ॥ सो सभ कहि जत प्रशानी ॥ कै से  
बी बूरे पुत्र तमार ॥ तम कहि वा हो ए रहनी न  
रा ॥ तम तो सत कवीर कहावा ॥ ईन्हनी रा कार  
कै से ठहरावा ॥ राम नाम जग भीतरे सारा ॥ सो

सकल श्री हृको प्रान अधार ॥ तूम ही ये म तूम य हो  
आ ही ॥ तूम वी ना क त ऊ षा सी ना ही ॥ क हा धित त भ  
भ भू हो ॥ य षो ना का ज मू ला ॥ स भ सं का मे ट ज ॥ रु क  
ही मी ये स भ फू ला ॥ २ ॥ जि ओ र त व त ॥ ध र म वा स तं म  
स ही वी चे की ॥ आ पु अ प न यो नी खै दे वी ॥ स मू फी  
स व व ज त सू ष ही न्हा ॥ अ व न ही हं म तूं म सौ भा  
न ॥ त व तूं म म र ह ज हं मा रे मा ही ॥ ये म वी ज के भी तर  
आ ही ॥ ये म वी ज ते न्मा र ना ही ॥ सक ल भो न्मे त

महीसुनोनु मायाकेपरपंचवतानु मायापीनी  
दिभेवाती माहाप्रचमक चमीकरनी मैअ  
पनाकोनारीठरनु उलटेकावहीकेभरु  
ब्रह्मावीससीवकोवीसकीना सुतहमारहे  
मसौहरीलीना एहीभेदकाजवीरलेनपाय  
वीआचरीवआदिहोएआवा श्रीईसरीने  
मधराएसी सरूपनीरूपसभेधराएसी अ  
गीनीरूपमनमोहनी प्रगटसकृतसमेत का

मवातते मारया नीनुभमन्देस न दान्  
वीकेवलीनेवानी च्च च्च च्च च्च च्च च्च  
ली गजजिपगुणे च्च च्च च्च च्च च्च च्च  
दनवेली कादम्मे मन्दे, दिग्गन्ती नन्द  
चरीहतेयन्, खोरे, दिग्गन्ती नन्द  
चेहम्, छन्द, मन्दे, दिग्गन्ती नन्द  
गारा ह्दिके, च्च च्च च्च च्च च्च च्च  
जावम्, च्च च्च च्च च्च च्च च्च



नहामीनीचमकेअसे शुधरसुरंगवीवकलजे  
सेतीनीवरनकीपहीरेसारी पुत्रनचखेचलीमे  
हेतारी ब्रह्माकोमनहरीलीबोहे रसचसीमा  
आकीन्ह नषसीषमदनप्रचमभौ भएलाज  
कानीतेभानी रच कहेब्रह्मासुनोवचनहेमा  
री तूमरुपनीधानकवनकीनारी कहेभोमीनी  
अवरनकोई तेमोरपूरुपहेमहीतोरजोई  
ब्रह्मापूषेचीतलाए कवनैपूरुपतोहीनीस्प।

प्रमजोतिहैप्रदुषनीनाश॥जीन्हंजन्तुसुखसह  
पसंवाश॥तोहिकारनमीहिरचनाकीन्हा॥  
बोहीप्रमधनीसभजतेभीता॥सुनीबुंहाकोम  
नपतीआना॥माताकोदलकच्छत्रवरनजा  
ना॥बीहसीवदनरससंगचटावा॥हंसतओ  
चीकोचमीहलगावत॥सुधिवुधिवुंहाव  
केभूलाना॥हीदरेंलगेकोमकेबाना॥भर  
प्रसंगसुखसेजअबानी॥पापीनीपाप

छलवानी ऐहीवीधीवीसहीकीन ऐहीवीधी  
सीवहीलपटसी काजेनीआचरीत्रनचीन्हा  
२० श्रीस्वाअधीर्जभइअदभावनो केन्यारु  
पकवजेनअवानो प्रथमहीमोहीपुरुषक  
हीवोली पुत्रनछलीसतसोमोली आईईव  
तैप्रगटीनारी पैदाईसकेमैवेतसेवारी प्रथम  
हीतीनूपुत्रनुपजानी पुनीहमसोवीछुरेवी  
लगानी कालाकाछिकेपैजसैमानी पुनीभ

इतींद्रकीबरुआरी॥तीनइंद्रनीआचरीवनजो  
नी॥कोमधीनतीनइंद्रबासकीन्हा॥धर्महासस  
मूजोउतोही॥देवीअतिलीगभरहुषमोही॥  
पूतनसोकीन्होअट्यान॥तातेभरचौरसी  
ठांगु॥मातातेमैहरभई॥पूतजतैएकंत॥अ  
सीमाआप्रबलहे॥सुनोवीवेकीसेत॥३०॥ब्रह्म  
ब्रह्मसीवसोहंमकहीआ॥मायाकेबलतं  
मजनाहीलहीआ॥

चारी काहेनचीन्हपरीमहतारी जाहीतेकीएज  
भोगसुख सोतीरीआमातातोहारी तासकंन  
हमनीसै तूमसूतआहिहंमार तबतीनजंस्  
तनीरेवेजमोही तूमकोआहपूचोतोहीस्ने  
सीबब्रह्मावीस्नफूरेवात नीसैलखजमाता  
अवरपीता एकपीताकौतीनजंभाइ आदि  
नारीतूमारीमाईयेपापनीछुलतूमसोंकीन्ह  
तूममनूखेवाहीनचीन्हो ईशानैमैवोहीअप

जाय॥ सुखसंजोगतमनीरमाए॥ सुनोबेहावीर  
स्नमहेसा॥ तमतीनोबीजहंमारे॥ आसा॥ बीज  
केगुनची॥ हज्जवांती॥ पीतापुत्रएकेसहीदा  
नी॥ हंमजोपीतातंमपुत्रहंमारा॥ हीईरंचेती  
केकरज्जवीचाए॥ हंमकरताप्रीथिमीपति॥  
तंमतौपुत्रीहंमार॥ नीमोरोतवनमातजयनी॥  
कसभुलीअकीलीतोहारी॥ सुनीकेतीनोच  
कीतभरनु॥ सतवातयापीनीइल

ह्याके मयवीसनी हारे सीववीह से भीतर मन  
मारें तीन जंके मन नीखे आवा पीता आह एह  
सभ समूका द्वा तव तीनो मीखी पूचन द्वागे हं  
मही खो मीतूम की तनुवी भागे नारी पूतरत जी  
काहां द्वा रहेनु का कारन जो अंतर परेनु क  
रता वचन सुनो बंध्या वीसम है सा नीखे सु  
नज आदिनु पदे सा जवहं महोते आपूअ  
ने ला पानी पौन प्रीथी मी अनील एक मेला

गुनतीनीहीन्होवीसाराचंदसूजदोइनैनसं  
 शाराईहेरुमछवीदेहहंमारासैसरुपतंभ्रा  
 राचवरवीजकोचंनचये।चीन्हजसीरीजनी  
 हार।३३।सूषकोसागहंमनीरमावा।संततः  
 मोरमोहीसोआवा।नारीयूरुखहंसकीडीरा  
 कीन्हो।रुतसंजोगवीजवलदीन्हो।कहेकव  
 रनारीवटवरीआ।रजावाकोवीजममपरी  
 आ।रजवीजसंगीजीवसमो ॥ १ ॥



जोवनजयप्रवामा सरतीचेतनबोखताहंमहि  
हंमहीत्सुमत्सहंमसमही सोलजवहरीजीवः  
कारीगर नयसीषरचतरहेवटभीतर वहन  
लीखाटुनैननुजी आरा सोबोलेसोदेवनीहा  
रा अत्रभमारसवदेवरकीन्हा जीन्यावरतस  
भरसलीन्हा सोभीगनासीकाछुवीकोमूला  
जोमेवेलेपवना सोहिंसोहंधुनीहोतहे एह  
नादवीदहेजोवन अध प्रमवेदनानाभीस्पृ

मूला ब्रह्मसंभक्तवत्तज्जाहोफुला नवीक्षरनव  
जुहीसेवारा हीदरकंठकरअंगरीत्यारा कं  
ठसेवारी होरवरअनूपा पावपीहरीपूरनस  
रूपा तीनिसेसाठीदेहमेंचीरावतीसदसन  
अनूपमहीरा कौहनी कौचा अवरहपउरी  
करअंगअंगभागेवज्जतेरी चलीवेकोकर  
पावसेवारा देषनकोंकरनैनहंसाश भव  
नसननकोंसरं वंनंवी वर

लीला तमकुटचवी राजा सातुससदुसरीरसम  
ना चटमैसेसबटहीमैभाना रसततूतीनोगून  
माचततूबटमाही सोहेंसोहेंबोखता एहक  
रताहमआह अमु कवीरपरजापरजाजोरीकें  
ठटकरीजहान ताहीनचीन्होबौराजीन्हदी  
न्होएतनासाज हमहोसतसतहममाही ह  
मकोधूठ कहनकोनाही सोचवातदूठजो  
करई आदिभंवानीमीथ्याबोली तूमतीनू

छेलेसतसेमीली॥ तातेवोहीतेभरनीनारी॥ अ  
तरयरेहीरुनहीहेरा॥ कपटरूपतेहीमैनुवी  
भागे॥ दुरीभरहंमदेवनखागे॥ भीछेछोहहंम।  
रेतोहीलागी॥ समूकीपरततंमवमभागी॥ दिव  
जंयोजीप्रीथामीसाश॥ एकैरूपएकैअनुहा  
श॥ मातातौमकहंजोतीवतावा॥ छलप्रयंके  
तमदीहावा॥ एतनीकहीहंमनुठीले॥ सनूधमर  
जग

त्रपञ्चेची आरु ३६ प्रीथीमी अंध कलानुपज  
 वा अवीनुवी गंगेत घेत छावा चमकेवी  
 ज आगमनुजी आरी अगनीदुह देषी महेता  
 री ऐक कल्यावे सीध सवारी सीध पीठ पर  
 भई असवारी अस्तभूजा धरे कला सेवारी  
 एक एक अंतर भूजा सेवारी अगी नील  
 हरी श्री सैल पके देही चंदु मायि मी गलो-  
 चन तेरी एक करष पर एक करषामा र

एककरचक्र एककरमं॥ एककरमुदगस्य  
ककरगदा॥ एककरफोसीत्रीगुप्तकोफेदा  
एककरवातधेनूककरलीन्हा॥ एककरहा  
लद्योदनकीन्हा॥ सहस्रकलाश्रवलाबल  
गोनी॥ माहासक्तीश्रीआदिभेदाती॥ मायाम  
हामोहनीजगत्रयजंघीआए॥ भस्मकेयमानत्र  
याधिया॥ मनमेंरहेसंकाए॥ ३१॥ तौतीनजंके  
परंभ्रा

गीनीरूप है अतिनुजी आरा अस्थ भूजा तन दे  
धीरुनारी कट कै कै नीप गूने वर सो है सीः  
ब्रवानी त्रिभू अत मो है अस्थ भूजा अत्र हीः  
लीन्हा काज लरेष नैन भरी लीन्हा बीदी ल।  
लली लाट संवारा नैन भाल मीग अतिनुजी  
आरा पाटी परी मोग अति नौ नी लूरी पीठी  
सौ काटी लेवै नी कं चूकी क सहीर परहार।  
जानू सूर सूर सरी धारा मोथें मूक ट चूचू

विसीधे॥ अलषरूप आदिमनमोहे॥ पहररुक्  
लेनीरथेन॥ सकलसाजमजगत॥ चपलवातक  
हेब्रह्मा॥ तूकौनवीर औधुन॥ ३६॥ ब्रह्मजैक  
ब्रह्माकहेदोनकरजोरी॥ कहोंवीरनतजागे  
बखनोरी॥ कंवनदीसातेतुमचलीसाए॥ एते  
कालाकाहोतुमयाए॥ वीरकहेजनीरथ  
जुगोई॥ अपनोनामकहोचीतलाई॥ अपनो  
मोहमोहमोहीवतावज॥ अशोक नवनफ



रमावृद्ध सीवहों का हा अववीलमन कीजे अप  
पनाना ममोहिधि री दजे वीनो बोले दोहम का  
जानी रूप तमार दोष मरमानी बोध करे तूम भे  
दवतां तु अवजनी अपनौ कर्म दुरवृद्ध बह्य  
वीस्त्रमहे सकौ देषिवदन मूसकार सकलः  
भेद हंम कही होतूम सौ जोतिनी हुं ले ज सीरम  
नी ३२ माया वचन तौ आदि कही विअनू सार  
सूनी बह्या सीव्वी स्त्रक् आरा अलपरूप मै ३

आदि भवानी॥ मै सी बवाहनी दुर्गरानी॥ मै चमै  
मैं जय पा देवी॥ वाकी बातनी मै अजगैवी॥ मै गई  
त्री मै भसमंती॥ मै गंगा जंमना सरोसती॥ मै ईश्री त  
नी लोक कहं मो ज॥ तं मती न ज सी सच न मै सो ज  
मै ही र मै सो नं मोती॥ गुगन सक लहे मारी जो  
ती॥ मै वाक वादनी सरदा माई॥ मै ती न जे कं हे र  
सदा सहार्द्र॥ मै जौ करे सो नी खे होई॥ हम  
ली अवर नही कोई जाहि नी वा

जाही संग रहो ताकी वै ॥ सनो बंध्या बीख अन्न सी  
व ॥ जौ मोही संमीरे कोई ॥ रज पाट देनु छुव सीर  
दुषदा लोह न होरे ॥ ध० ॥ तब बंध्या प्रछे चीत लाइ  
कौन प्रसूय तोही नीर माया ॥ के तोही सीरिजे अ  
स्तो वांहा ॥ के त त मार के हूवा सो नाहा ॥ कौ माता  
को पीता है मारा ॥ हम तीन धूक वन अवतार  
नारी एक छल हम सो कीना ॥ ताको कपट हम  
नही चीन्हा ॥ पूर्व एक अवतार जु चली आवा ॥ अ

पनाभेहवोऊससुकावा॥तुमअपनावलवडतदे  
यावा॥तुमकाकीकलाकाहावसपाजा॥ताहिव  
ताव्रजजेतुमकंहकीन्हा॥अवअवधतुमका  
हाकेदीन्हा॥जोतुमहीकरेवोहअसोईजेहा  
महंतुमहीसुषहोई॥सीरिजनीहारकवनहे॥  
तुमकाकीवरनारी॥हमकाकेसुततीसडे॥सो  
मोहीकहजसंभोरि॥धश॥मोतावचन॥आदि  
सरसतीमायाकहाईनीर्ण॥ शेरहई

प्रमप्ररुषहैजोतिसरूपा जाकेनाहीरूपअ  
वरेषा ॥ सव्दरूपउन्हीलघेनकोइ रंकारधूनी  
सूनीमेहोई पाचततूहकेकछनाही गून  
तीनोंसो न्यारा ॥ नावोहनुपजेनावोहवीन  
से नावोहवाटेनोवोहवैसे ॥ गुनकेसीसनपाः  
व ॥ जोतीअपारअथाहक्तावा ॥ नानारीनापू  
र्वकहावा ॥ अपरमपारपारकोनापावै ॥ अलष  
पुरुषवोहअगमहै ॥ वोहतौधनीतूमारमय ।

कहेसुनोबेह्मा॥जुनसीनीजोरुपहंमारधरवी  
सकहेसूनीआदिभंवांनी॥जुन्हकेनोहीकच  
रूपनीसोनी॥तिन्हकैसैतमकहीनीरमात्रा॥अ  
सषअपाखसेकेहीगांवा॥मायाबचन॥सुनो  
बेह्मावीससीवसंकर॥मोकेहीरचहीसकलगू  
नर्कमा॥जुन्हकेहेतुगर्भमोहीरहीआ॥तमतीने  
सतजनमजतहीआ॥मैंतौआदिनाथकीचेस  
तमजंतजीहंमरहौअकेली॥हंम

महीषेयाया हंमरो अतनाकाजपाया मैभंसवती  
आदिनाथकीचेली मोरकहोकवजेनहीयेली  
करेहंकारवोहराहसंसार आरहसंभसो  
न्यारा ब्रह्माबीसमहैसरसनो प्रोकरतावर  
ताको असतमनहो एहनीस्त्रैमानजमी  
ए धउ बीसोचचन तौबीसकहेमीनतीसन  
मोरी सभवीरतंतसंनीहंमतोरी पूर्वएकहंस  
दरसनपात्रा हंमतीनजकेनुसंभूकावा

पीमप्रानजसहंमरुपा ॥ अथैवो जकहंवेनेसर  
पा ॥ अथैवो हाथपावमहंकांता ॥ हेमतीनजंकेहं  
हरसनदीन्हा ॥ उन्हवोलेतंमपूत्रहंमार ॥ वोह  
माताहंमपीतातेमार ॥ उन्हतवचनकहोनीर  
आरी ॥ हमरीईछानुपजीनारी ॥ तासोहंमसं  
जोगसूषकीन्हा ॥ कीलाहेतनाशसमदीन्हा  
तातेतीनोपूत्रननीजाए ॥ ब्रह्मावीक्षमहंस  
नामधराए ॥



महीपेलाया हंमरो अतनाकाजपाया मैभंसवती  
आदिनाथकीचेली मोरकहोकवजेनहीपेली  
करेहंकारवोहराहसंसार आएरहसंभसो  
न्यारा ब्रह्माबीसमहैसरसुनो प्रोकरतावर  
ताको असतमनहो एहनीसैमानजमी  
एधउबीसोचचन तौबीसकहैमीनतीसत  
मोरी सभवीरतंतसंनीहंमतोरी पूर्वएकहंम  
दरसनपावा हंमतीनजकेनुसंमुकावा

पीनप्रानजसहंमरुता चैवेवोजकहंवेनेसर  
या चैसेहायपावसेहंकोना हेमतानजंकेहे  
हरसुनदीन्या तुन्नुवोवेतेस्पुत्रहेमाण वेद  
माताहंमपीतातेमारा तुन्नुतवचनकहेमिप्र  
आमी हमराइछानुपजीनार तासिहंमरा  
जोगसुवकीन्हा कीलाहेतेनारागप्रदीन  
तातेतीतोपुत्रनीजार चेत्तावीरमहम  
नामधरार सहवोधिनुन्हंमसांकता मरु

तप्रपंचवज्रकीन्हा मीथाजनीकहोमाता तैकर  
 ताआपनोचीन्ह धध सतसतजोवीस्त्रपुकारे  
 तौमाआवोपारयमार चौकीनुधीमनमाहमर  
 ना रहीअरगारमनहोसकूचांनी तौसीवक  
 हेसुनोहोमाता अबजनीगोवसीअपनोकेता  
 हमतीनोजनकाकेजाउ तेकैसेअपनोंकेत  
 दुरर तवहीक्रोधपुनीमईभावेनी अपनी  
 मैजरोपीकेवानी सुनोद्येह्यावीस्त्रमहेसा

मैं जो कहों सो धरो वीस वासा ॥ जा की बात कहो ते  
ममो सो ॥ ता की बात कहो मैं तो सो ॥ बुधट पोर  
आही मोर वैश ॥ बोना होइ हमारो शैश ॥ मैं आ  
दि कुं सारी अजीत बल ॥ कोई न केत हं मार ॥ प्रम  
म जो निरुक्त पुरुष है ॥ सो मोर सीरीजनी हार ॥ ध  
जमयी वमेटिया पीली बोली ॥ तबती न जंकी  
मोला ॥ ब्रह्मावचन ॥ ब्रह्मा कहै सु  
ता कहो हिंमवज्रतपी काई ॥

ती मानो जो रह कह सो नीही खे जानो वीख जंम  
हं अरगानी सीध सकल भोर भौ माने खगुन वे  
ह्या को वेवहार माया पछ भर अधिकारी वी  
ख सतो गुन सत प्रकारी सत वचन नु नही प्रगट  
प्रकारी सत वचन ही देखै मुख काटी तातें दीन  
दीन प्रभूता वाटी तम गुन सीध भौ लामन मानी  
हर्ष सो कक च मन में माही यस महि मे दी प्रच  
रु भई तीनों सत वसी कीन्ह वीला वी दो सभ

आसि कहें ॥ एतनी लोक वसी कीन्ह ॥ धर ॥ वे  
ह्या वचन ॥ वे ह्या पुच्छे दोनु कर जोरी ॥ सुनो मंता  
मीती ॥ एक मोरी ॥ प्रेम जोंति जो तेँ वह शत्रो ॥ सो  
कोहा वसे कव दरसन पायो ॥ कंदन वनयो  
हृष्य पुरांजो ॥ कौन दीसा नह को अस्थानो  
कैसे रंग बिवि दोह ॥ कोहा वसे दोह प्रेम  
सनेही ॥ काहानो मन्ना को कहि लीजे कैसे  
प्रेम सधार सपीजे ॥ कैसे वा को दरसन पा

तीमो नो जोरह कहै सोनीही खेजो नो वीख जंम  
हं चरगानी सीधसक लभो रे भौमाने खगून वे  
ह्याको वेवहार मायापछ भए अधिकारी वी  
खसतो गुन सत प्रकारी सत वचन गुन्ही प्रगट  
प्रकारी सत वचन ही देखै मुख काटी तातें दीन  
दीन प्रभूतावाटी तम गुन सीध भोला मनमानी  
हर्ष सो कक च मनमें माही धसम ही मेदी प्रचं  
मभई तीनों सत वसी कीन्ह वीला ली वीसभ

आसु केहे ॥ एतनी लोकवसी कीन्ह ॥ धरुवे  
ह्यावचन ॥ वेह्यापुचेदोनुकरजोरी ॥ सुनोमंता  
मीती ॥ एकमोरी ॥ प्रेमजोतिजोतेबहरवो ॥ सो  
कोहावसेकवदरसनयायो ॥ कंदनवनयो  
हपर्यपरेना ॥ कौनदीसानुहकोअस्थानो  
कैसेरुपरंगविदेह ॥ कोहावसेवोहप्रम  
सनेही ॥ काहानामन्नाकोकहीक्षीजे ॥ कैसे  
प्रेमसुधारसपीजे ॥ कैसेवाकोदरसनया



तीमो नो जोरह कहै सोनीही खेजो नो वीख जंम  
हं अरगानी सीधसकल भौरे भौमाने खजुन वं  
ह्याको वेवहार मायापछ भर अधिकारी वी  
खसतो गुन सत प्रकारी सत वचन नुही प्रगट  
प्रकारी सत वचन ही देखै मुख काटी तातें दीन  
दीन प्रभूतावाढी तम गुन सीध भौला मन मानी  
हर्ष सो कक च मन में माही वस महो मेदी प्रच  
म भई तीनों सत वसी कीन्ह वीला वी वीसभ

आरुक्कंहे॥ एतनी लोकवसीकीन्ह॥ धृष्टांचे  
ह्यावचन॥ वृत्त्यापुचेदीउकरजीरी॥ सुनोमंता  
मीती॥ एकमोरी॥ प्रेमजोतिजोतेवहरवो॥ सो  
काहावसेकवदरसनयायो॥ कंदनवनयो  
हपूर्यपूरंजो॥ कौनहीसाउन्हकोअस्थानो  
कैसेरुपरागुविदेह॥ काहावसेवोहप्रेम  
सनेही॥ काहानोमत्ताकोकहीखोजे॥ कैसे  
प्रेमसुधारसपीजे॥ कैसेत्ताकोदरसनया

वो कैसे चरन कवच चीत सा दो तूं म कह कैसे  
उन नीर माया हम ती नी वंधू कैसे नीर माया  
कौन न जी कहा जी र हाई वो स वचन का दो  
का हाई पानी पौन का हाते आवा कैसे पंथी म  
मम मावा अव कहा मोहि स नारी के नी खे प्र  
चो तो हि मा नि दो हि हम न खे जनी भट का व  
सी मोहि माया चन जो नी खे घे ह्य ।  
प छत मे पा ह स भ ते मार

अगमजोतिबोहरूपअपारा॥अथमजोतिमहीम ।  
कोकहाइतीनीलोकतेन्याएरहई॥उन्हकेरु  
पवरनकबुजोही॥उहानापोनीपोनअकास ।  
रंकारधुनीसब्दप्रकासा॥उन्हकीसत्कीश्री  
हममाया॥हमकहेकीपाकरेप्रभूशया॥जव  
बोहधनीमोहनीरमावातबहंमउन्हकार  
रसनयावा॥पूनीमोसोबोहभरअसोपा॥जैसे  
सर्जअस्तहोरकाया॥

रहो इसी सनवाई कौन करन बोह पूर्व है कहो  
ता संभूकार ४८ माता वचन स्मृतारेष वर  
नही वाकै अधर धरे तुन देह तीनी लोक के  
हरे तोहा देखी पुरुष वी देह सात सर्ग तेन्या  
अकी सब हंसै सीत तोहा अधर पुरुष अ  
गति रहे तुम ते मूर्ति के चीन्ह धरे सो कोर  
अयोपज वन एउ तव मै उ न्ह कर करनी व  
मन जो कर रहे स सी जेन लागी मोहिते नीत

एचतएगी। तौनुगी अंधर अकासकीवानी। पी  
रथीतौकहीरचीभंवानी। औरनीसानुगीएकवे।  
नी। सायातोरहोईहंसहोरांनी। खवंननासन  
परीमोहीभाषा। तोहिनवानहोईहंसया। नुह  
कैवीदूरेदुषभरमोही। रोवतरोवतअतीपनबी  
चोही। करसौकरमीजीधरीयाना। धोकिता  
अलोपभरप्रसनीधाना। भीजतहाथभरसक।  
प्रचार। तौबंहावीस्त्रमहेसजन

री

पूनीजनमेसंकरसीद्धलोथा मैश्रादिभेवाजीभई  
सनाथा तुन्हकेजकुंमषुगटभई हाथअंरुभे  
रमोहि दोहअंरुमफूदीषुगटभर सोसमरु  
नतोहि ५० देखीवोवाकोरहवीहारा नरुव  
धिजेमजालपसार ममसंजोगत्रायापूववी  
यानी अभापनमोहीमेंटीवतानी प्रमजोति  
हरारसीनारी कहेवेकीमाभरमोहीवारी  
हाथनमैफूवावतलाहे कंतसंजोगसोगप्रष्ठ  
पावे

लावर कहती ती जूं समझावा ॥ चंमती न जंजम सह  
थोरी पावा ॥ फल का फूट फूज गए न नवत मये  
दाई ससौ नर ॥ प्रथम ही प्रगटे ब्रह्मा ॥ पुनी वीर  
सतो गे न धारी ॥ पुनी नृप जे सी वसे कर ॥ चौथा गम  
सधीर ॥ पशु बज्ज जतन की हों पात पा ला ॥ अस्था  
न घोरि पी आरें वासा ॥ जं वता होत सभ रस  
आना नव मै धीर्ज ध्यान मती वाना ॥ माहा पूर्व  
कहे से मीरं जंजव ही ॥



[illegible]

भागमंषतंमहोतज्जः। तौहंमतेमयमाया। पुरमैभगभो  
गनीश्रीभेगवती। तंमलीगोधरपर्वयेनीवता। नाते  
रतहमतेमसौकोन्हा॥ कलाधरेहंमतेमलाहि  
चीन्हा॥ मैकरताहरतागारत्री। जौकोईकरेये  
हसौपीती। ताकैमायेहमहीवीराजे। हेउर  
गजीतचत्रसीरचाजे। वाचावसतेहीदेहु  
पार। हेयेआगमलोकरुजी। आर। चहउर  
रुषकोहरसनपावे। प्रमजो

रीधिसीधिवनदैनुअपार असूरभचनौनावहे  
मारा अस्तमजाहमअर्धैअवतारा सर्गयाता  
तलैदौरहेमारा भैजगजलनीजकपर संनो  
बेह्यावीस्त्रमहेस हमतमरेधनसर्वस तंमस  
दाहमारपास ५३ जौमोहीस्मीरेबारवार  
ताकोसत्रहोईजरी चार जौमोहीपूजसीस  
चढावे सोसानजनमराजाकोपावै कंवस  
रसनीमेंहीकहानु नादसप्रसूररागनुवाउ

कंठवैद्यकेसैकथोपरंताः मेसरदासकलन  
लाकेनीधाने मोहीवीनाको आगसलये मोहि ६  
वीना अस्य पुरुषकोटिधे मोहीवीनागामी  
गमकोयावै मोहिवीना वधिराजवधिराज  
वै सनोवेत्यावीसमदेमा मद्रस्यकन्यादेम  
तो जवटवैसा जाहा गोहा जावनेदंतिदेदि  
मही हंमवानधीर्जमसिगन्मही देयकले  
सोलवीनापरी अदबुवग्याग्निदेयारुदन्त

नङ्ग सीरमै वसो एह नी सै ले जू वी चारी युध मा  
ता वचन सनत सषपादा तीन ज्ञानानी सै व  
बलावा ही दरे उं मग माहानी धी पार मोह १  
ली एव ज्ञ आ सव हो रे माया पै जनी पट हेव ।  
की वीर से साध को रीया वे का की छव वस्के  
तीन जे वसी की न्ह तव तीन जे सी ली अस्त्र  
तीनाना माया वरते माया मीठी तीन जे के व  
सरसती वैवी कहे भवानी सुनो वी देवा त्म

नीस्वैकरहंमारीसेवाःमनसाव्यवापूजेजुमो  
हिःसकलकलामैसौपोंतोही॥सकलसीस्वीके।  
ठाकरहोइहो॥जोंनीस्वैसरपूजेमोहि।तौतम  
कोवैरीकोइनही॥इयाजगरचीरतोहिःप्रप्रमा  
यावचनःपूजामोरसूनेचीतलाए॥कोमकल  
हंमआदिकहाई॥भगभूषभोगदेजुतममोह॥  
पूजागुप्तकहोंमैंतोही॥लीगभोगहैप्रानहंम।  
राएहीकारनअलषतेमहीअवताराभगश्री

०॥ रत्नीगञ्जसूचीकी न्हासीव अवसक्तीनाम  
धरीदी न्हा नीरगूनपुरुष अविहै मार मो  
र ही भोगन के तं मही सेवा परदा वीली के हों  
मै तो ही एह पूलनी खेदेह मो ही थद वी स्त्री  
वचन वी स्र कहै एह कै से कीजे सनत स  
वन हंम स म मरीजे कहो संकर वख जो नो तो  
र तै वी स्त्रारूप मार वख जो र तो रे ना ही धी  
ज अवधमी वज्रत अजव तो रे गून कर्मा

पछि सी कथा ते स भे संना वा। जेरे हाथ जन्म हंम  
पावा। त म माता हंम पुत्र व भूरा। को सै की जे भो  
ग। अवर नारी जो पाई ता सो वेनी संजोग। ५१। सा  
याच चन। एक ही भग एक संम नारी। अवर त  
रहना ही अनहारी। जो ना ही मानो कहा हंम।  
रा देव सरा प होई हो जरी छारा। एकै लीगर  
क भा आही। का हे ना भोग कर ज हंम साही।  
स्वाप संनत तीन जंम र मोना। माया न पटी



उमंग लेवेगीतीनजंकेहैकैसे राजप्रसैरवी  
संसीजैसे एकवारप्रथमहीहृदयकीन्हें सत  
संजोगतीनजंसेसीन्हें ताहीसंजोगकेप्रभ  
योहरहीया भगपूजातीनजंजवकी सो  
थेंहाथेंअंभरकेदीनो अकृतमधरजअल  
षकीधाम्ना अत्रीहअलषहैपूरुषपुराणा  
सनोबेह्मावीससीव हमतीनजंकेसाथी  
जोकरूभाषेष्टह्या सोमानीलेजतंसवस

५८॥ वृंहा कं वह मारने वा सा॥ मै सरसती सरस  
ती मुख वा सा॥ मै वा क वा दनी कं वही रहें॥ आ  
मनी गम सभ जो न उँ कहें॥ वृंहा हि था पी चली हो  
रुठी माया॥ माया जा सती न जे परछाया॥ जिस  
वादल मै चंद छीयाना॥ अस माया मधु मूदे जान॥  
कंत मेटी के अलख दीटावा॥ पुत्र न लगत वीर  
मना लावा॥ मम अछ त पुगटी जवही॥ पूर्ववे  
ली सह ईहं मही॥ प्रसन भर प्रथम हीर त दीर॥

रहे उग चर्तती नो अवधीनी ॥ उहो गरभ हार यश  
जोनी ॥ कथे नखागी परये चकहे नी ॥ कूठी क  
ही तीन जं वोरवा ॥ कहे हाथमी जी तीन जं ज  
नमावा ॥ ती रगून पुषदी ठार के ॥ तीन जं की  
ही सी हाथ ॥ भोग भूत तीन जं सौ बहीर  
कही साथी ॥ पर धर्म दास सह नीरष ज्ञान  
माया जाद में जीव अरु होना ॥ जो लगी आदि  
भेद नही प्रभे ॥ तो लगी सी थावा दबलवे धर

हासक है सना हो सजाना ॥ पत्नी परी पंच का हो वै क  
हो ॥ अब सनी सुवा की नट बाजी ॥ तीन सत  
कंहे की न्ह सी रोजी ॥ बं ह्या के सी र ही न्ह जव  
इ ॥ वी सही दी यो राज वडाई ॥ सी ब्र सं कर कंहे  
जोग दी टार ॥ अलष पुरुष नुं नही ध्यान सगा  
र ॥ आपने चं ली सरो वती र ॥ मान सरो अरा हार  
गही रंग भी र ॥ उपर प्रवत आत अ व गा हा ॥ नो म  
सं मे र अंत ना ही आ हा ॥

लोहनीवास मायाकीइच्छातैमानसरोवरहंस  
६० तेहीसरोवरमेंजाएवीआनी केन्यातीनीग  
भंतपानी तीनसूतकंहतीनूनारी असीईछ।  
कैअनूसारी एकतैएकरूपआगरी हंसवर  
नअतीमाहाउजागरी मायावेतरतनकीषान  
सीरजनीहारवीजसहीदानी गुगलनलागीही  
रामोती सीचेकरताकीकरतती जबमायाकै  
कूमतीवीरजी तबकरताअपनीमतीसाजी

अलग होए केंदे घोंन्यारी ॥ बीजरूप धरें हें कारी ॥  
जो बीज कहें चीन्हें कोरी ॥ तो करता मोही या वैसे  
ई ॥ माया जाव पसारी ॥ आजीव अरु के ते ही मा  
हें ॥ भली परेची देवता ॥ कांजें न होय ती अरु ॥  
ह ॥ कें न्या तो नीबी ॥ आनी जवही ॥ माहा अथा  
हस्य नुप जेतवही ॥ आदि भेदा नी भरे अहं ॥  
जस पूर्ण पुरन भए अचें द्य ॥ च जें ही सयें लीर  
ही उजी आरी ॥ अस आनंद सवयां वीनारी क

॥ रैनै न के रथुति पाखी माया मदन रूप को घ्याली  
माया मदन रूप रस भोगी जा के वसी राजा अ  
वजोगी राजा मोह रूप लोभाई ते जी गर्व अहं क  
र चढाई जोगी मोहे सुनी लगाई ज्ञान ध्यान त  
प तेज बडाई वा को पर पंच लखे न कोई श्री  
गुन मते सभ श्री स्त्री वी गोई दो सर के ती वई व  
ह शब्दा नीर गुन सर गुन पुई भेद लगावा दो नु  
न प्र पर जे छल समूजे ना ही कोई एक दीन मे

वीवीहवा ही दुबरे देवी सो ए॥ ए॥ धरमदा सब च  
नू धरमदा समीनती अनू सोरी॥ एक ही संका  
मे जमोरी॥ जवतं महोते अकेल गो साई नारीष  
चनाही नीरमाई॥ एकाएकी जवतं मरही आ  
ता दीन काहे को भोजन करी॥ कौन वसू करी  
भोजन कीन्हा॥ अननुत मन कवतें लीन्हा॥  
काया कंहे दोहन भौ कैसै॥ पाट पट मर कीये  
कैसै॥ एह प्रीथी भी वो है तैवी स्त्राए जो जन



को सगने को पार छी प्रथान है बहुत अपार  
 कौन थान की नहा अनू सार कौन वी लाएत  
 कं वने देसा कौने दीप माया प्रगा सा तेम कर  
 ता सभ श्री स्टी के मभ सं कामे टन हार धन भ  
 ग तेम ही मी ले तेम प्रगटे दीन दया ल ॥ ६३ ॥ कौ  
 न दीप मैनु य जी माया करी से जोग पूत्र नु य ज  
 या प्रथम ही वास मोही कहु ससू काई केह  
 जग हनु य जेती नू भाई को हा भ र छु स की नू भ

वानी॥ छलके गई कांहां भीत वाली॥ केहि जगह  
उनती न जे छा मी सी॥ आपन मान सरोवर मा  
मी सी॥ नग्य कोटक बसे वोइ छाई॥ जाला मूष १  
जोना मधरई॥ जम सरूप भई अति माया॥ स  
कल जीव धरी घई माया॥ वा कौ अमल कव १  
नहे॥ वंचे कौन नुपाय॥ ह्व॥ गों साई वचन॥ ध  
रमदा ससंनो मन चीत लाई॥ पाचत तू हे म  
तू मही चीन्हाइ॥ पावक प्रीथी सी

सर्वस्वबोखता है तौ ना रजत सतम भीतर तेही मां  
ही सोई हेम है दोसर ना ही रह नीज हेम अत्र वह  
मारे साजा प्रीथी मी सकल वीज नु पराजा ई छार  
रूप आदि हेम करता हेम ही सभ भोगी गूंन वेंत  
सकल चीज हेम भोजन कीन्हो वीथी वरा अ  
मीत सरखी न्हा अमीतरूप हेमारी देहा भोजन  
कौ मोहि कं वन से देहा हेम ही पानी हेम ही प  
वेंना अमीत वीज महार से जे वेंना पारस यूज

मीपावक॥पीरसपोनीपौना॥सकलवस्तुकेमूर  
हंमं॥हरेषागाकौन॥दुपपोचाअमीतपाचतत  
हंमहीदाताहंमहीभूता॥अमरबोदनज्ञानहं  
मारा॥अमीअंकूरहीदेरेंजुजीआरा॥उतपती  
करीजबइछाछाजी॥पाचतततेसभनपरजी  
तीनीप्रकासतीनीएनमाही॥अगुवापौनस  
रतीसेगआही॥प्रथमहीरजगनकोअनेसार  
जलअमीतवरीसेमोहीमारा॥सकलबीजन

गेअसराए जोंजोंईछाभईहंमारी सोसोबीजअ  
मीतअनूसारी अमीतअनपेनअवमूखा  
फलअनेकउपजेसंमतया वस्तरकारनभए  
उकपाया सकलबीजमीथीपुगाया सीरिजे  
नाथअमीतमीसीआं सकलस्वादरेगपानी  
पौना स्वादसूभावततूकाईछाबीजहंमार  
जोचाहेसोसभभए तूमचीन्हजसीरीजेनीहार  
६६ जोचाहेसोसभकरीलीन्हा आसनअफी

जयी थी कोना रचने कही वा कोना ही शया रह  
सुख सागर कस्तन पे खीरी सकल स्याद सुख साग  
र कोना संतत सुखा भए वे गाना आहि के नी दी  
कर ही अया ना बीज मे टि नोर बीज बंधा ना मे  
टि संजोग से ने वह रादा गुन हो नी र गुन कह  
धावा जा के सर पर धन ही देहा ती को स भ के  
उजोरी सं देहा जा के कर प गूथी न ना धी ना  
ता को संमीरन कर ही स आना बीन दे घे स भे

लैसावे सभकेषसमनोरजनभावो जाकेकरते  
जगवास्तारा सोहंगकरतावोसनहार माया  
तसोपीनीभई छेवनासीन्हसीघार जतीसत  
सभघारसी सुनदेघारदेघार ६ नीरघऊस  
वसकयसोपाता तूमधरमदासहोजीवत  
मूका नीरघऊमूलखेलमतीजोनो काजअका  
जदेनुयाहचोनो आदिउतपतियेऊअरथा  
सीरीजनीहारचीन्होचीतलाई अप्आप

सोची नृज संसै धोषादे जमारी जव भुजं देउ दहे  
कहे कवीर युकारी ॥ १८ ॥ पीथी आदि से नृज  
ना जव अकेल हंस मन ते न्याय सनत नृज  
रहा अकेल ॥ ईछा न दे अय से नृज वासि  
मथुरा चली आसुं मुख न मग आन नृज  
एन ता ही नृज मग मह दे नृज नृज दे नृज  
वेतनी रमै नृज स्वाशति नृज नृज नृज  
शरूप सद्य सवारी नृज नृज



पार पाती संग अगीनी से चार भई अंधि आ  
री वादल छाड़ गस्ते माया ते जजनाई चंम  
के वीजू लीनुनी वदन देषाई प्राट भई कूठ  
वील मन लाई मथुरा माया नुपजी कासी कं  
त कवीर श्री थीमी पूर एही सहो जाहं नुपजे  
श्री वलवीर हरे कासी कंत कवीरजी सक  
ल पीम मे प्रात आदि अंत अवमधमे एह  
नजी अवरोना आन आदि मंदा नी काहान

मानमानै करता के नाही मोहापही चो नै जवदे  
धीचेचलमनधीरा जहसरूप अचेत मली बां शे ।  
नदीसीमाया के नाही वेसजरगून कहरी काह १  
माहानी सतनी अरनी नीरदया सील संकोच  
समेवी सरया मती वेषी त कूच को मूला जेही  
परीये चसकल जग भूला रता के गून वा मै ज  
वजो नी तव कहें दोही मै छोड़ी परानी ॥ दोहरे  
नाही जीव के दोहा जग पतंग दोहरी पक मेह ।

हेमरेसादाजीवकीदाया सूषकोसागरहेमनीर  
माया जीवदयाजीवकोसूषे सोजीवनरहना  
जाए संगतिचीनेसब्बकी सोमोहीमाहेसमा  
ए १० माया असतनीजहेमजाना कामरही  
तमायापनकीन्ह दोषकुसहनेरहेनीनारी  
दोकेत्रीसा अतिअधीकारी कामहेतुअ  
गीनीगुठीआई अतिअगसंगमोहीनाही  
भात्री मारेसूरतीदोबजतवीदुषा दोहीके

वसत अंगीनी के भया मै क करता प्री थी पात बो ह्य  
त के नो ही जान की त कौ कहो वृथा र के बो ह्य  
करे आन को आन ॥ १२ ॥ भरपूर वेदी आदि भेवा  
नी रचना सूरती संग सही दोनी प्री थी भी पुत्र भ  
ए चतुर वी दोनी ब्रह्मा नाम वेद जी न्ही बोनी दो  
सर पुत्र वी संभर नो नु ॥ भरपी सपात वी स्र काहा  
नु ॥ तिसर पुत्र भयो सी वरंगी जटा वी भूती गौरी अ  
धंगी भांग धतूरा अम सनु पादा सब सभूत के

शे नाथ कहा का ईछावीज प्रगट हम कीन्हा पै  
मुख को जे नही चीन्हा नारी को मन देखि जूझा ना  
असथ न छीर बाए होए लीन्हा पुत्र देखि हर्षत  
व भई न जे नुमाया मोह चीत वीत बोधे नुपुत्र  
हम ते भए वीचोह १२ प्रथम ही कीया वडतप  
तिपा ली पुनीती न जे सौषे लखे ली तरुनी वीर  
को मरत रेगी धरी सरूप पुत्र न सो रेगी जब पोह  
मरवनी त कीन्हा दा को छ सती न जे ना ही ची-

हो जवती नहं सों प्रहे वोही। कौने करता सीरीजे  
तोही। तव वोही नरी राग को बहरावा। नीरा कार प  
रुख मो कैं उपजावा। सुनी तीन जे के मन पती आई  
वृषी छल के च लीरी गई। तव मो रचीत दया जन  
ई। कहो बूझाए तीन जे समूझाई। तीन जे कहें हं  
मजाए बूझावा। ते समेरे सुत मै उपजावा। नारी त  
मारी माता। वोही मोही भयो संजोग। समवी जत  
मतीन जे। वोही नय टी की रजतुं मभोग। १३।

हम नारी के स्वामी पतन से अनरीत ताते भौ चौ  
रसी एहत त्री आचरी वर मे दो वीधा उपजीभ  
एव तु वा वा य अव कहत न भागे पाय नीश  
न नीरा कार वह र र सी जो वी ज वी न वी जन अ  
कुर तं म ती न जं ची त चे त ऊ हम तं मार नी ज म  
स जै सै रूप स रूप हम तै सै त म अवतार पा  
प नी उर तं म के ह करी आ त म ही रं ए दे वी  
चारी सुनी ती न ह के करी की री भ र जानी परी

बेम्त वोप्पजोहिल्लसोवही नेक दस धुंको  
लोककेश वोहीपापीनीय्यपन्नोत इवो  
कहेसोसाच योतीएवहेमपकले नारोनीनक  
कसंकोष सल्लोनाहीहोन्नीनो वोहो  
उचीआय अन्तुजाहिल्लुनाहो नोहो  
मरुय पुनीनीनपुंकट्टेनिके नोहो  
सोकीन अन्तुनाहिल्लुनाहो नोहो  
सोन तीनोहोहोहो



लारे कपटक से की दुरमती अपनी अपनी छे  
वनां धार मथुरा महार ह छ सभ से लेत नहुं  
वसी कीन्ह मान सरोवर जात भौ एती नूबोह  
अधीन १५ तीन जे सो कहो ते दीटा वा तंसी  
मरो सो अलख पुरुष को पावो प्रथम ही धान  
हं मारे कीन्हो हं मरी सूमीरीत की बूकीन्हो  
जव संसीरोत वही हं म आयो आय रूप हं म  
दरसन देषो वों हं मरे सूमीरेसन सूधि होई

अलवप्रसूयमोहीनीरमाया॥यूनीसमीरोनीशका  
रश्रवीनासी॥वेमतीनजेंवधीरहोसूयसी॥यम  
जोतिहंसकहीनीरमावा॥उन्हकीकीयाहंसतं  
मकंहयावा॥तमतीनजसकलश्रीस्तीरजा॥  
वाटोवीधसकसंमाजा॥तीनजेंएकमतेहोए  
रहीहो॥वैरवीरोधकवजेंमतिकरीहो॥एतना  
कहीकेजुवीचवी॥उतरदीसासीधाए॥माहा  
सक्तीमनसीधचटी॥पङ्कचरवीधमनासाए॥

१५ पञ्चवीं जाय सरोवर तीरा अति अद्भुत गाह  
सो जो जन तीरा एक दी सा पुर ई नीवी सारा फू  
ले कमल लास मनी आरा घैठी हंस जोरी के पा  
ती जग माहीरन की जोति भीटे कल अमृत  
बज्र लागे माया सक्ती प्रमम हं पागे उतर भीट  
सं मेरु तेगा ता कौ सो स सर्ग सो लागे जा मे  
अस्थि धातु की घांती सो नारूप कल के बज्र घा  
नी तहें भेदानी अस थल की न्हं ईष्टा सत्



काई अंभीत आवनरी अरकेरा वेसी नारंगी फ  
री अपेखा दाव चौहाडा अद्वरवी जोरा जंभी  
री अगूरषजूर ग असा सौ पारी सरस सूहे ली पां  
नवी विधिलागी नगवे ली जल समीप के दली  
दलभारा जामे नुपजे सरस कपूर के ते जगवे  
ठोर हो मान सरोवर माहं पूनी गगठ टिय गूध  
रेंग का सीव सो जे ही वाव ११ पूनी माया मां  
न सरोवर छंद मथूरवी लमे तो नू भाई बहो

सुंदरी

धानमंदा नीकी नहा ॥ हाथ जोरी के अस्तित्व ना  
ले अंधा जाली पमार्हा ॥ अव प्रसन हो ज मोही स  
हाई ही दे रे श्री वाक् वादनी मानों तोरी की प  
आमगती जानो ॥ प्रथम ही ब्रह्मा की दधीव  
रा ॥ खं अकार धूनी सूनी सव नु चारों माया व  
धि भरण सा ॥ मन माया भई के वनी वा सा ॥ म  
न सा जल हल के व वीर जा ॥ सुट ही व धि ब्रह्मा  
उपर जा ॥ मोता हे मं सो कहो ॥ मजे ॥

जिहै पूर्वनीना वा कौनाम कहा कहि लीजे  
 कौन थ्या न ले समीरन कीजे जु न्ह केरु परे धन  
 ही नीस्थान नीरेकार मोता मोहि समूका स्थ  
 वाही मम सीरी जनी हार १८ तौ दुं ह्या वै वै ध्ये  
 न स्वगाई छे दिये वव ह मरु चटाइ ननु स्ये  
 र स्वगा रनुतारी चहे गंग न देखी ज जी आरी  
 अ य नी छे ह देखी मन मोना मता वचन स  
 ही भ र ज्ञान मेरे मरु होई य वन से मान अ

गिनितिभानुदेजनूचाएनुर्द्विगलापीगलासू  
ममूनीनारी॥ श्रीकृटीसंगमलागीतारी॥ गरजेसं१  
धृञ्महद्वीरेररररधूनीञ्चनहदवाजे॥ रररर  
धूनीसव्दनुचा॥ वरसेमोतनकोफुहकार॥  
बेह्यामाहाप्रमसययावा॥ रहेसर्जनहीदरे  
जुडावा॥ धानिधानितुंआदिमंकीनी॥ हेमरंरका  
रधूनीसुवनसूनी॥ देवेउंप्रमजोतिकहे॥ ररका  
रधूनीहोय॥ वाहीप्रमपूरांनहै॥



जवेह्मात्रीकूटीधूनिपावा रंकारअछरखैला  
वा रंकारधूनीपुरुषहै मायावाकीनारी रंम  
नामवायूरुषको सहवेह्मासेजवीचारी वीवि  
अछरगहीनामवनावा रंमनामनीहसैखैला  
वा बह्येउबीयावाअनहदबानी रंमनामले  
अस्तूतिवानी रंमप्रमगूरंमअधारा रंमनाम  
भौभैजनहार रंमनामनीरमोलकेहीरा रंम  
नामजमकागदकीरा रंमनामकीनारिआजा

तो मे च दे रं क श्रवण जा रं मनो मसूष च मीतवान् १  
रं मनो मभजे यं की त शो नी रं मनो मभज द्रु जी सार ॥  
रं मनो मवनी ज अधा रा रं मनो मते मत्र ना आन  
रं मनो मले पूर्व के को ना रं मनो मनी ज रो पी के क १  
यो सं न व ह रा व ॥ आयू अ प न यो नां ल खे ॥ धो ये से  
म न ला व ॥ ८० ॥ ए ह अ न भो वं ह्य की वं नी ॥ तौ सी  
व धी स्त अ चं भे मा नी ॥ वी स्तो व च न ॥ वी स्त क ह्ये ॥  
स नु जे व हं मा रा ॥ मो ही स मू णी प रे ना ही व च न व

ह्यार ऐमनाम दो को हा कहवै मोह कहो समू  
कार प्रान स च पावै कोह सेवे हम सो जी नमो  
वज्र जे हीर स छी के सो हम जे पीया वज्र सूनी  
बेह्या सुषमौ भारी अहो बधू क ली जाव तमा  
री श्री माया हम अवतं मै से नावा प्रम जोति  
बोह प्रख्य वतावा जा के रूप नहि भेषा सो क  
रता हम प्रगट देखावा प्रम क स्त के ध्यान ल्या  
वा तव स्वामी को दरसन पावा अह द स द अ



असप्रारबेहउजीआर सुनीकेवीसभरसूष  
 भारी धनिबेह्याबलिजाउतेमारी तूमअव  
 गतिकोदरसनपावा सुनतप्रानमोरहीदरे  
 जूनाआ कौनवीधीतूमध्यानबलगायो कै  
 सेरंसनामवहरायो तौसीवकहेसुनोतेमारे  
 वा वचनतुमारसुनतसूखमीठा हेमदेउज  
 नकागूरहीतुमही दरसनमैटकएवजह  
 मही तौहरीकीपादरसहेमपायो प्रमजी

तिनीहसैहैलंयोचचनरुमावदुमई  
 येबोनदेवेनाहंसाचोपरई  
 हेमदचज्जनेमसीम जीमिदि  
 मेंटविचनरु २४  
 कहैयनयकेदि २४  
 रोसाधुपैनिजासि २४  
 मउचमै यननिजासि २४  
 वपौनदेमद २४

यौनतरंगहोइ असवारा मेरयेथकोमामसव  
र सवमभिततमोरीखाउ त्रीकटीअनहद  
धूनीबहराई सीतसहअदलेकवसअनूप  
अमपूरुषजोहाजोतिसरुपा उहासरतिनी  
रतवहरा तौअसमपूरुषकोदरसनपावा  
असीवीधितमनुकहंधावज मनअसथस  
केपौनचटावज चीतचंचसकोवसीकरो  
मूलवदमधूलेज रंकारधूनीसीनिमै राम

नामपदलेखः ॥ ३ ॥ हरयतवीरसभस्यस्वीवानी ॥ ह  
रयतसीवनीस्वैफूरमानी ॥ धनीब्रह्मागुरोमीव  
तावा ॥ श्रीआदिभंत्रानीतंमहीलयावा ॥ ब्रह्म  
मूययायोग्यदेसा ॥ तौवैठेआसनवीरसभहंसा  
ब्रह्मावैठेहोहितकारी ॥ जोगवंदधरीध्यानसभ  
रा ॥ साधियौनकौवसीकीन्हां ॥ गुलटेपौनचक्र  
यदवेधा ॥ सूयमूनीसैतीचौकमंधा ॥ श्रीकूटीव  
जेअनहदतारों ॥



[illegible]

मायापहीताका॥ परबसपैश्वर्यइ॥ छोहंकेदेखे  
 प्रानगवाइ॥ जैसेसोनहाकाचूरभूका॥ अपनी  
 चाहंदेखिकैभूका॥ जसपतंगदीपकमनमाना॥  
 परेबडीउडीअंगनाहीजाना॥ अंमबोहीकहीज  
 वकेछोहा॥ दियपतंगअगीनीमनमोहा॥ आ  
 पूअपनपौआपूनाजाना॥ मायामतेजोगमतवा  
 ना॥ सूरनरमूनीसंभजसंचमाना॥ एहप्रगटधुव  
 ॥ देवाकोजाना॥ दसोचारबटहैकीकै॥ दीन्हो

वज्रकैवार देविषुतीमा आयनी तीनभरनी  
हाल च्य इहीमतेमातेजनरंगी सीधसाधक  
सलसतसंगी अर्धनुधवीचेरेपीभावी तनके  
हक सेवजकीमूठी नादवीदसौपरीगौगवी  
फीरसयौनपकीरसभावी कसमसकर्मकाट  
सभमार तबचुअतअगारी अमीतधारा एह  
रसमातेसभमतवासा प्रथमहीमातेतीनूदेव  
षट्ठरसनमातेवोहभेवा मातेसनकसन्दन

संत के मारा बोवें ह्या के सत सरदारा ॥ माते नारद  
व्यास व सस्या ॥ सह च श्रीत सभनी को मीठा ॥ मो  
ते हे नूमान स जो धारा ॥ माते नौ नाथ चौ रासी सीध ॥  
जैसे कांच मोदल में स्थान भंव की मरी जा ॥ अ  
से नौ नाथ चौ रासी सीधा से न ही गारु वी दारा ॥  
धरम दास स मुखे वेद द्वारा ॥ तब चरन न ह्य थप  
सारा ॥ ते म सत सत के गोई ॥ भरम ते मार नों का जन हि  
पाया ॥ अथ म पैड वात नावा नी ॥ बचन तू मारना ॥

काङ्गमाना वीजसद्वत्तमसभकेसर्ग वेदपरेत्  
मञ्चर्धगा तीनपूत्रञ्चचेतत्तमार मायास्त्रसत  
फेरीकेमार वज्रञ्चनेककोन्हचतुराई तमरे  
चीन्हबीनसरवसषाई तमहीबीलतासीराज  
नीहारा ममहीरूपसरूपसंवार तमहीपांच  
तततीनगूनखीनु तमवटमैप्रगटनाकाङ्गची  
न्हौ कवीरवचन सनेधरमदासमैकाकहों च  
जंजूगमाडीवीनो साधसाधकत्रीदेवतासभ

धोषाकी आस। संभै कवीरा। बेलानी कूटो गीन फ  
ल बुरा। मलवा वीगा धिगंधार। दोर वीना सित  
मरी। सरोपातना करुआ। धरमदा सब चन  
सत सत सभ कहो गोसोई। वीन चीन्है सभ गायन  
साई। पुत्र तू मार भखी जाना। माया अंग भखे  
वाना। अपनी कनवार गुन करी आ। बिचन तू  
मारना ही ही देखे धरी आ। माया बचन धरी प्रत  
ति। अब अवसर कहो गुन की करहूती।

ननुनकैकतकावा सोसममोहिसूनवेकीआ  
छा गोसाईवचन अहो धरमदाससूनीसकै  
ना दादसमैजोउनीमाना प्रमकसकैलाईता  
री तीनोंछुकेदेखिनजीआरा माहाअधारप्रम  
पदयात्रा आपूहीरासरहेतेहीमैवा मानसरो  
वरमायाहीत मनमैचीताकीनकैनीमासहत  
सीबचाहिरतप्रयानदीन्हो ८८ मायाचली  
मथुरामैआईतांहावैवेतीनूध्यानलगार्ईकै

न्यातीनबोटमैराधा॥मीरखागितीनजंकहंदेव।  
मायासीबहीअज्ञादीन्हा॥तुंमबजारजाजअ  
पनैअस्थाना॥जागजबुह्यावीस्त्रसभागी॥हाथ  
पावपगुमीजेनलागी॥हेसौजागजबोखजतार  
चरनकवलकीमैबलीहारी॥तबजागेवैह्या  
बीस्त्रमहैसा॥पखकहीबोहिलदेवचंजयासा  
हरथतभरयैसमनवाटे॥करजोरेहमायावटे  
जटातीनसंककेमाथे॥मायासेवारैअ



धनिधनितुमदेवता अवकहीरवीरतेत कौन  
हैतुमैतैरहे सोनसूनावजचीत ए वेह्याक  
हेसूनुआदिभेदानी हेमतप्रेमजोतिपहीचान  
गगनसूनुमेध्यानसगावा प्रमपुरुषकोदरसेन  
पावा वीसकाहामातासेचपावा अतिआ  
न्दतेतेवीसगावा तौसेवकहोसूनुआदिके  
वारी तैपीवतमाहारसअतरपार हेमप्रेमजो  
तिसमाना जाकीगतिहूमज्जनाहीजाना जोते

१  
रवि कै भय अलोपा ता को हम देखे नीजरुपा  
जो हा जोति को सन्नपार काटि क लु जी नंद म  
अधिकार कोटि भान जा की जि जी आरा को  
टि चंद्र एक की नी परी वारा मरु गन चंद्र मां  
गने भान अनंत अपार तो ना पट तर दू =  
स नी र गुं न नी रं कार २० बेल ली एवे बाहिने  
नी तं म दौ कहो पुरुष सही हो नी हो न  
मी ज रा दी न्हो तं म अ म नी हो न

ब्रह्मेवाकी ब्रह्मे कहै कहै सीवनी के अलख  
 पुरुष हम नै सै देषे कोटि भान एन घुजो आ  
 री कोटि चंद मारु क समवारी बाजा अनंत  
 अनंद बाजा कासा अनंत जो हो आ पृथ्वी रज  
 तम दो कहै ज्वीस क छुवाता तम क सदेषे  
 पृथ्वी सो माता वीस कहै मो सै सूनू बिना एक  
 जीभ का करै बघाना जौ मुख हो रज्जी भी दस ल  
 या तौ कौई आर माहातम भाषा अ संघ कोट

बेह्या॥ सप्तकोटि सीम॥ नौकोटि दुरगा॥ यह मा  
ने स अनादि पुरुष॥ चरनादवीद॥ भगवानसमत  
स॥ अभिधेना भवसी॥ जवतान जे सी सी अस्तुति ठ  
ना॥ तब माया के ही रहस्य जे ना॥ खि अरंकार  
नी रे जने॥ खेनि मो सीव॥ दोन मो चबेक॥ दोन मो च  
थाह॥ दोन मो सीध॥ अत मो म॥ दोन मो निरगुन  
दोन मो अतित॥ दोन मो अद्वैत॥ दोन मो संच  
रचरं॥ दोन मो सर्व व्यापीक॥ सी वा वा कि॥ खि अ

11

सहस्रनामं देवानीरजतं दो अरंमीतारं वें  
अंगजोतीलींग वें अंगसदासौ वें वीसोवाकि  
ले अवीसवीसमाहावीस जसेवीसथवी  
स वीसप्रमातंग मस्तकं जालमायाकूलोवी  
स सववीसमायंजगतयेनम एती अस्तुतिठ  
निकै लीहोवेदवीचार पारबेसबहराडके  
ररेनामनीजसार ७१ प्रथमहीवीव अवरवह  
रवा पाछैमत्रध्याननुपजावा चारवेदब्रह्मे

अनूससं रगज्जुसाम अशरदनन्याह जोकः  
वृद्धा अशदीन्हा सो सीव वीरुमानी सीर  
लीन्हा तीन्मीली अत भौ उपजावा अत भौः  
कैकैषै मवटावा गगन मनी सौ आसा लागी  
मन कै मते भर अनुरागी एक ते दोसर कीन्हा  
वचन हे मारना ही चीत दीन्हा मायावगीनी  
माहजं जाली माया काल रूप कंकाली रम  
यानट वटकी आ बाजी की वीरुमार वृद्धा

वीससीवकौबगे सोव्यातनाखागीवार ॥ २२ ॥ ध  
रमदासबचन ॥ धरमदासमुखेचीतलाष्ट पुन  
मायाकीतकीन्हगोसाइ ॥ मायादीपकजोति  
संवारी ॥ त्रीगूतनेसकीआरतीवारी ॥ दोएक  
रजोरोवीनैसंवारी ॥ मायाकहेसूनोत्रीदेवा  
सूनब्रह्मादेवमूरारी ॥ माहादेवसूनूबचनहंम  
री ॥ जबतुंमध्यांनधमीसोसावा ॥ असषपूरु  
धमेजाएसमावा ॥ प्रेमजोतितुमसूषपावा ॥

तेमत होऊ न्ह के आसा। त्मकारन तौर चोव १  
 लासा। त्मते जे कही कंन्यामीर माई। प्रीथी  
 श्री। सपगट भए नुं। मो कं ह भइ अदास की  
 वानी। जूगमी लाए त्मदे ज भं वानी। मानसरो  
 वरहंम होती। कंन्यामीली मोली जाई। अखष  
 पुरुष त्मकोर चा। त्मही दषे लेहू दगए। २३  
 शनी के तीन जे अतिसय पावा। कहो मता बो  
 ह के हीठावा। जे हावा न्है रणी के आई तहे ।



चलोखेतीनूभाई दीविदुरीतनरूपनजी आर  
एकतैएकजोतिमोंसंवारी मायाकहेसो  
होवारी एतीमजंघुष्टमतीनऊनारी नौ  
मतेमाखानीरमावा वृक्षसंपत्तीवेदपटाव  
एकएकमायाकन्याकैकहीदीन्हा आदि  
भवानीअश्वकीन्हा जीवीकोसावत्रीनाउ  
उन्हउहकहेमाखापहीराउ दुजीकव  
खावतीधरीनानु उनतेमाखावीसपहीरा

तीजेमालागौरवनारी ॥ सीवकंदमेंमालाकार  
हरषतभइभेदानी ॥ गविमगखचार ॥ रहप्रथम  
हीकोकरतव ॥ मायाकोवरवार ॥ लेधाकोसीव  
समहसहीदीहा ॥ मथूरवासवीखकंहदीन  
चावैनीवह्मकहंरया ॥ छीनयनीनयन्यागह  
भाया ॥ आयाहगूलजमनमाना ॥ रहसायावा  
सकीन्ह ॥ अस्याना ॥ नगकोटीगईनगनाछाई  
लामूषीनामजोधरई ॥ वज्रकी ॥

हमा ता तीन जेक हे आध कीवाना तेन  
जेना एक मत भेसठ तीर्थ वर्त कीथ पान की  
उ चीर वेद चारि जग कीन्हा सात वार मेदुती  
धी कीन्हा नौ गहवार हरण सच माना सत ई  
सन छत्र अने माना जेति कर्ज कस गाए के  
की बो सोरि के मेम पटी गनी आ प्रदीप दीप  
वीनू चीन्हें बर भेड ऐय मृतति नू करता केज  
ए किन ही छुद प्रवीण पजाए साया चरी वनाक

जजाना उन्हे पूत्री सौ पुत्र वीरमाना एही वीर १  
वेत बीज बीसाए प्रीथी भरवाहे न्न सररा हो  
रे सेती नितीनी सेतीनि ॥ प्रथम एक समको ज  
ना चीन्हा ॥ पूनी मासीन टवटकी वाजी ॥ माया १  
नि देव की रजी ॥ तबती नू सत पा रानी ॥ ताते  
होन लगी वटवरी ॥ चार पुत्र वे ह्या के मए उ  
जब सावरी सौ संग मव एनु ॥ सेनक सेनेतन से  
नकं मार उन जं जोग जीत चीत दीन्हा ॥ पूनी

जन्मेनारदमूनीज्ञाना प्रेमभक्तिजीन्हकीसही  
हानी गरागौतमसाफीखभएनु जितोतहुमीए  
द्विगोतकहाएनु तेरहसूतपीनअवरभएनु  
तेरहगोतनीनारवैउ एहरचनाबेह्याकोबह्य  
श्रीसुखिदीक्षार एकबीजत्रीदेवता सक  
सश्रीसखीमाहाभार ६५ धरमदासवचन  
धरमदासपूछेकरजीरी कीपानीधानसक  
तनीमारी श्रीश्रीमोसातदीपनवधमा श्री

रांगनञ्जकीसबहमंताः श्रवसवीतीर्थयांनाकी  
न्हाः कैतीरथकोनामधरीदीन्हाः श्रवसवीतीर  
थकैसैनीरमावाः कैसपतदीपकोनामधरवाः  
सैनीहोधरेमदासचीतलाईः करनदारहैतीनोंः  
भाईः कैबेह्माकैवीसमहैसाः सकलकर्मकेर  
हीनरेसाः एतीनूभाईसकलप्रीथीकेराजाः इन  
जपरेमायासीरताजाः जोजोमनभावेसोसोके  
रहाः मायाजुमहीदेरेनाहीटरही अक्षरसैनी

जन्मनारदमूनीजाना प्रमभांक्तिजीन्हकोसहो  
हानी गरागौतमसाफीखभएनु स्तितोतहमीए  
स्तिगोतकहाएनु तेरहसूतपीनश्रवरभएनु  
तेरहगोतनीनारवैउ एहरचनाबेह्याकोबुह  
श्रीसूरिदीक्षार एकबीजत्रीदेवता सक  
लश्रीसूरीमाहाभार २५ धरमदासवचन  
धरमदासपूछेकरजोरी कीपानीधानसक  
लनीमारी श्रीश्रीमीसातदीपनवधमा श्री

संग नञ् की सबह मंसा ॥ शिव सबी तीर्थ यांना की  
न्हा ॥ कै तीर्थ कोना मधरा दीन्हा ॥ शिव सबी तीर्थ  
थ कै सै नारमावा ॥ कै सपत दीप कोना मधरावा ॥  
सूनी हो धर मदा स चीत लाई ॥ करन वार है तीनों  
भाई ॥ कै ब्रह्मा कै वीस महै सा ॥ सकल कर्म कै र  
हीन रे सा ॥ एती नू भाई सकल प्रीथी कै राजा ॥ इन  
जु परे माया सीरता जा ॥ जो जो मन भावे सो सो क  
रहा ॥ माया जु मही देखे जाही टरही ॥ चक्षुर सुनी



उनकीकरती वृद्धिमनतीनौसंभजीक हस  
रवेह्यामहतीकमानु तीनतीनीवसावखगाल  
उपररचोषमब्रहमना छंदरसतछानवेयधर  
सातदीपकोनामनीसाना नौमनौषमचनसा  
रा जैसैमाखीवागखगावे वेहलीवावलीतरस  
बधावे एकसतैभरहरोहरवेह्या श्रीथीदीन  
चलेप्रकमा जाहाजहाजलजाखअतिनोना  
तहाताहाथपेतीरथअखाना प्रथमहीका

थ

सीलीरथगंगा तीरवेनीप्रयागदुसरा मधुराभर  
छेचदोगयाला असरकेसौराखीवाला बीदा  
वनकालीदेसतारा रहीबीजतहभरबुधजेच  
न हीरा नीमाधारमीसीहरीदारा धर्मछेचकरछेच  
संवार तीरथकेदारचगमचल्याला पीरभर  
नकहीगरवधाना गयागजाधरदेवसवार ती  
रहीपीचपीरकेपारे गोदादरीलीर्थचितीभाध  
री संवनदारदारीकानारी मंचलीरथचतरभ

जबरेनु पेचतीरथदधीनीतीरमारु सेतवान  
रमैसरथाना इंदुतीमाहोदधिपूर्वस्थाना  
अवसन्तीरथताहथपावा जगतायजोहोना  
मधरावा गागासागरधर्मकेनामधरावा ठाहि  
कामनीपूजेयानु पेचकोटितीर्थनीधाना राज  
यकोटितीर्थ कुरु असनाना चीचकोटिका  
लीजररहीआ तीरथनामदीकेतीककहीर  
रहतरवेकेत्रीदेवना तीरथथपनाकीन्ह मन

व्यालवज्जुरंग॥ धौधैभंरुअधीन॥ समैजंमजो  
गअवरजोगतय॥ तीरथवर्तअसनांन॥ धैमजो  
ति कौसंमीस्न॥ रहनादेवाकौशान॥ छ॥ हरि  
हरबंहाभरुवेदानी॥ मनकीउक्ति समेमनव  
नी॥ चारिवेदछवसासखवनादी॥ मरकटज  
लजैसैवरछावा॥ जैसैकीरजासबनलीन्हा  
जलमीननकीफंदाकीन्हा॥ त्रीदेवासवपरै  
अधिकारी॥ कर्मकोवनसीजीवकहभारी

फंदेदेवजाहोलेसीधा छतरसनचारिवरनस  
भवेधा फीरफोरियापीनीधोषादीटावा विव १  
धीप्रकासकर्मठहरवा जोजगतपतीरथव  
डाडी नौग्रहसानवारहवहरर लगनवर्गच  
वररासिनीरुपा अवरप्रपेचवजत अधकूप  
सताईसनीद्वत्रफूरुमावा सूर्जमंत्रपूजाकर  
।वा वारहरासिमंत्रचौवीसा दष्टासीयाव  
जतप्रगासा जेजेमनिजनतपसीभरु रुक

एकमेव सभन्तादिलीयुः॥ करसहस्रनां यनीर  
मावा॥ तलसीतारकयेवी सदीहावा॥ गाईत्री  
संकावेह्याधानां॥ रोमतारीकजोतिनीरंजनवा  
नां॥ एहसभन्तरवेकोमतभाषा॥ आयुःअपत्यौ  
काङ्गेनादेया॥ घोषाध्यानसभन्तसीलीकीजा  
बोसतावेह्यनां काङ्गचीन्हा॥ आर्णहरेदीसर  
कीया॥ नीरगूननीरंकरकोथाया॥ सैनसनेह  
सभन्तस॥ एहतबोसता आर्ण॥ १७॥ छलमेप्रे  
पदिआप

सक कलसेसार धोवें धोवें सने संवार छत्रीम  
रन की घेत फूल माया अग्नि माहे त्रीयान जल  
या मा लेहि नु परद सगात्र कर दे जरे हा म गंगा  
प जे चाहे साट आ कि के कर दा हा जी मा वे ग  
पायी मा पारन कहें धावे एही धे धा ते क वे जे  
ना छूटे धो की तगा एसो पव से दन कूटे धो की  
तगा र पं छी वी सन हार जा मति संगति काह  
रे ग दार आपन कीन्ह आयन पै पाई पेटे ना

हो कृती च चतुराई। एही एही भावियली अधि  
री। कृतेवीणें अध अनारी। ईत ते कें च मरुत म  
कोई। वरवर सभ पैग अहई जोगी जोग जूति  
अवरधा। समीरन ध्यान करहे सभ साधा सु  
नी धारा तीरथ नहार। नारी अगी नमहं जरे  
जास। तीरथ वासी तीरथ धावे। त्यागि धन अ  
वदर्व पटावे। कोई भुंजी लेई चढे दुःख  
कोई घाटे।  
मरुत ते ई जोगी



पनतत्केसाधे पाचईर्द्वीसिकेवाधे गगनम  
फलमहवावेतारी ताहादेवे अपनोरंगुजीअ  
री एकसोसेवकरही प्रकार धोरगारी चढीग  
रहीगेवारी एककासीकरवतमैगरसैरे एक  
सरातनसादावाहारे एकअस्यागजोगचीत  
सावे एकनभागधतरचवावे एकनजरी  
वुटीसोवेले एकगीरीगदलमेमोले ऐनताव  
पवाजुजलीन्हो राग साधिसूरकीरतनकीने

ये कवच नगं थवनावे ॥ कवीता छंद दोहरा नीर  
मावे ॥ एके सहस्र कतनु चरही ॥ मिथे भेद नीन  
नार करई ॥ एके अष्टांग मंमद्वल करई ॥ क  
रचरन पसारी पीथी परधरई ॥ कांहां ले कहो  
चरीत्र सभ ॥ आपू ही रहो हरार ॥ हो सर कोई  
नाहोता ॥ कहे कवीर समूहास ॥ भनय जानास  
कभार ॥ दा मोला दे जास ॥ हाहे हाहे हो सर हो  
पूजी गई वीलास ॥ कवीरई तले सभ कोई जात

है भारसदासबदार उततै कोईन आइया जा  
हीपूछेद्वार कवीरदोसरादोसरासभकरे दो  
सरीमनकेद्वार वरवसवमेमनई लखोनाठक  
नाबोर ९८ धरमदासपूछेचीतलाई बादिछो  
रतममोरगोसाई चंजेजातमसभसोगेहराबा  
रुमकेहलखकोजेनाहीपावा ब्रह्मावीरसी  
बनुनजेनाहीचीन्हा सीधसाधकसभभरुम  
तिहीना वमेवमेचतूरवीछछेनजानी तस

भबटतंमकाहनांजोनी। तंमहीमूलवीजअवर  
येमा। आदिअततंमसभकेमेमा। सोरेमसता  
दीजेयेजा। तंमकरता आदिगरीबनेवाजा। दी  
बदीरुमाकहीतंमदीना। कागाएउतेजोहो  
सकहीसीना। अवरसीषायनहैतुअजेते।  
सभदायाकरजेतंममोये। मैसमूवोअवरची  
न्हो। तंममोरेहीदरेमाही। अवजो जो अशादी  
जे। सोदारीउकुंतेनाही। गोसाईवचना॥२२॥

तव वीह सावर्चन मुख वचन जु चार धरम दास ते  
म असेह मारा जवह मते महे नीज के जो ना  
तवह मते मरे मोह समानो आपुतर जतार ज  
स सास जो कोई माने कहात मारा साषी पद  
अव कहोर मई नी ईन्ह को अर्थ ले जप ही च  
नी ईन्ह सब दन होई दोष छुमावे वसूची  
न्याय के पैमवटावै जो कोई माने सब्ह म  
रा दोषी रसत छामो धोयात जो वे कारा ते

ललक प्रथमे धरे जो वो हिर हर ही नाम मा के  
ही शिखरे हे म सत है सो मोही सा देख साय ॥ १ ॥  
दया दो सई चा वैरी हो आ ई श्या नि दे ज न स  
करी चतराई सा चा सा ध ज व हो गो ल आ व  
ता के चरन क बल चीत लावे ॥ अर्थात् पुरुष मा  
ली सेवा कर ही भोजन भी नाना द्रव्य वसर  
ही ॥ अति रुचि सौ चरन चो मीन दले मन  
मलीन क बज न ही की ॥ अंतराष्ट १

एनाही नीसै सत कबीर एह आही ॥ दुक पानी  
सभ को दीजे ॥ सम दीस्टी होए के सेवा कीजे ॥ तथाप  
जाने जा प्रीत होई ॥ तेही समान गुर न्वर ना कोई  
खै चरन योख हीर्द ए के देही ॥ जन्म धर्म सो मूक्त कै  
लेही ॥ सन्द जू के पारखनी जे कंठ लाई ॥ तेही सो त  
परदा करे ॥ तो सीधो नर कहंही जाए ॥ १०५ ॥ लाबर गू  
रु भास होए चेला ॥ न क परे न्वर ने एक वेला ॥ जी  
न्ह के हीर्द एत तू नाही जागे ॥ सो गुरु सीध दीजे ॥

जो अहंकार अनादिवत् न जानो धोखा पथर  
की सेवा ॥ वो लनहार जग जग रहे बाध पतें अव  
र आहना ही भै बा ॥ माहा व्याल साधुन की सेवा  
साधु संत जन सोई जीन्ह चीन्हो बचन हंसार ॥ भ  
र्म जास जंम काटि को सो जन हंसार ॥ १०० ॥  
धरम दास सनो वचन हंसार ॥ जग में नही परति  
ति हंसार ॥ कूवे लो गव जत चतुर्दश दिने र  
से रहे लूकाई ॥ दगा वाजव गव ॥ बनेश ॥



सेवा चोर जाही जम दारा सव भेद सूनी मांथ मो  
लावै बजरी बजरी धोषा के धावै एके मत वा  
ले भद चूहरा जैसे वाटर हेवन थूहरा साचे ज  
ब सो पीति लगारु कोई धो जी जीव को बस  
त समुधारु मरली न्ह सो बस्तु सभारे पूर सो  
चै कहत मन मन द्वारे राखे अदल फे समती जाई  
दया गती ले रहे समाई चरन वर्तन द्वार साध  
की सेवा चीन्हें जवस्तु आदिनी जभे वा जैस

महागे॥ सेवाये मभाति जोहि नाही॥ हीदं पयान  
जीनरस नाही॥ कूलकदम सौर है अधीना॥  
साधुसंतसौ प्रदा कीन्ह॥ रही वीधिके जो सोष  
कहावे॥ नरकये को ताहि वंचावे सब वीधिके  
गुरु नाही होई॥ समीरन यूठ अने कन करई॥ अ  
दि अंतर कन नाही जाने॥ अक्षर पै ममूल कुंछ  
नाही पही ही जाने॥ चोर साजु की पारधनाही

मत्तु चतुर्वेदसमीक्षारमेरहेन मध्वदीच्यप्रग  
हीहणीतारे भूतैतनकदुषकोनानेवां न  
पञ्जगोतीकाहवर्ते गृहमेधग्यकलंभान्  
होकारहेमारमह तारमोनन्यपयवि १३ धर्म  
होमकर्मन धर्महोमकर्मवर्तमानते धर्मक  
होमकर्मकर्मन धर्महोमकर्मवर्तमानते धर्मक  
होमकर्मकर्मन धर्महोमकर्मवर्तमानते धर्मक  
होमकर्मकर्मन धर्महोमकर्मवर्तमानते धर्मक

होनी सजागी ॥ कोई करे धरम की आसा ॥ कोई  
द्वारे बैक वने वासा ॥ कोई नर कोई द चीन  
धावे ॥ कोई पूरुव कोई पचीम गावे ॥ यूक आ  
सह नीमन माना ॥ सती जरे जैसे ये हनु डाना ॥ जे १  
दाजोगी वाद वहावे ॥ दुर्क नी नारी भी खि वहर  
वे ॥ रोजार हेनी माज गजारे ॥ मरगी गार काट  
जीव मारे ॥ एजीवन कहो कवन गती ॥ कहो व  
ही होड समूकाए ॥ एजीव को हो जात है ॥ कह

कवनफलपार १५ गोसाईवचन श्रीहो ध  
रमदासतुमसेहमसभकीचूकहीरे अन्नचारे  
जगतैकाहारहीरे जवजवपूछोतयतवक  
हीहो नीरखोसूमीरोसूमीरनकेभेदा मंत्रजा  
यनीजनामसुनाउ आहीबटमेमनलहरीत  
रेगा नानाबीधिनपजेवझरेगा एहमनकच  
टाएहमनयाली बटमेवागलगावेमाली सू  
मीरनभजनजापअन्नवरनामा एसबदेखोमनके

कामा ॥ बटही ली होना म बनाई ॥ बटही मंत्र ध्यान न  
रमाई ॥ अपने नवरी का ल के फंदा ॥ अपने नवरी अ  
पनगर वेदा ॥ आप ही आप गों सों दे ॥ होता दो सरना  
हि ॥ सी ब परे कुं ॥ आ मैं दोष अपनी छाह ॥ एष न  
समीरन सरगत ॥ आवा ॥ न समीरन का ज देई प वाव  
बटही में समीरना दी ली न्हा ॥ उ ली ट ध्यान समी  
रन सों की न्हा ॥ समीरन की रें मू क जौ पावा ॥ तो  
जल के है नीषा वू फावा ॥ पाव क क है पाव जौ ज

रई तौ भोजन कहै पेट पूर्ति भरई वाद बहावै ते  
नर युग घाम कहै मुख होएना मीठा प्रचेची  
नाहेत नाही आवे चीना दरसन संच कै सेंप  
वे अहो धरम दास दरसन होत आहि दील म  
ह सो प्रीति को ईमान तनाही काज अ काज  
जानी नही परी आ समीरन को बल सब जंन ध  
री आ समीरन की रम्यता ही होई जौ लागि अ  
दि अतना बूकी घटमै नाही अपन पौसकी बी

के प्रति उपदेश के लिये

विधिरंगभूला संसार ॥ चतुरननीजमजाल पसार  
सीवसूकादिब्रह्मादिजां होखे ॥ कहाना माने को  
ई ॥ दोसर संसै सभ गहे ॥ ताते सूमीर न होई ॥ १ ॥ तौ  
यूग सूमीर न यूग ध्यान ॥ यूग जोग गर्व अभिमान  
यूगी आसाद रिदेषा दै ॥ यूगी कथनी मोहिना भवि  
यूग मीठा सभ को लागि ॥ साच कहै तुरत नुठी भागे  
वेद पुराण गुंथ बंधना ॥ हरी ध्यान सभ को मन मान  
मूर मरम को काको जाना ॥ करनी कीरत जीवत मे



करही॥ मूरुमूर्त्तीकी आसा करही॥ मूर्त्तीजन जोगीप  
हीत जानी॥ मूरुमूर्त्तीकी सभन फरमानी॥ आरफव  
हा कीव ते केता॥ मूरुमूर्त्ति सभन कोहेता॥ सतस  
रसाध अवागाहा॥ इतको थापव दहत जगमाहा॥ के  
हागर मूरसन मुख होखरे॥ केदेवे काहा होखतरे  
ताकी धवरी कहेको भाई॥ लोगवीका कीग सनसा  
ईतजि कोनिकुसकी मरजादा॥ सोमीसेवक करे  
बीवादा॥ ताकी धवरी कहेको आगा॥ होख अम

निजारुहकैसाखागा॥साधनसूमीरनकीरञ्जपा  
रा॥अवनीरधारहोरहेनीनारा॥साधननीहाअ  
वभूषयीआसा॥पाचोईदीकीयोनीरसा॥अवई  
नकीषवरीकहेकोभाई॥काहोअटलदोन्हजा  
हपाई॥करतापूर्यकाहोननपादा॥इहासभहोन  
मीलिसाधकहावा॥धरमदासनीजमीरषड॥मी-  
थादोसरीआसा॥हमकरतानीजकोलता॥तुमर  
सदाहेमारयास॥११॥सूमीनध्यानकरेसभकोई

॥ धोषे धोषे गरुदी गोरे अपव लधोषा सभ को मारे  
नोरम लजानना कोई दी चार नोरम लसे जेही संसे  
नाँ पुरन ब्रह्म लता आही जीनी जाना तीन संच  
कै माना तीन कै का लनी कटनाही अवा आपे  
आपु अपन पौ आही दीन समूये बड़े भद्र माही  
भरमी भर्मी सभ फारेण दास दीन गारुज लसे मरेप  
आस जीवत मूर्ति भएते प्राणी चामो सन युवके  
लेषा जेही सुमीरै तेही प्रगट देषा देह संजोगे

मूर्ति जो होई॥ मूर मूर्ति पुनि पावे सोई देह संजो  
गं मूर्ति न होई॥ ते नर सुषुप्त भूते सोई॥ जीवत  
भर्म पहरें फासी॥ मूर मूर्ति लागी आसा॥ जै सें ज  
सही न नीद मे सुता॥ सो पीते न टक्क्या सब जता  
नाम जपत तो सुबा सर रही आ॥ सुगला पटे सार  
वो लइ आ॥ नाही सुमीरन सरग ते आवा॥ नाह  
सुमीरन काज देई पठावा॥ मन के गढो ना म अ  
धाना॥ मन को कटाव कटे सभ ज्ञाना॥ अमीत धे

बैबीषपीए मेटेनासंसेसूख जसदुन्न नदीमरवे  
सोगरुचीखजरीसूख १८ धर्मदासपूछेपासा  
पी एसाहचतूमचीहै हमवनेसूभाणी प्रगट  
पुरुषहमदरसनपावा धोयासंसेसनेमैटावा  
बंदीछोरमैवीनबोतोही अपनीरहनीगहं  
नीकजुमोही कौनचाखहैकावेन्नहारा कैसे  
सेबोचरनतुंमारा कौनभक्तितेतुंमकोपाधो  
कद्वनधर्मतेहोईनीकाई हमीरनध्यानतुंम

नही वहरावा॥ वहरी वज्रें तूं म आयदी हावा॥ अब  
जो कहज करी रहें म सोई॥ जो क च्चा लतें मारे  
होई॥ तूं म तो सकल सी स्त्री के मूला॥ तूं म ही ये म व  
ज फल फूला॥ मो कहें नी ज पर ती ती तूं मारा॥ नौ ध  
मत तूं म सी ननु वारी॥ धर्म दास मी नीति करे॥ तूं म ह  
सत कवीर॥ जीवें न मूर्ति चीन्हा सउ॥ जम को काग  
द कीर॥ १०॥ सुनी स धर्म दास चीत ला सार ह नीग  
हनी हम देउ अरथा स॥ आय अ

धत

रहो। पूर्ववचननाकवहंकहो। सीलसंतोषगहो।  
मनमाही। दायभाक्तीनीस्वासरचोही। संगति-  
साधूसदासूषलीजे। साधूतत्त्वतिरहमनदी  
जे। सेवावेदगीसभतेनीका। दयावीनाजानक  
येसभफीका। संगतवीनानाहीसूषजपजे। येम-  
भाक्तीवीनजाननाभीजे। ज्ञानगहेअवदयागह।  
ई। जौतमअपनोसर्वसूषचहाई। जवग्रीहीसा  
धूवीवेकीआवै। सीलेवीहसीकेहीदयाजूडा।

वज्रतपीतिकरवैठेकेदीजे॥चरनपषारिचरना-  
मृतसीजे॥जीतकेमूषमेअमृतबानी॥धीरजवत  
सीतलसोबानी॥साधीरमैनीपदअरथावे॥घोषार  
सेसैमीटबहावे॥सदहंमारहंमहीकेजानो॥बोख  
नहारतेअवरनाआनो॥अहोधरमदससोमोक  
हंजाना॥सोईसंतहैमोहीसमाना॥हंमहैसाधूसा  
धूहंममाही॥हंमअवसाधूकचअंतरनाही॥ती  
नकेसीतचरनामीतलीजे॥तनमनसीससभ



रपनकीजे साधूमीलेसाहवमीले अंतररहीनारय  
मनसवाचाकर्मना सोसाहवसाधूएक ११०  
समे कवीरनीकटचीन्हावेवस्तुको मेटेअगम  
आधि जनिचीन्हेंदयावोलता तीनकोंकह  
एसाधू तौधर्मदास अस्तुतिअवसारी तूमस  
तपुस्यदायिजानुतूंमारी तूममेरेदातातूममेरधनी  
तूममेरेसाधूसंमनीजुजानी तूममेरेतीर्थतूममेरे  
दा तूममेरेज्ञानध्याननीजभेदा तूमजाग्रीतगू

हृष्यपराता॥ तमसकलसीहोकेतारनतरने॥ प  
रनवेहृपरातगोसाई॥ सुखनीधानसुखकीनीधि  
पाई॥ तमहीजीवअर्जुजीआरा॥ सबसुखतेम  
बोलीनीहारा॥ तममेरापीरयेगभरजोगी॥ तमही  
सभरससभसुखभोगी॥ तमहीआनंदतमहीधाम  
तमहीबटबटरमीतारंगम॥ तमहीएकअवत  
महीअनंत॥ तमहीभक्तअवतमहीगोदेता॥ त  
महीजलमेंजाकुबनाया॥ तम  
थी

॥ तं मही बीज तं मही अं कुरा तं मही फल फल सदा  
हं कुरा तं मही पाचत तं गू नती ना रचन हार तं  
महं मही ही चीन्हा सत सत तं मसत कवीरा न  
रहे ही वं मरचा सरीरा जो जीव तं मके हे नीजू क  
हे जाने तन पाय मो छ मक्ति प्रदाना अव सं सै मो  
रे जीवना ही पाए अजर अमर की वाही सकल  
सी सृष्टी पति चीन्हेन काया वीर कवीर पूरन वं  
हं पू मति मति वीर ॥ १११ ॥ मै

जाना से मेरे मन माता ॥ करता सत पुरुष पही चान ॥  
अव रुक सीन तीस न झह मारी ॥ जो चीले सो हंस  
ते मारा तन छुटे सो काहा समझी ॥ ता को जग हरे  
झवतारि ॥

एसी धर्म  
समभक्त बीजागी ॥ काहा

धमी काहा समाने ॥ काहा गुरु जे न मन ही जाने

कोहंगरुतीर्थनेवासी काहागरुवाभनसन्ध  
सी काहागरुकवीता श्रवदाता कोहंगरु  
स्वीता श्रववकता कोहंगरुजीनजोगकामा  
या जीननीरगूननीरंकारवहरया जाहांलेजी  
बजगानमे तनछूटेकोहाजार जाहाजाहार  
जातहै सोमोहीदेऊदेवा ११२ कवीरवाक  
धरमदाससुनीयेदेकोना ईनअपनपवजान  
तनाजाना जाहातेआएताहानजाना जोगी

सूनसमाधिसमाना॥ जोतीजोति के नमन बंधा॥  
चीतबीतजोगा॥ अहं अवराधा॥ तनह देते भर  
पतंगा॥ उड़ीउड़ीजरे अग्निके संगे॥ जीनीजीन  
राधी अकासकी ईचा॥ बजतयून करीली हंहर  
हा॥ गण अकासधरुन देही॥ भरतरंगनपनी  
सनेही॥ पूनचीनजवनन के भरु॥ तबवोगारि  
सोवेदही कहें॥ जीनजीहि आपअपनपौजा  
ना॥ सभबीमिनाही जीवको माने॥ जीवको कय

भर सोपायी जीव मोटि नीर जीव कौ थायी सतगुरु  
सोपायी गोई ही दुतूर क जे हा स दोर जीन का  
गर्व भर्म की फांसी ईन कौ वे का ना आहि चौर स  
जरा मरन मे जरा जग रही आ का स अगी नी में फा  
रि फा रि मा हा ई ते ही कौ घानी न क चौर सी धार  
जीनी ना ही माने व चह मा रा स द ह मा र दू व के जा  
ना ते न सृग र अ व भ र वी जानी र जा प मी न सी  
ध अ व जोगी न सृग र वी ना दी स्त्री वी रे गी दो

सौर आसा जे मके फासी लाते वो सभ ए चौ राखी ॥ क  
हे कबीर वी चार के ॥ धरम दास खज्ज मानि ॥ धोषा  
जम को ना दुष्टो ॥ ते परे नर्क की घांनि ॥ १२३ ॥ धन ध  
न जे करता जानो ॥ सद्ध हमार सत कै माना ॥ हम है  
सद्ध सद्ध हम सोही ॥ वो लनहार जगत पर आही ॥  
रहनीजू कै भेद कहें हम मत्त मही ॥ हम ते करता  
दोसर नाही ॥ आह पुतीति ही राद स महें जो को वी



नीराई जीवन जानि अपन पै रहै समाई दया धर्म  
भक्ति ने दासी जेना ही काटी घोषा का लकी फास  
सतगूर भीतर रहै समाई तन मन सौ प्रदान ही ला  
ई तन मन धन जीन अरपन कीना मो कहै जान  
चरन चीत दीन्हा अहो धरम दास तूं समो कहै  
जाना ताते धीखि कहौ सभ जाना तन मन ध  
न दारे सत को आयु अपन पौखे चनाई सी  
जीव बीहम ना परे सभ मोही मोहै समाई ११६

हामजदोसरसंसैवोषा॥हामोपापपूयकाखष॥  
हामोलोकवेदकीआसा॥हामोनीरगूनसरनः  
कामोसा॥हामोकूलकीकालीबडाई॥सः  
वसतखेरहोसमाई॥आपूअपनपौआपूहि  
आना॥अवरआससभकूवीवाजा॥अलटि  
समानाआपूमे॥प्रगटीजोतिअनेत॥स्वाम  
सेवकएकसंगबेलेसादावेसत॥जोजीवन  
करसरहे॥आमनगबेकोराजाकोटीचीन

३

कदनाही मीलामीलपासोर कवीरजोतचा  
 हेमूयको कीदमातरावेआस मोहिसरीवेंहो  
 एरहोसभेतुमारेपास कवीरअमीतमृतआ  
 तनअमीगा यीमकरेशानूर होअदलीलवसे  
 सैनासदाहजर २२५ धरमदाससुनोचीतजाम  
 तुमसोंकीदखोनागोरुजोना मूक्तिभेदहं  
 मत्तमहीचीन्हावा सकलअस्थिरतुमकोबुद्ध  
 वा एहीसंधिकाजवीरलेपावा जोपावेसो

हीरदरें समावे ॥ होत अजीतनी स्दन ही जावे ॥  
जोच लोटि आपू मे आपू समाना ॥ मोही सम हून  
भरते घांती जीन अपन यौ मोही पही घांती ॥ स  
दा अष्टम वे सधना होई ॥ चितन ब्रह्म कहल दे  
ई ॥ चितन जूग जूग आपू कहल दे ॥ सकल सी स्ती  
आपू मे पावै ॥ आपू ही घांती आपू ही घांती ॥ अ  
पूही चैन तें दुर्ग दौना ॥ आपू ही घांती घांती ॥ अ  
पूअ कासा ॥ आपू ही घांती चतुर्ध कासा ॥ अ

पूही अगीनी पूही पानी अपन्न करवीज सही दस  
आपूही घेत आपूही वीज आपूही रजवीज केस  
जा आपूही भोग भूगूतार सपी दे आपे चीहे जग  
जग जीवे आपूही सव आपूही नाद आपूही प्र  
वत आपूही स्वाद आपूही रज सतत मगून धारी  
आपूही पांचरंग अनूसारी आपूही गावे आपूव  
जावे आपूही नाचे आपूरी दावे आपूही पानी  
त आपूही जानी जौं खुटि अपन मोजानी अ ।

पूहीनी अरें आपूहीदुरी। आपूहीहतेसजीबनमूरी  
आपूहीरहंनआपूमें। आपूहीदंटे आप अवरक  
हांतेपाई। एहहंस आपूमें आपू। कबीरखनघोज  
तजूगबीताए। घटहीहतीसीमूर। बालेगध्वनीक  
दनहीआवेतातेपरीगोदुरी। ११५ धरमदासत  
वमीनतिलाई। अवमोरेग्रीहिचलजगोसाई।  
वाघोचलीरमोरेग्रीहमाहा। नारीपुत्रमममंटी  
लआहां। बालगोपालकहंदरसनदीजे। सकल

पूही श्रीगीतापूहीयानी ॥ अपञ्चकरवीजसहोदंभ ॥  
आपूहीषेत आपूहेवीज ॥ आपूहीरजवीजकेस ॥  
जा ॥ आपूहीभोगभूगूतारसपीदे ॥ आपेचीहेजग  
जगजीवे ॥ आपूहीसब्द आपूहीनाद ॥ आपूहीप्र  
वत आपूहीस्वाद ॥ आपूहीरजसततमगुनधारी  
आपूहीयोचरंग अनूसारी ॥ आपूहीगादे आपूव  
जादे ॥ आपूहीनाचे आपूरीहादे ॥ आपूहीयंभी  
त आपूहीजानी जौनुखटि अपनमोजानी ॥ श्री ॥

पूहीनी अरें आपूहीदुरी। आपूहीहतेसजीवेंनमूरी  
आपूहीरहंन आपूमें। आपूहीदुंदे आप अवरक  
हांतेपाई। एहहंस आपूमें आपू। कबीरजीनषोज  
तजूगबीताए। छटहीहतीसीमूर। बालेगध्वनीक  
टनही आवेतातेपरीगोदुरी। १२५ धरमदासत  
वमीनति लाई। अवमोरेगीहिचलजगोसाई।  
वावोचलीएमोरेगीहमाहा। नारीपूत्रमममंटी  
लआहां। बालगोपालकहंदरस ॥ कले



सषा अयनो कर सीजे हेमत तूम कहे नीजू धन पा  
वा सक सपाप हेमदुरी बहावा धंदी दो मतूं मं  
करता धनी तूमरी दया सक सबी धिवनी जव मे  
नीजू के चीन्हें तूं मही माहा सर्व धन दीखु हेमह  
तूं मत जी अस्तुत का की कारों अवना हीरं सक  
सक हेमरो हेमरे रंम की स होतूं मही जग जी ब  
न जग जी हरस मही कोई सून कोई नीर गून बहरा  
वा कोई नीरंजन नीरंकार बतावा सभ संसे हेमदु

रेवहावा॥ श्रीदेवाको फंदमे टावा॥ जटकीसेवा  
दुरिवहावा॥ तूममेरे ग्रीहदे जययाना॥ काजमे  
सरनरमूनीदेवा॥ हमरे सतकवीरकीसेवा॥ पी  
थीपतिहंमपाईआ॥ चीन्होसीलीजनीहार॥  
अवचलीएमोरेग्रीह॥ धनीवडखहंनहंमरा  
१२१॥ आहअस्तुतिसूनीहरमलनएनु जोदं  
रूपआपतवधरनु॥ चलीएधरमदसग्रीहइ  
पनो॥ मोकहंकोईजानेनहीसपनो दूरयइ

सतवसीमदीयाई चलेखेवाधूगठआर धरमद ।  
सकेराचरभारी नीजूमदीलमेलेचईसाई धरमद ।  
सकीमीनहकराई जीहसीवदनहोएआमीनी  
आई हरषतभईमूषवचनसूनावा एतेदीवस  
तूमकाहोलागावा धरमदासकहेसूनीचीतसा  
ई सतकवीरमोहीमीलेगोसाई जेहीकारनहं  
मदीदाखीन्हा जेहीकारनहंमतीरथकीन्हा  
आहीनीसध्यानकीएवजुतेरा सकलज्ञानके

भरनी मेरा ॥ धोषा मोर धनी हंस चीन्हा ॥ भीले गोर  
सोई दरसन दीन्हा ॥ सकल सीखी के कर ता धनी ॥  
तूम जे चीन्हे ॥ सनू आं मीनी ॥ सकल राज जा कोवी  
स्तारा ॥ सो करता हंस रे पूगू धारा ॥ पूरजा पूरजा जन  
रचो सररा ॥ सो हंस चीन्हे सत कवीरा ॥ जे ही वृहम  
वीर ससीव संकर जाय ॥ ईहा ते माया उष जाया ॥  
सो साहब हंस रे चली आता ॥ अहो भाग्य पूरन भई  
दाया ॥ तूम अधरंगी आं मीनी ॥ माओ वचन

पगूटे को सत कवीर को साज को नीने दा ११८ स  
मै आह नी खेत मरे जीव आवा सकल सी स्यु के  
साहव पावा हम का जाना तम सभ जाना तम को  
हो सो ईष्रवा ना सभ को ईक हे सभ करता नीरा क  
र है सीरी जनी हार श्री की खदारी का वासी सभ  
को ईक हे आपू श्री नी ना सी अरमदा सवचन  
आमी नी मानो वचन हे मारा ए सभ को करता  
सीरी जनी हार ईन ते द्रह्मावी ख है सा नीरा क

रकीयूवी आसा॥ कासी मे मोही मीसे गोसांई॥ ई  
नकी गती का होना नों पाई॥ समै ई न को ची न्है क  
रज॥ एत सत क बीरा॥ बीज अंकर स भर चना॥ ए  
त नर रचो सरीरा॥ समै धर्म दासनी स्त्रे के कहोय  
तव आमीनी मूख हो सर होया॥ असीत फारि दि  
जल आई॥ अनज कंम करो सोई करीय॥ गोसां  
ई धरम दास बहुते सूष मोना॥ समीत देषी के ह  
रद एजुमां ना॥ अखी पुर्य दोन चयी

वपरीरजसीसचटाएनु वीहसीकवीरननभरहरे  
सीतलवचनसव्वहुजीआरा समेधरमदासज  
लटारही आमीपंधारेयाव अचरयावअंगो  
हीके हीदेरकंठगहीलाव समैनारीपूर्वएक  
समभभनु हरसीतभरचरनाअमीतलनु नीज  
केचीन्हीकरताआही ईनतेसाहवदोसरनाह  
आहीजानीचरनाअमीतलीन्ही सकलसीस  
पतिप्रगटचीन्हा सतकवीरआहिकरतारा ज

नको चारो सकल संसार जाकी ईहा आदि नारी  
जीन के सूत ब्रह्मावीस तानी पूरा पाचत तूती निप  
न जा मे सभ नुत पानी न ई है ता मे अदधर मदास  
कहे सुनो आमीना आदि ईसर ईन की कामीना  
ब्रह्मावीस महेश ईन के पूता आदि ते हर भए  
वज्रता आदि तीनो सूत भर माया ईने मोट को  
धोष ही हाए सभ जोग ए साहव ए सभ बट मै प्रा  
ना बीज सरूपी ईहा चारी को ई ईन को



नांना समै धरमदास आमीनी समूफवा सकल  
को असयवतावे वोसवेहसकवीरगो साई दर्व  
दीस्ती आमीनी का आई चंना मीत चीन्ही के ली  
हं सकल भर्म हो डी के दीन्हा पुत्र नरा एन कर  
गही ले आई ईन डं प्रीति सों सीसन वाई अति  
हंद आमीनी के होई भएनु आमीनी धरमदास  
स संच सीएनु ची जैव नार अनूपर सोई घाम  
रखीत अमीत मोई वज्रत हेत सों पाक संघार  
जव

नौदलतिमपरोपनवरा॥सीगासनपीठादेधरी  
या॥अमीतजलकारलेभरीया॥आएदीरा-  
जेवसमगोसाई॥परोसतआमीनीअतिस-  
षयाई॥घामदीरपरोसतआमीनी॥धर्मदासपू-  
नीअखीतवानी॥समैहंमकरताप्रीथीयते  
जेयोदीनदयाल॥धोबेंपूजेनंपाथरा॥सोका  
टेनुजमकेजास॥मीजनजेवतकीलमनाभ-  
रे॥माहाप्रसादधरमदासकीदीएनु॥लेपाखी

कपर आनी वैठा वीर अग्र फूल ले आर नारी  
पूरुष भी सीपे धामो सार हन हन ने ह धनी सो  
जोरो प्रेम भक्ति बज्जते चीत दीना दोर कर जोरी  
मीन ती की न्हा समे ~~क~~ क सव के पट नु तर देवे  
के की च्छ नाहि काखे गुरु समो धीर हनु सराह ।  
मन माह कहे कवीर धरम दास सो वंम सदा  
रहोनी सक जन मे नी के जनाया सोई भयनीह ।  
लका कवीर धन दीयो अन्न मन दीयो संगुप ।

सकल सरीर अब देवे मेकारहा, जैसे कथी कहे  
 कवीर कवीरनी से केज कजांनी ए तब कहवे  
 के कक्ष सोही मन सा वाचा कर्मना हम हैं तमह  
 माह तन मन धन सूसीर नयन दीजे सीर के साहे  
 साहे वलीजे सत रोपी के प्रेम बगई सदचीन्हों के  
 करे कमाई घूली दी स्तीज बसाह बयाया तौच  
 ही ए भाव भक्ती अब दाया  
 दानी कृपा प्रेम कव डेना माने

श्रीस्त्रीकाहावे सद्धचीनेहीनूजमपूरधावे  
कूठेकीसगातिनाहीकीजे कूठीकथनीदुरीबहा  
धोषाकारनकसुकीन्हा धोषाकारनभरुअध  
ना समैकवीर भक्तिभक्तिसकोनुकहे भभदि  
नाअर्शकाज जाहाकीकीनभरोसाताहाकाअ  
इगाज कहेकवीरनीजनीरयीकि करेभठाति  
अन्नभावा सोमोहीमाहेसमाहीगे अटखद  
सुखपाए एतीगोस्त्रिकवीरधुरसुदासके कास

वैदिके कीन्हो फेर आया नही सा कौय गूभरे न  
जाहा जगत नाथ को चीन्ह सपूरन सखनी धान  
कबीर धरम दास की गोस्ती सपूरन समास्त भी  
जो बचही नौ एमी रो जव धके दीना सात बरी ७ प्र  
गनारे बाडी तपा जठ थल मौजे बील पटी में  
ठगो साई रुयदा सजी के समत अगस्ते किनार  
वे ली घल से वल भगत के सखनी दंत दंत  
सागर अस्तावक्र तीनों के एक गंध



